॥ अनुक्रमणिका ॥

अङ्क	प्रत्येक लावणीनु प्रथम पद	पृष्ठांक
	प्रथम श्री जिनदासजी कृत घन०	१
१	चल चेतन अब उठ कर अपने जिन०	३
२	तुम भजो जिनेसर देव मुगति पद पाड०	४
३	कब देखु जिनवर देव ०	६
४	एक जिनवरका निज नाम हैयामें लेनां०	७
५	खबर नहीं या जुगमें पलकी रे०	८
६	हांरे तु कुमति कलेसण नार, लगी०	९
७	तुम तजो जगतका ख्याल इसकका०	११
८	सुगुरुकी शीख हिये धरनां रे सु०	१२
९	तु उलज्यो है जजाल जगतमें०	१३
१०	सुकृतकी बात तेरे हाथ रति ना रहीरे०	१५
११	अने हांरे लाल नहि लीयो जिनंद०	१६
१२	तजो काम मद मान लाल जिनवर०	१७
१३	अगम पथ जानां है भाइ रे अगम०	१९
१४	सुरग आस मत करे कलेशी०	२०
१५	अरी अरी माइ मेरो नेम गयो०	२२
१६	सजन समजावा अपने माकुरे०	२३

॥ अथ॥

॥ श्री जैनलावणीसंग्रहप्रारंभः ॥

॥ प्रथम श्रीजिनदासजीकृत घन ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, उनसें उतरोगे न-वपार ॥ होय तेरी कायाका उद्धार, सफल कर दे अपनो अवतार॥ ध्यान तुम धरो मनमें नर नार, खाण दुःखकी ए हे संसार ॥ करो प्रभु न्याल अब जिन-दास, रखो प्रभु मुझ चरणोके पास ॥ १ ॥ सरक जा कुमति नार काली, तेरी संगतसे गइ लाली ॥ सोबत समताकी में टाली, आतमा तपसें नहि घाली ॥ अ-नंत भव वीन गया खाली, वेदना निगोदकी झाली ॥ अमरपद जिनदास मागे, सदा पद प्रभुजीकों लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नाभिनंदन, चरणपर चडे केसर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक वंदन, कटत हे करमोंका फंदन ॥ साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकुं सुखकंदन ॥ जिणंद गुण जिनदास गावे, शीश चर-णोसें नमावे ॥ ३ ॥ बोलत हैया मेरा हसकर, चढावुं चंदन चुवा घसकर ॥ पेठा मे धर्मोमें धसकर, पापदल

दूर गया खसकर ॥ चेतन हुवा खडा कमर कसकर, हठाया कर्मोका लशकर ॥ श्रीजिनराज जिहाज सा सा, शरण जिनदास लिया वासा ॥ ४ ॥ समज मन मेरा मतवाला, तुके नहि कोइ हटकणवाला ॥ वस्या तेरे हैये कुगुरु काला, दिया तें सुरगतिकु ताला ॥ फेरतो ममताकी माला, वालसो जगवत पर चाला ॥ दयासें दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥५॥ कीया में गणधर प्रेमपति, सुणे वरदायक हे सरसती ॥ करी निर्मल निर्मय मति, पूठ पर खडे जागता जति ॥ मुके बलवंत जइ सोल सती, मिटी मेरी डुर्गतिकी सब गती ॥ एसा घन जिनदास गावे, अचल पद जक्तिसें पावे ॥ ६ ॥ विकट घट डुरगतका जारी, नीर ज्यां जरती कुमति नारी ॥ बरठी कन नैनोंकी मारी, कुव्या केई कामी संसारी ईनोंकी हो रही खूआरी, जीत्या कोइ सत्य धरमधारी ॥ प्रज्ञु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आया ॥ ७ ॥ चेत नर निगोदके वासी, कराई जगमें त हांसी ॥ कुमतिकी पकी गलेफांसी, सुमतिसु रखी हे उदासी ॥ कुमति वसी सेज खासी, मान रह्यो ममताकु मासी ॥ लियो लोल अरिहंतकों

परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ८ ॥ अफल नर तेरो जिदगानी, शीख सूत्रोंकी नहि मानी ॥ किया नहि गुरु निर्ग्रंथ ग्यानी, कानसे लागी कुमति रानी ॥ जगतमें उतर गया पानी, गति तेरी दुरगतकी ठानी ॥ सेवक तोरा जिनदास बाजे, सुधारोगे तुमही काजें ॥ ए ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निर्ग्रंथ ग्यानी, कानसें लगी सुमति रानी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पानी, गति तेरी सुरगतकी ठानी, सेवक तेर जिनदास बाजे, सुधारोगे तुंमही काजें ॥१०॥ इति पद।

॥ अथ शीखामणनी लावणी पहेली ॥

॥ चल चेतन अब उठ कर अपने, जिनमंदिर जइयें ॥ किसीकी भूंरी नां कहियें, किसकी बूरी नां कहियें ॥ चल०॥ए आंकणी॥चरण जिवनरजीका भेटो॥चरण०॥ भव भव संचित पाप करम सब, तन मनका मेटो ॥ सुकृत कीजें, महाराज ॥ सुकृत० ॥ जिनवरका गुण भज लीजें, समकित अमृत रस पीजें, लाभ जिनभक्तिको लहिये रे ॥ लाभ० ॥ चल० ॥ १ ॥ करोजी मत मुखसें बराई ॥ करो० ॥ तज तामस तन मनकी, समतासें

रहेनां जाई ॥ रीतसें खोलो, मेरी जान ॥ रीत० ॥ आतम समतामें तोलो, मत मरम पारका खोलो, मौन कर तन मनसें रहियें रे ॥ मौन० ॥ चल० ॥ ॥२॥ जोबन दिन चार सबो संगी रे ॥ जोवन० ॥ अंत समय चेतन उठ चाले, काया पडी नगी ॥ प्रीत सब तुटी,मेरी जान ॥ प्रीत० ॥ आतमाकी खरची खूटी, चेतसें काया रूठी, सुख दुःख आप किया सहियें रे ॥ सुख० ॥ चल० ॥ ३ ॥ जगतसें रहेनां उदासी रे ॥ जग० ॥ परख्या में जिनराज हरो, मेरी दुरगतकी फांसी॥तजो सब धदा, मेरी जान ॥तजो०॥ जिनवर मुख पूनमचंदा जिनदास तुमारा बंदा मेरे एक जिनदर्शन चहियें रे ॥ मेरे० ॥ चल० ॥ ४ ॥

॥ अथ शीखामणनी लावणी बीजी ॥

॥ तुम जजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाई ॥मुग० ॥ अथ अचल अखंडित ज्योति, सदा सुखदायी ॥ए आंकणी ॥ में रुल्यो चोरासीमांहे, जूल्यो में जरम ॥ जूल्यो०॥ महारे उदये अनंतां दुःख, बांध्यां जब करम ॥ में कहियेक हुउं रंक, फरयो तज शरम ॥ फर्यो० ॥ अरु कहियेक राजा जयो, गरथको गरम ॥ जब गरब आप कर खोल्यो, पारका मरम ॥ पार० ॥

पण निर्मल जुगसें जैन, कियो नहि धरम ॥ अब मनख जनमसें चेत, घमी शुन्न आई ॥ घमी० ॥ अब०॥१॥ में सुर नरका सुख, वार अनंती पाया ॥अनं०॥ महा-रे शिव समताका सुख, हाथ नहि आया ॥ में कुगुरुने कुदेव, नला कर ध्याया ॥ नला० ॥ में नलज्यो अना-दि अग्यान, विषय नोग नाया ॥ में पड्यो लोनके फंद, जोरुतो माया ॥ जोरु० ॥ पण लाग्यो अंत जब आया, कालने खाया ॥ अब परिहर सब परमाद, धर्म कर नाइ ॥ धर्म० ॥ अब० ॥२॥ अब दुर्लन अवसर लही, तुं सुकृत कर रे ॥ तुं सुकृ० ॥ अब दान शीयल तप नाव, हियासें धर रे॥ तुं करमकी माला काट, पाप परिहर रे ॥ पाप० ॥ अब वार वार कहुं तोहे, जगतसें तर रे ॥ तुं श्रीनिर्मल नयणें देख, नरकसू मर रे ॥ न-र० ॥ तुं शीख सुगुरुकी मान, अग्यानी नर रे ॥ अब परत्रीय कर जान, बेन ने माई ॥बेन० ॥अब० ॥ ३ ॥ अब जिनवर मुऊ मन नायो, सदा गुण गाऊं ॥ सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो, नरक नाहि जाऊं ॥ अब नव नवमांहि देव, जिनेसर पाऊं ॥ जिने०॥ में मन वच काया करी, चरण चित्त लाऊं ॥ ए दयाधरम हितकार, सदा में चाहुं ॥सदा० ॥ ए चोरासीके

मांहे, फेर नहि आऊ ॥ यु अरज करे जिनदास, कि रत ए गाई ॥ कीरत० ॥ अब० ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ अथ श्रीग्वामणानी लावणी त्रीजो ॥

॥ कब देखुं जिनवर देव, जगतगुरु ग्यानी ॥जग०॥ कोइ आप समो नहि ओर, जो अतरध्यानी ॥ ए आंकणी ॥ अब विषम वन मझार, जगतमें भटक्यो ॥ ॥ जग० ॥मुके अनमतने से जाइ, नरकमें पटक्यो ॥ अब लहु दरिसन जिनवरका, ओ दिन कब ऊगे ॥ ओ० ॥ मुक मनकी वंछित आस, अधिक सब पूगे ॥ ॥अ जिन दरिसन बिन नयन, करे मुरूपानी ॥ करे० ॥ कोई० ॥ १ ॥ थारे कुगुरुको उपदेश, हियामें ठायो ॥ ॥ हिया० ॥ पण सरस भेद समकितको, जीव नहि पायो ॥ अब जैन धर्म निज माल, मूरख मत खोवे ॥ मूरख० ॥ ए सुमति सुरगको पंथ, अमरगत होवे ॥ अब दुर्लभ जिनभक्तिका, लही निज ठानी ॥ लही० ॥ कोई० ॥ २ अब सुर नर गावे गीत, अजब जस लागी ॥ अजब० ॥ जिहां नाचत नृत्य अनेक, आस सकु त्यागी ॥ अब मोहत मन नरपतिका, गगनधुनि गरजे ॥ गग० ॥ ए जिनवर महिमा अनत, ध्यान दिल धरजे ॥ एसी अधिक छबी जिनजीकी, मेरे मन मानी

॥ मेरे० ॥ कोई० ॥ ३ ॥ अब जिन चरणोंसें रंग, अधिक दिल लागो ॥ अधिक० ॥ में पेख्यो जिन गुण अजब, सुरंगी वाघो ॥ आ सफल घरि समकितकी, हाथ अब आइ ॥ हाथ० ॥ मे गगन गमनकी पांख, अमूलक पाइ ॥ अब बोलत युं जिनदास, जिनवानी ॥ सुनो० ॥ कोइ० ॥ ४ ॥ ॥ ३ ॥

॥ अथ शीखामणनी लावणी चोथी ॥

॥ एक जिनवरको निज नाम, हियामें लेनो ॥ हि० अब लगी लगन जिनवरसे, खुश रहेनां ॥ सदा खुश रहेनां ॥ ए आंकणी ॥ अब निरखुं जिन दिदार, दरस कव पाऊ ॥ द० ॥ जगसें जिनवर निज नाम, निरंजन ध्याऊ ॥ अब रहे नयन लोभाय, हियो नित फरके ॥ हियो० ॥ मोहे जिनदर्शनको आस, पाप सब सरके ॥ अब सुरपति निरखत रूप, नजर भर नेनां ॥ नजर० ॥ अब ॥ १ ॥ अब मिट्यो मरण भय भवको, आस मुज पूरो ॥ आस० ॥ में जपुं जिणंदको नाम, मेलु नहि दूरो ॥ घनघाति ए घाले घेर, करम सब चूरो ॥ कर० ॥ में दुर्गति भमतां आयो, आप हजूरो ॥ अब शुभ नजरां मुख निरखी, मुक्तिपद देनां ॥ मुक्ति० ॥ अब० ॥२ ॥ अब हे हीरोकी खान, ग्यान निज करणो ॥

ग्यान० ॥ ए सुगति पथ दातार, सुमतिकी धरणी ॥ अब शुकल ध्यानकी पेढी, चढा नीसरणी ॥ चढा० ॥ एसा जगमे संत सुजान, मुक्तिपद धरणी ॥ अब आपो सथा कर करकें, अमर सुख वेना ॥ अमर० ॥ अया० ॥ ३ ॥ अब येठ करुं म मोज, आनदके घरमें ॥ आ० ॥ में परख्या श्रीजिनराज, जगत कृपा जरमे ॥ में दुःख जोगता हुं अनन, करे कृपा देखो ॥ करे० ॥ में अरज करु तन मनसें, नजर जर देखो ॥ अब वोद्धत यु जिनदास, सर्व रस वेना सर्व० ॥ अय० ॥ ४ ॥

॥ अथ उपदेशनी खावणी पांचमी ॥

॥ खवर नहीं या जुगमें पलकी रे ॥ खवर० ॥ ॥ सुकृत करना होय तो कर ले प्यारे, कोन जाने कलकी ॥ ए आंकणी ॥ या दास्ती हे जगखवालकी काया मंगलकी ॥ काया० ॥ सास उसास समर ले साहिब, आयु घट पलकी ॥ खवर० ॥ १ ॥ तारामंडल रवि चंद्रमा, सव हे चमनेकी ॥ दिवस चारका चमत्कार ज्यु, विजलियां जलकी ॥ खवर० ॥ २ ॥ कूड कपट कर माया जोमी, करि वातां ठलकी ॥ पापकी पोटली बांधी सिरपर, केस होय हलकी ॥ खवर० ॥ ३ ॥ या जुग हे सुपनेकी माया, जैसो बुंदो जलकी ॥ विणसंतां तो वार

ने लागे, दुनिया जाय खलकी ॥ खबर०॥४॥ मात तात सुत बंधव दाइ, सब जग मतलबकी ॥ काया माया नार हवेली, ए तेरी कबको ॥ खबर० ॥ ५ ॥ मन मावत तन चंचल हस्ती, मस्ती हे बलकी ॥ सत गुरु अंकुश धरो सीसपर, चल मारग सतकी॥खबर० ॥ ६ ॥ जब लग हंसा रहे देहमें, खुसीयां मंगलकी ॥ हंसा ढोरू चल्या जब देही, मटी यां जंगलकी ॥खबर० ॥७॥ पर उपकार समो नहि सुकृत, धर समता सुखकी ॥ पाप नहिं पर प्राणी पीमन, हर हिंसा दुःखकी ॥ खबर० ॥ ८ ॥ कोइ गोरा कोइ काला पीला, नयणे निरखनकी ॥ ए देखी मत राचो प्राणी, रचना पुज्जलकी ॥ खबर० ॥ए ॥ अनुभवज्ञानें आतम बूझी, कर बातां घरकी।.अमरपद अरिहंतकुं ध्याया. पदवी अविचलकी ॥ खबर० ॥ १० ॥ दयाधरम साहिबको समरन, ए बातां सतकी॥राग द्वेष उपजे नहि जिनकुं, विनती अखमलकी ॥ खबरप ॥ ११ ॥ ॥ ५ ॥

॥ अथ सुमति कुमतिनो लावणी ढ्ठी ॥

॥ हांरे तुं कुमति कलेसण नार, लगी क्युं केडे ॥ ॥लगी०॥चल सरक खमी रहे दूर. तुझे कुण छेडे ॥ ए आंकणी ॥ हांरे तुं सुमतिको भरमायो, मुझे क्युं

ठोमी ॥ मुझे० ॥ मेरी सदा शाश्वती प्रीत, तिनक्रमे सोमी ॥तुझ बिन सूनी मेरी सेज, कहु कर जोमी ॥ कहु० ॥ ठठ चलो हमारे संग, सुखें रहो पहोढी ॥ थु शुर थुर कुमति श्रांसु, श्रांखसें रेडे ॥ श्रांख०॥ तु कुमति० ॥ चख० ॥ १ ॥हारे तेरी नरकनिगोदकी सेहेज, सेंति मे रूल्यो ॥ सेंति० ॥ पकड्यो साचो जिनराज, संग तेरो तुड्यो ॥ तेरी मूरख माने वात,हैयाको फूटयो ॥ हैया०॥ में सहेज हुवो हु दूर,तार तेरो त्रूटयो । तु कर दूरसें वात, श्राव मत नेडे ॥ श्रा० ॥ चख० ॥१ ॥ मेरी श्रनत कालकी प्रीत, पलक नहि पाली ॥ पल०॥ सुमतिके लागो संग, मुझे क्यों टाली ॥ तु सुमतिको सिरदार, सुणावे गाली॥सु० ॥ तेरी हम दोनु हे नार, गोरी श्रोर काली ॥ तु हमकु देखे दूर, सुमतिकु तेडे॥ सुम० ॥ चख० ॥ ३ ॥ श्रब कुमतिको ललचायो, रति नहि रुगियो ॥ रति० ॥ सुन कर सूत्रोंकी शीख, साच होय लगियो ॥ चेतन कुमतिके सहेज, दूरसू भगियो ॥दूर०॥ जिनराज वचनको ग्यान, हैयेम जगियो ॥ जिनदास कुमति तु घात, खोटी मत खेडे ॥ खोटी०॥ ॥ चख० ॥ ४ ॥ ॥ ६ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी सातमी ॥

॥ तुम तजो जगतका ख्याल, इसककां गानां ॥ इस० ॥ तेरी अल्प उमर खुट जाय, नरक उठ जानां ॥ तें दिनां चार जुग बीच, लिया हे वासा ॥ लिया० ॥ तेरे सिरपर बेठा काल, करत हे हांसा ॥ में बोलुं साची बात, जूठ नहि मासा ॥ जूठ० ॥ तुं सूता हे कुण निंद, किसी कर आसा॥ अब सेव देव जिनराज, खलकमें खासा ॥ खल० ॥ तेरा जोबन पतंगका रंग, जूठ सब आसा॥ अब हिये धरो मेरी सीख, समज रे दीवाना ॥ सम० ॥ तुम० ॥ १ ॥ अब बूरी जली सब बात, सून कर रीजें॥ सून० ॥ ए मुख मीठा सांसार, भेद नहि दीजें॥ कर वीतराग विसवास, हिये धर लीजे॥ हिये० ॥ पण नीच नारका संग, मांहे मत भींजे अब सात विसनको संग, प्रीत मत कीजे ॥ प्रीत०॥ तोहे डुरगतदे पहोंचाय, तेरो तन छीजे ॥ तुं सुख डुःखका सिरदार, रंक नहि राना ॥ रंक० ॥ तुम० ॥ २ ॥ तुं विसर गया जुग वीच, नाम जिवनरका ॥ नाम० ॥ पच रह्या कुटुंबके काज, किया फंद घरका ॥ ते दयाधरम विन खोया, जनम सब नरक ॥ जनम० ॥

तें पहे घांध्यां पाप, फसाड सरखा ॥ अब छिया नहि तें खाम, घखत पर करका ॥ यसन० ॥ तेरी घीती यात सव जाय, जनम ज्यु खरका ॥ अव सुणो सीख सूरतकी, सुघट रे शाणा ॥ सुघट ० ॥ तुम० ॥
॥३॥ तेरी चरण सेज पर पोढ्या, आनंद दिल आया॥ आन० ॥ मेरी जगी चूल सघ प्यास, सुधारस पाया ॥ मेरे सिरपर तुम सिरदार, जिनेसर राया ॥ जिने० ॥ मे चाहु चरणकी सेव, सफल कर काया ॥ अब यो दोलत दरसनकी, मेरे पही माया ॥ मेरे० ॥ युं अरज करे जिनदास, अल्प गुन गाया ॥ अब बुरा कुगुरु उपदेश, धरो मत काना ॥ धरो० ॥ तुम० ॥४॥७॥

॥ अथ उपदेशनी लवणी आठमी ॥

॥ सुगुरुकी शीख लिये धरनां रे ॥ सुगुरु० ॥ अमरापुरको पंथ सदा, श्रीजैन धर्म करनां ॥सु०॥ ॥ परमपरमारथ तें टाखो रे ॥ पर० ॥ सार जगतमें जैन धरम, जुगतिसें नहि पाखो ॥ प्रभुको नाम नहि लीनो रे ॥ प्रभु० ॥ महा एखाएल विषय विकट, मिथ्यामतसें भीनो ॥ चेतन युं बहु विध दुःख पावे रे ॥चेत०॥ खपटपो खाखचमांहे पांच, इन्द्रिके सुख चहावे॥ जीव अब पाप परीहरनां रे ॥ जीव०॥ अमरापुर० ॥ १ ॥ दया

चेतनकुं सुखकारी रे ॥ दया० ॥ श्रीजिनराज परपी जैसी, केसरकी क्यारी ॥ जगतमे तीरथ हे चारी रे ॥ जग०॥साधु साधवी श्रावक श्राविका, हुआ व्रतधारी ॥ इनंकुं कहियें ब्रह्मचारी रे ॥ इनुं० ॥ समता संयम सार करीने, कर्म हण्यां जारी ॥ इनुंने मेट्या जन्म मरणां रे ॥ इनुं० ॥ अमरा० ॥ २ ॥ पंच इंद्रिसे लपटायो रे ॥ पंच० ॥ दुःख अनंतां सह्यां रे बहुलां, प्राणी पछतायो ॥ बहु दुर्गतिसें जमी आयो रे ॥ बहु० ॥ शुद्ध मंत्र नवकार सार, दुर्लभ अब मे पायो ॥ मेरो मन जिनवरसुं लायो रे ॥ मेरो०॥कुगुरुको सब संग अशुद्ध, मिथ्या मत छटकायो ॥ इणविध जवजलसें तरणां रे ॥ इण० अम० ॥ ३ ॥ रहो जिनवाणीसे राता रे ॥ रहो० ॥ अनत सुखोकी खाण, सदा शिव मंगलकी दाता ॥ सदा जिनवर जक्ति करजो रे ॥ सदा०॥ चित्त धरी हैयामे जवि तुम, पाप परां हरजो ॥ अल्प जिनवरका गुण गाया रे ॥ अल्प० ॥ कर जोमी जिनदास कहे, जिनजक्तिसे न्हाया ॥ सदा मे चाहुं जिन चरणो रे ॥ सदा० ॥ अमरापुरको पंथ ॥ सदा० ॥ ४ ॥ ॥ ७ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी नवमी ॥

॥ तुं उलज्यो हे जंजाल जगतमे, विकल जइ सब

तेरी मति ॥ आप मुवा अभिमानी जीवडा, आगे की वाविध होय गति ॥ तु० ॥ ए आंकणी ॥ सुलज सीतावी साय समकितकु, सुगुरु शीख दिलमे आणो ॥ तजो सकल मिथ्यात घातकु, कुगुरु तणो पख मत तणो ॥ क्षायिक समकित खरा खजाना, सो अपनां कर कर जाणो ॥ कठण पुण्यसे आय मिल्यो तोहे, दुर्लज नर जवको टाणो ॥ ग्यान नजर कर देख जीवडा, जीत गया हे साध सती ॥ तु० ॥ १ ॥ घेर घेर नरजवको अवसर, फिर फिर हाथ नहीं आवे ॥ वात वीत गइ खाली मूठि रही, जब परजवमे पठतावे ॥ दान शीयल तप जाव जूलकर, नहीं पीव पानी पावे ॥ सजु की सुणी शीख मानवी, मनमे रीश अधिकी लावे ॥ एसा करम कर दुर्गति पहोंचे, वाको वखत जब आन खती ॥ तु० ॥ २ ॥ एसो जानकर समज जीवडा, समकित अमृतरस पीजे ॥ नरजव हे निरवाणको मारग, निफल उनकु मत कीज ॥ सुख जिंदगानी सुण अभिमानी, जगरजाल्में क्यों रीजे ॥ सुकृत हे सरगको मारग, बनि आवे तो कर लीजें ॥ तज जक्ति सब और देवकी, कर शिरपर जिनराज पति ॥ तु० ॥ ३ ॥ जिन आगमकी शीख सुनी तोहे, गणधर सूतरमें अटके ॥

वांकी वांको क्युं फिरे जीवमा, जुवानी जोवनके मटके ॥ परखे नहि परभवकुं प्राणी, काल आन पलमे घटके ॥ शीख देत जिनदास ओरकुं, आप, पथ्थरपर पग पटके ॥ मे आपनो पिंड भर्यो पापसे, पुण्य कियो नहि एक रति ॥ तुं० ॥ ४ ॥ ए ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी दशमो ॥

॥ सुकृतकी बात तेरे हाथ, रति नां रही रे ॥ रति० ॥० ॥ पुद्गलमे मान्यो सुख, कल्पना कही रे ॥ सुकृ० । जगमांहे जैन निज सार, संघाते आवे ॥ संघा० ॥ इनकुं तजकर क्युं बेठो, विषयगुण गावे ॥ अमरतकुं अलगो ढोल, विसन विष खावे ॥ विसन०॥ मुक्तिको मारग मेट, उवटमे जावे ॥ थारी तुछ जिंदगानी मांहे, विकल बुद्धि भइ रे ॥ विकल० ॥ पुद्गल० ॥ १ ॥ थारे नथ दोलत भंडार, भर्या हे मोती ॥भर्या० ॥ शत्रु सज्जन सब बने, जगल होय गोती ॥ कोइ मसले तेल फूलेल, धोवे कोय धोती ॥ धोवे० ॥ सन्मुख उठ आवे अबला, तेरो मुख जोती ॥ एसी संपत एक दिनमांहे, सर्व क्षय जई रे ॥ सर्व० ॥ पुद्गल० ॥ २ ॥ तें खटरस खाय खूब, खजाना खोया ॥ ख ० ॥ निसि दिन सुखभर सुंदरीकी, सेजमें सोया ॥ रजिया सोले

शणगार, नारीतें मोह्या ॥ नारी० ॥ स अमर घटका मेख, रति नहीं धोया ॥ या नरक निगोदकी वाट, प कम कर सही रे ॥ पकम० ॥ पु० ॥ ३ ॥ मन मातो आठ मदमांहे, गर्वसें बोले ॥ग०॥ में सुख संपतका नाथ, मेरी कुण तोले ॥ दुर्बल करता पोकार, पलक नहि खोले ॥पत्र०॥ चारक होय रह्या हजूर, चमर शिर ढोले ॥ अब अवसर आयो हाथ, चेत तु सही रे ॥ चेत० ॥ पु० ॥ ४ ॥ कायासें कीयो लाम घनाई चगी ॥ घना० ॥ पलजर परवार्या पुण्य, तणो तिहां जगी ॥ पकमी परजव वाट, होय कुण संगी ॥ हो०॥ तेरो हंस गयो आकाश, काया पमी नगी ॥ जिनदास कहे कर्मोमु, जोर तेरो नहीं रे ॥जो०॥पु०॥ ५ ॥ १० ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी अग्यारमी ॥

॥ अने हारे लाज नहि लियो, जिनद जजके रे॥ लाज० ॥ सुमतिकी सेज गयो तजके ॥ ए आंकणी ॥ पापमें रात दिवस जाता रे ॥ पापमें० ॥ धर्ममारग में नहि आता ॥ अने हारे बोलतां मुखसें मीठी वार्तां रे ॥ बोल० ॥ माल परका ठग ठग खाता ॥ अ० ॥ घनाया दिल बोत मातारे ॥ घना०॥ सदा त्रि पयारससें राता ॥अ०॥ कर्म तें किया खुब रचके रे॥

कर्म० ॥ सुमतिकी सेज गयो तजकें ।॥ अ० ॥ १ ॥ अ० ॥ खलकका ख्याल खूब जोता रे ॥ खल० ॥ निं-दत्तर सेजामें सोता ॥ अ० ॥ जाण जंजाल सब थोथा रे ॥जाण० ॥ गगन उम्ह गया हंस तोता ॥ अ० ॥ स-जन सब मेला होय रोता रे ॥ सजन० ॥ एकेला आप खाया गोता ॥ अ० ॥ चलत चम्ह पूठ गरव गजके रे ॥ चलत० ॥ सुमति० ॥ २ ॥ अ० ॥ खावतो खीर हाथ रांधी रे॥खाव० ॥ घणां घरमें सोना चांदी ॥ अ० ॥ आतमा हुइ तेरी आंधी रे ॥ आ० ॥ सुरगको कीर्ति नहि साधी॥अ० कालने आये फांसी फांदी रे ॥का०॥ आगी कुण होय बीबी बांदी ॥ नरक उठ चले पाप सजके ॥ नरक० ॥ सुमति० ॥३॥ अ० ॥ रोपी अत्र जाय काल खूटी रे ॥ रोपी० ॥ प्रीत सब देहकी टूटी ॥ अ० ॥ ऊठ कर चल्यो खोल मूठी रे ॥ ऊठ०॥ बात कर गयो जगसें जूठी ॥ अ० ॥ लोगने काया तेरी लूंटी रे ॥ लोग० कहे जिनदास आस छुटी ॥ अ० ॥ किया रे सब धूल कुगुरु तजकें ॥ किया० ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ ११ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी बारमी ॥

॥ तजो काम मद मान लाल जिनवर गुण तज लीजें, कमाई सुकृतकी कीजें ॥ कमा० ॥ तजो० ॥

ए आंकणी ॥ तें नहीं परख्या जिनराज, अधम होय
रह्या बीतो ॥ सुखदायी संवर समताको, रस क्यों
नहि पीतो ॥ लाख तुम मनुष्यातन जींतो रे॥लाख॰॥
दान शील तप जाव विना तेरो, जन्म जाय रीतो ॥
धर्म विन कारज नहि सीके रे ॥ धर्म॰॥तजो॰ ॥ १ ॥
निशिदिन उल्लसे नयन, मेरो दिल जिन दरिसन
चहावे रे ॥ मेरो॰ ॥ हरख्यो जगतजजाल लाल, जिन
वर जक्ति जावे ॥ सखी सुरनर मंगल गावे रे ॥ सखी॰
॥ सुगरु कठ सुरपतिको अजय धुनि, अवर गरजावे
॥ जजन भन लालचमें रीजे रे ॥ जजन॰ ॥ तजो॰ ॥
२ ॥ जिनवानी दिन चार जीव तु, मनम कथु मेला रे
॥ जीव तु॰ ॥ जोबनकी गुमराइ गर्वमें, खूब बन्यो
घेलो ॥ पाप जिनवाणीका ऊीलो रे ॥ पाप॰॥ तप
तरवार जाव कर जाला, वैरी करम सु ठेलो ॥ करम
कु दावानल दीजें र ॥ करम॰ ॥ तजो॰ ॥ ३ ॥ जिन
मुख वरसे मेघ, मिटयो जाजत जब जव फेरा ॥ जीं
जत॰ ॥ दरिसन यो अरिहंत प्रभु, तरसे तन मन मे
रा ॥ मेटो मुक घनघातका घेरा ॥ मेटो॰ ॥ अरज
करे जिनदास दिया तुम, मुक्तिमांहे डेरा ॥ मेरोत
न दर्शन विन छीजे रे ॥ मेरो॰ ॥ मेरो॰॥त॰ ॥४॥१२॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी तेरमी ॥

॥ अगम पंथ जानां हे नाई रे ॥ अगम० ॥ ग्यान ध्यान समकित संजमसें, सुधरे कमाई ॥ अगम० ॥ ए आंकणी ॥ मेल मन अंतरकी आंटी रे ॥ मेल० ॥ कर्म उदय चेतनकुं पमी हे, निगोदकी घांटी ॥ महा दुःख पाया ॥ महाराज, महा दुःख पाया ॥ श्रीजिनवर मुखसें नहीं गाया ॥ निज प्राणीकुं नहीं समजाया ॥ नही तिलन्नर साता पाई ॥ न० ॥ ग्यान ॥ १ ॥ तन धन जोबन नहीं अपनां रे ॥ तन० ॥ कुटुंब कवीला बेन ना-नेजा, रजनीका सुपनां ॥ सबी विरलावे ॥ महाराज सबी विरलावे ॥ फिर चेतन मन पछतावे ॥ कछु संपत संग नहीं आवे ॥ धर्म निज कर ले सुखदाई रे ॥ धर्म० ॥ ग्यान० ॥ २ ॥ नरम तुज अंतर घट लागो रे ॥ नरम० ॥ उदय हेत कुयति संगसें, विशय पवन लागो ॥ पाप संग चाले ॥ महाराज, पाप संग चाले ॥ चेतनकुं नरकमें घाले ॥ जिन मारग शुद्ध नांहि पाले ॥ जपो जिनवरकुं लय लाई रे ॥ जपो० ॥ ग्यान० ॥ ३ ॥ पाप मेरो नवनवको कापो रे ॥ पाप मे० ॥ मुक्तिदान अमर फल पदवी, सेवककुं आपो ॥ वीनती मानो ॥ महाराज, वीनती मानो ॥

श्चरदास हीयायें श्चानो ॥ सेमककु श्चपनो जानो ॥ देव दीग जिनवर न्यायी रे ॥ देव दी० ॥ ग्यान० ॥ ४ ॥ श्चरज श्चथ सेयक यु करता रे ॥ श्चरज० ॥ जवजलसें पार वतारो, निगोदसें हे करता ॥ श्रीजिनवानी ॥ मह्राराज, श्रीजिनवानी ॥ श्चमृतसें श्चधिकी जानी ॥ जिनदास ही यामें श्चानी ॥ कीरति जिनवरकी में गाई रे ॥ कीरति० ॥ ग्यान० ॥ ५ ॥ १३ ॥

॥ श्चथ उपदेशनी लावणी चौदमी ॥

॥ सुरग श्चास मत करे कलेशी, कुमति संग वायो ॥ जिनद जस जगमें नहीं गायो ॥ सुरग० ॥ कीयो लोकपर राज जमाई, जगत बीच तोजी ॥ लई त कपटलान खोजी ॥ बन्यो रहे दिनरात मान मद, मिजलसको मो जी ॥ खुलेगी तेरी नरकमें रोजी ॥ विखस रह्यो सुख से ज नहीं, चित्त चर्चाको चोजी ॥ श्चासमा श्चनमतमें श्चो जी ॥ सुरग० ॥ १ ॥ "दोहा ॥ चूल्यो धरम श्चनादिको, (श्चरे) फूटा हैयाका नेण ॥ साचे सद्गुरु तज दिया, कीया कुगुरुका वेण १ ॥ " विकट नरक दुःख सह्या शीशपर, चेते नहीं पाजी ॥ जीवको श्चन्यायस राजी ॥ परधन खायो झुव लोकसें,

आतम नहीं लाजी ॥ करी तें देह खूब ताजी ॥ कीयो नरकमें वास आतमा, अगनीसे दाजी ॥ जोर क्या करे कहो काजी ॥ कीयो सब करम उदय आयो ॥ सुरग० ॥ २ ॥ "दोहा ॥ आप कीया फल जोगवे, (अरे) नहीं कीसिका दोस ॥ राखसरूप विकरालसों, देखत उफियां होंस ॥ २ ॥ " मुखसे चावे पान पतासां, मेवा खूब चावे ॥ विषय सुख रमणी रस चावे ॥ चले निरखतो छाय, गरवके मांहे नही मावे ॥ जमी पर वांको वांको जावे ॥ गरव वचन मुख कहे मेरे कोड, सामो कुण आवे ॥ तमासा तुरत पुरुष पावे ॥ घणो अब मनमें पछतावे ॥ सुरग० ॥ ३ ॥ "दोहा ॥ कीयो मान जगमें घणो, (अरे) परजव दीयो खोय ॥ जाय जमके पाने पड्यो, बेठ रह्यो जब रोय ॥ ३ ॥ " ऐसी करमकी रीत, निरखत मन जगतसेंती फरे ॥ मेरो कारजतुम वीन न सरे ॥ मुफ शिर उपर धणी जिनेश्वर, नाथ ओर नहि कुण करे ॥ जिनंद ग्यानादिक गुणसे जरे ॥ पार नहीं संसारसमुद्रको, सीताबी तिनसें तरे ॥ जविक जन ध्यान तेरो दिल धरे ॥आनंदसें अनुजव पद पायो ॥ सुरग० ॥ ४ ॥ "दोहा ॥ तुं चित्तमें निशिदिन वसे, (अरे) और

नहीं मुक्त ध्यान ॥ हाथ जोड़ जिनदास कहे सो पावत पद निर्वाण ॥ ४ ॥" ॥ १४ ॥

॥ श्रीनेमनाथजीनी लावणी पन्नरमी ॥

॥ अरी अरी माई, मेरो नेम गयो गिरनार, किसें जइ केनां ॥ किसें० ॥ वाके दरश विना तरसे हमारे नेनां ॥ ए आंकणी ॥ अरी० ॥ जादवकी जान जोरावर, सब च ल आई ॥ सब० ॥ ॥ पशुअनसें लगायो हेत, हमें छटकाइ ॥ अरी० ॥ हम विलखी मेली महेलमांहे, गया वनमांहि ॥ गया० ॥ सखी बेठी में मन मार, खरी गम खाई ॥ अब लहु गुरुकी ओट, धरे नहीं रेनां ॥ धरे० ॥ वाके० ॥ १ ॥ अरी० ॥ मोहे जावन दे वनमांहे, ममत तजमेरी ॥ मम त० ॥ मोहे मसिखा मारे लोक, जगत मेरा वेरी ॥ अरी० ॥ जुगमें काया कुमलाय, ज्यु काची केरी ॥ ज्यु ० ॥ तप जप संयमकी लहु, सांकडी सेरी ॥ मेरो पति वसे परतग्रमें, पहेरुं नहीं घेनां ॥ पहे० ॥ वाके० ॥ २ ॥ अरी० ॥ कुगुरुसें कियो व्यापार, गमायो कीनो ॥ गमा० ॥ सेरी भक्ति विना हुं हुओ, बहोत मति हीनो ॥ कण हीन हुओ वसतरकु, क्से क्या सीना ॥ क्से० ॥ कामधेनु मेरे घरमांहे, दूधकी धीणो ॥ अरी०

हम दुःखी कालके जीवकुं, दरसन देनां ॥ दर० ॥ वाके० ॥ ३ ॥ अरी० ॥ नव भवको नवल नेमिनाथ, पति है मेरो ॥ पति० ॥ वन रह्यो हीयाको हार, शीशको सेरो ॥ अरी० ॥ जन तजी शोल सिणगार, दीयो वन डेरो ॥ दीयो० ॥ मेरी सुणी नहीं पोकार, कानको बहेरो ॥ अरी० ॥ इण मेलनमे नहीं पांउं, रति सुख चेनां ॥ रति० ॥ वाके० ॥ ४ ॥ अरी० ॥ क्या भयो बडो आचरीज, जगतमें आयो ॥ जग० ॥ मेरे पल्ले लागो पाप, सुजस नहीं पायो ॥ अरी० ॥ बुद्धि हीन भयो मेरो जीव, न जिनगुण गायो ॥ न जिन० ॥ जिम तिम कर करजो पार, सरण तेरी आयो ॥ ॥ अरी० ॥ बोले मजलसमें मह्लजी, ग्यानकी पेनां ॥ ग्यान० ॥ वाके० ॥ ५ ॥ अरी० ॥ १५ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी सोलमी ॥

॥ सजन समजावो अपने मन कुंरे, सजन समजावो अपने दिलकु ॥ मत जावो गिरनार नेम फिर, क्या करनां धनकुं ॥ ए आंकणी सती राजुल मन नहीं माने रे ॥ सती ॥ वांक विना ऊठ गये गिरिवरकुं, वन वेठे ध्याने कूरती मूकी, महाराज ॥ कू० । राजुल शील नहो चूकी, मेरी देही नेम विन सुकी

मिलु किणविध नेय जिनकु ॥ मिलु० ॥ मत० ॥ १ ॥ ममता किणविधसे मारु रे ॥ मम० ॥ दील दाजत अगिसें नगीना, नेम दरद दारू ॥ अरज सुण छती महाराज ॥ अर० ॥ राजुल कर जोमी कहेती, मंदिरमें नहीं रेती, रखु क्यो कर जोबन धनकु ॥ र० ॥ मत० ॥ २ ॥ नेम निर्मल जिन अविनासी रे ॥ नेम० ॥ क्या तारीफ करु जिनवरकी, गिरिवरके वासी ॥ मान मद मारया, महाराज ॥ मान० ॥ शुद्ध संयम दिलमें धारया, कारज अपनां सब सार्यां, सेवतो गिरिवरके वनकु रे ॥ सेव० ॥ मत० ॥ ३ ॥ अरज सेवककी ,न लीजो रे ॥ अर० ॥ शुद्ध तन मनसें करु वीनति, मुक्तिदान दीजो ॥ ओर नहीं चावे, महाराज ॥ ओर० ॥ अरिहंत चरन चित ध्यावे, जिनदास नेम गुन गावे, चहाना नित्य छब दरसनकु ॥ चा० ॥ मत० ॥ ४ ॥ १६ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी सत्तरमी ॥

॥ में अ ला हुं अजाण लाल, तेरे दरसनकी चूखी ॥ सजन तेरे दरसनकी चूखी ॥ किसीसें चितसें नहीं चूकी ॥ ए आंकणी ॥ गयो महेलको खेल, सखी उजम मेरे होय लागे ॥ सखी० ॥ विरह चालमको न्ध्ये जागे ॥ कियो हियाकु हाथ, नाथ दुर्गति दु खकु

दागे ॥ नाथ० ॥ दूर अबलासे क्रम चागे ॥ धरयो अ-
चल तुम ध्यान, उपनो हे निर्मल ग्यान, नेमी किनी हे
निर्वान प्रभुजी दुर्गति दीनी फुंकी ॥ प्रभु० ॥ कीसी०
॥ दोहा ॥ श्याम सलूनो साहिबो, जई बेठो गिरनार ॥
विलसे शिवपुर सेजकुं, सो तज कर राजुल नार ॥
चलांजी सो तज कर राजुल नार ॥ १ ॥ पडे पलक
नहि चेन, सलूणो मोहे सुपनामें दरसे ॥ सलू० ॥ पुरुष
दूजाने कुण फरसे ॥ पति वसे परवतमें सखोरी अब
मन मेरो तरसे ॥ सखी० ॥ नेन विना नयणे नीर व-
रसे ॥ बोल्या नहीं हसकर बोल, मेरो घट गयो रे सब
तोल, क्या कहुं जगतमें ढोल, सजन तेरे ढुंगरकुं ढूकी
॥ सजन ॥ कीसी० ॥ दोहा ॥ खबर न पूछी खूनकी,
गुनो कियो में कून ॥ सदाय दुर्बल बेलपर, सोदो लाधे
गुन ॥ चलांजी ॥ सो० ॥ २ ॥ किहां वस्त्र किहां गेनी
गाया, किहां मिलशे अन्न पाणी ॥ सखी किहां० ॥
नाथ मेरो ऐसो निर्वाणी ॥ तजे कांचली नागणी, विध
काया रे कर जाणी ॥ सखीरीविध० ॥ गिनती मेरी
मनमें नहि आणी ॥ कसें रहुं अब घरमें, कोइ नर
दीसे नहि नरमें, मेरी बात रही नहि करमें, सजन
बिन गुना गये मूकी ॥ सजन० ॥ कीसी० ॥ दोहा ॥

रुण भवमें उपजी नहि, ओर पुरुषकी आस ॥ नेम मुफकु तज गया, सो में बी लहुं वनवास ॥ जसांजी ॥ सो० ॥ ३ ॥ जखो जगतकी जाल, सखी संपतकु क्या करनी ॥ सखी० ॥ नेम तज गये हे अधपरनी ॥ दीनी मुजे लटकाय, जाणकर जगतकी हरनी ॥ जाण० ॥ आदरी मुक्तिकी करनी ॥ इला नहि उनको रुगी, मुक्तिसें ममता खगी, सुमतिकु कीनी सगी, वालम मोहे वीरी चाव थूकी ॥ वालम० ॥ कीसी० ॥ दोहा ॥ मनकुजरकु वश करी, सेठो पकड्या शील ॥ शुद्ध सुमति हिरदे वसी, सो नास्या पापकु पील ॥ जसांजी ॥ सो० ॥४॥ हृघ्यो पियरको प्यार, जार मेरे शिरपर सब धरता ॥ मेरो आदर नहि कोइ करता ॥ विना कथकी नार, देख जग सघला जखमरता ॥ देख० ॥ आंखम आंसु पीया भरता ॥ पख दोनु हुवा दु खदाय, महेलोमें नहि रहेवाय, चारू दिशें जगत पण खाय, खल कर्में लासन थिन सूखी ॥ खल० ॥ कीसी० ॥ दोहा॥ महेलोमें रहेतां थकां जणात हुवा दु खदाय ॥ जूठां आल सिरपर धरे, मोर्से सह्या न जाय ॥ जसांजी ॥ सो० ॥ ५ ॥ जबर जोर जोबनको देख, लोक मिसला मोहे बोले ॥ लोक० ॥ मेरो निरणो कहो कुण बोले ॥

नेमनाथ सिर पति, रति मेरी इछा नहि मोले ॥ रति० ॥ वसुंगी डुंगरको ओलें ॥ जलो ए सुखनर सेज, जगपतिने नाखी जेज, जिनदास मुगतकुं नेज, मेरी जुर जुर काया सूकी ॥ मेरी० ॥ कीसी० ॥ दोहा ॥ आग लगो सुखसेजकुं, मालक दीनी मूक ॥ कुल परमें कायम रही, सो रति पडी नहि चूक ॥ नलांजी ॥ सो० ॥ ॥ ६ ॥ ॥ १७ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी अढारमी ॥

॥ अने हांरे पिया बिन झुर झुर, में झुर झुर हुइ पूनी ॥ मुज कर गयो दुःख नर हूनी ॥ पिया बिन० ॥ ए आंकणी ॥ अने हांरे मुजे सुखशय्या, सुखशय्या नहि नावे ॥ पति बिन दिन दुःखमें जावे ॥ जोर जोबनको, अने हांरे जोर जोबनको संतापे ॥ हियो कुणबिध हाथे आवे ॥ सखी सुमतासें, अने हांरे सखी सुमतासें. लय लावे ॥ पार युं नवजलको पावे ॥ जगत सब जान्यो, अने हांरे जगत सब जान्यो हे मूनी ॥ मुजे कर गयो दुःख नर हूनी ॥ १ ॥ अने हांरे विजोग वालमको, वियोग वालमको पड्यो माथे ॥ जगतमें विगड गइ बातें ॥ रह्या नहीं नेमजी,अने हांरे रह्या नही नेमजी मेरे हाथे ॥ विलख तां जाये दिन

रातें ॥ चलो सब सजनी, अने हांरे चलो सब सजनी मेरी साथे ॥ जन्म कर लेउ संयम साथें ॥ प्रीत नहि छूटे, अने हांरे प्रीत नहि छूटे, मेरी जूनी ॥मुजें० ॥२॥ पति परवतका, अने हारे पति परवतका हुवा वामी ॥ गले दुःख कार गया फांसी ॥ नेम बिन नर सब, अने हांरे नेम बिन नर सब छे राशी ॥ तेरी सूरतकी मे प्यासी ॥ बात मे थोमु, अने हांरे नेम बात म थोमु बहु खासी ॥ बनी तेरी नब जबकी दासी ॥ नेम विना ज गम, अने हांरे नेम विना जगमें सेज सूनी ॥ मुक० ॥ ३ ॥ नेम राजुलका , अने हांरे नेम राजुलका धन धीया ॥ महेल मुगतिका जाय लीया ॥ सफल नरज नकु, अने हांरे सफल नरजनकु कर दीया ॥ अमर प्याला प्रभुजीसे पीया ॥ करो मेरा निर्मल, अने हांरे करो मेरा निर्मल सब हीया, शरण तेरा जिनदासें लीया ॥ हवे नहि लागे, अने हांरे हवे नहि लागे पवन ऊनी ॥ मुके कर० ॥ ४ ॥ १७ ॥

॥अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी ओगणीशमी॥

॥ सजन बिन गुना, मेरी जान सजन बिन गुना, बिन गुना तजी हमकु ॥ तरी राजुल कहेती तुमकुं ॥ ए आंकणी ॥ फिकर मोहे लगी, मेरी जान फिकर

मोहे लगी, फिकर मोहे लगी मेरे तनमें ॥ नगीने नेम गये वनमें ॥ बात किन आगल, मेरी जान बात किन आगल, बात किन आगल कहुं सजनी ॥ पिया विन देहीकु तजनी ॥ पिया परबतमे, मेरी जान पिया परबतमे, दुःख खमना ॥ महेल मंदिर मुजे नहि गमतना ॥ श्याम में खमी, तेरी जान श्याम मे खमी, श्याम मे खमी खाय गमकु ॥ सती० ॥ १ ॥ सती रथसंजम, मेरी जान सती रथसंजम, सती रथसंजममे बेठी ॥ भ्रमना अंतरकी मेटी ॥ सती सब सोनां मेरी जान सती सब सोनां, सती सब सोनां तज देती ॥ जगतमे राखी नहि रेती ॥ करी जुग वीच, मेरी जान करी जुग वीच, करी जुग बीचक्षमा खेती ॥ लगो हे आस सगरसेंती ॥ सती बस किया, मेरी जान सती बस किया, सती बस किया अपने मनकु ॥ सती० ॥ ॥ २ ॥ साज शिवपुरका, मेरी जान साज शिवपुरका, साज शिवपुरका आज सजीया ॥ करमसें खूब कीया कजिया ॥ मेरे शिरपति. मेरी जान मेरे शिरपति, मेरे शिरपति श्याम सूजा, नेम विन वांछु नहि दूजा ॥ अभूपण चीरें, मेरी जान आभूपण चीरे आभूपण चीरे मोहे खुचना ॥ [illegible]

घर जग जीत्या, मेरी जान जबर जग जीत्या, जबर जग जीत्या जग जमकु ॥ सती० ॥ ३ ॥ पति गिरनारे, मेरी जान पति गिरनारे, पति गिरनारे हुवा ध्यानी ॥ बात सब जुगमे ए जानो ॥ जगत जस गावत, मेरी जान जगत जस गावत, जगत जस गावत हे तेरा, सफल कारज कर द्यो मेरा ॥ जाप तेरो जपतां, मेरी जान जाप तेरो जपतां, जाप तेरो जपतां पार पावे ॥ श्रसप जिनदास ध्याख गावे ॥ मुगतिपद दीजो, मेरी जान मुगतिपद दीजो मुगतिपद दीजो प्रभु हमकु ॥ सती० ॥ ४ ॥ १७ ॥

॥ अथ श्रीनेमिनाथजीनी लावणी वीशमी ॥

॥ तुम तज कर राजुल नार, तज्या सब घर रे ॥ तज्या० ॥ मे नमु नेमके पाय, गया गिरिवर रे ॥ में प्रीत पियाकी कर कर, पल्ले लागी ॥ पल्ले० ॥ तुम त्याग चले बन सरु, हुवे वैरागी अब राजुल सखी सती, जावसें त्यागी ॥ जाव० ॥ थारे अंतर घटमे ज्योत, ग्यानकी जागी ॥ यु रोती राजुल नार, नयण भर भर रे ॥ नय० ॥ मे नमु० ॥ १ ॥ में अरज करु कर जोरु, करो मन प्रसन्न ॥ करो० ॥ मेरे शिरपर तुम शिरदार, देजो मोहे दर्शन ॥ अब सुख

सखीयनका देख, लग्यो मन तरसन ॥ लग्यो० ॥ मेरे आयो नयनमें नीर, लग्यो नित्य बरसन ॥ मेरे नेम मिलनकी आश, मिलुं किम कर रे ॥ मिलुं० ॥ से० ॥ २ ॥ में नहि कीनी तकसीर, चले क्युं रूठे ॥ चले०॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार, चार दिशि चुंटे॥ मे जो रहु घरने मांहे, जोबन सब लुंटे ॥ जोब० ॥ मे चलुं पियाके साथ, प्रीत क्युं त्रूटे ॥ मेरे नेम विना नहि और, जगतमें वर रे ॥ जग०॥ से० ॥ ३ ॥ तुम तारी राजुल नार, मुक्तिमे मेली० ॥ मु० ॥ पीछे नेम गये निर्वाण, कर्म सब ठेली ॥ सें० नित्य उगे परभात, नमुं पद पहेली ॥ न० श्रीजिनवर विन जुगमांहे, नहि कोई बेली (॥ पाठांतरे ॥) मेरे नेमविन नहि आर, जगतमे बेली ॥ युं अरज करे जिनदास, सुणो० जिनवर रे ॥ सुणो० ॥ मे ॥ ४ ॥ २० ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी एकवीशमी ॥

॥ दे गया दगा दिलदार, सुनो मेरी माई ॥ सु०- लग रही नेम दर्शनकी, सरस असनाई ॥ ए आं॥ कणी ॥ अब अजब अलोजो नेम, मेरे शिर गाजे ॥मेरे० ॥ जादवकी देखो जान, जगत सब लाजे ॥ एसो नेम नवल एक वींद, अनोखो बाजे ॥ अनो० ॥

सुर नर सब गावे गीत, गगनमें गाजे ॥ अब दोरू दोरू सब दुनिया, देखन आडे रे ॥ देख० ॥ दे० ॥ १ ॥ अब चल्या नेम तोरनकु, आनंद दिल धरकर ॥ आ० ॥ सज आये सुरगी साज, किलोला कर कर ॥ में पोयो परमानद, हरख हियो भर कर ॥ हरख० ॥ ले गयो पति नेमनाथ, मेरो चित्त हर कर ॥ सखी सुख संपती आंगनमे, आज चल आई ॥ आ० ॥ दे० ॥ २ ॥ अब इण अवसरमे सूरत, श्यामकी लागी ॥ श्या० ॥ पशुअनकी सुनी पोकार, दया दिल जागी ॥ जिन लही पर्वतकी वाट, तृष्णाकु त्यागी ॥ तृष्या० ॥ शिरमणीके शिरबिंदु, बन्यो वैरागी ॥ अब सहेस चढी राजुलकु, खमी छटकाई ॥ खमी० ॥ दे० ॥ ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें, टिके नहीं पानी ॥ टिके० ॥ जिन गुण गाया नहि जाय, अलप जिंदगनी ॥ अब कठण जीव दुर्गतिको, बन्यो मे हानी ॥ ब० ॥ जिनदास करो भवपार, दया दिल आणी ॥ अब सरण सतीके वेठ, लावणी गाई ॥ ला० ॥ दे० ॥ ४ ॥ ॥ २१ ॥

॥ श्रीआदिनाथजीनी लावणी बावीशमी ॥

॥ श्रीआदिनाथ निर्वाणी, नमु मे ध्यानी ॥ नमु० प्रभि जीव तरनके काज, बनाए बानी ॥ अब नाभि

राय कुलधारी, बडे अवतारी ॥ बडे० ॥ खुल रही ख-
लकमें खूब, केसरकी क्यारी ॥ तुम ममता मनकी
मारी, आतमा तारी ॥ आत० ॥ तज दीनी प्रीत
विषयनकी, जान कर खारी ॥ तुम करी मुक्तिपद
राणी, जगतमें जानी ॥ जग० ॥ नवि० ॥ १ ॥ जाएया
सुर नर सुखराशि, हुआ हे उदासी ॥ हु० ॥ जलगई
जबर जंजाल, जगतकी फांसी ॥ तुम जगतपति अ-
विनासी, मुक्तिके वासी ॥ मु० ॥ शिवमंदिरमें सुख
सेज, बिछाइ खासी ॥ तुम करी सफल जिंदगानी,
मेरे मन मानी ॥ मेरे० ॥ नवि० ॥ २ ॥ वडे ज्योति-
वंत जिनराज, जगतमें बाजे ॥ जगत० ॥ तेरो दरि-
सन हे सुखदायि, सुधारे काजे ॥ तेरी धुनी गगनमें
गाजे, बे सुरपति लाजे ॥ बे सु० ॥ गल गया गरब
पाखंड, कामना नाजे ॥ नाटक नाचे इंद्राणी, अधि-
क धुनि आणी ॥ अधिक० ॥ नवि० ॥ ३ ॥ तेरी म-
हिमा कहिय न जावे, पार नहि पावे ॥ पार० ॥ गंध-
र्व सुरपति सब देव, तेरे गुन गावे ॥ तेरे चरनुमें ल-
पटाइ, सरस लय लावे ॥ सरस० ॥ नर नार हियाके
मांहे, नक्ति तेरी चहावे ॥ तेरी तृष्णा सब विर-

खाणी, मुक्तिकु ठाणी ॥ मु० ॥ जवि० ॥ ४ ॥ मरु
देवी कूखका जाया, अमर पद पाया ॥ अमर० ॥
ठपन्न कुमारी नारी, मिली जस गाया ॥ दुर्गतिका
दुःख विरलाया, सफल करी काया ॥ सफल० ॥ जि
नदास निरंजन देख, सरन तेरे आया ॥ समकितकी
सहेज पीछान, मिली मोहे टाणी ॥ मिली० ॥ भ
वि जीव तरन० ॥ ५ ॥ ॥ २२ ॥

॥ अथ श्रीगणधरजीनी लावणी त्रेवीशमी ॥

॥ अब सदा नमु सरसति, तेरी कीरतकु ॥ तेरी०
॥ गणधरके लागु पाय, मागु में मतकुं ॥ तेरे मुख उ
पर सरसति, सुशोभा देती ॥ सुशोभा० ॥ मिजल
समें मोती खीरे तेरे मुखसेंती ॥ कोई विण बांधतां
रत्न, पमी रही रेती ॥ पमी० ॥ धन धन गणधरको
ग्यान, सजा गु केती ॥ धन धन ठम लागे अंग, जि
न गुणका वरसता रंग, कोइ करे वरत सहु संग, सुर
पति बहु वासव वग, नमे तेरी गतकु ॥ नमे० ॥ गण
धर० ॥ १ ॥ तुम लोक अलोक सरूप, कियो सब
करमें ॥ कियो० ॥ भव्य जीव दिया पहुचाय, मुक्ति
मंदरमें ॥ [illegible] रमें

॥ ग्यान० ॥ परु रह्या पाखंमाकी माढ, कोई विच कर्मे ॥ जिनराज करी हे साह्य, जवि जीव लिया स-लटाय, बुरु गई हे विषयकी लाय, दुर्गति दुःख दियो चुकाय, फाम्रिया खतकुं ॥ फा० ॥ गणधर० ॥ २ ॥ तुम कट्यो कालको फंद, कर्म सब चूरे ॥ क० ॥ तुम रिध सिधके जंमार, लब्धिके पूरे ॥ सव विसन विणास्यां वीर, बडे तुम सूरे ॥ वं० ॥ दीनी दुर्गतिकुं दाग, किया दुःख दूरे ॥ विषयनके बीजकुं वाले, अं-तरकी आंट सव टाले, दाय गइ हे रीसकी जाले, तें दीनी मूलसें गाल, लोजकी लतकुं ॥ लोज० ॥ गण० ॥ ३ ॥ धारे अनुजव रसकी लहेर, उठी हे जारी ॥ उठी०॥ कर्मोंको कियो कियो विनास, आतमा तारी ॥ कुलमें दीपक तुम बन्या, खलक तजी खारी ॥ खल० ॥ सुरपति सब होवे हजूर, बमें जसधारी ॥ गणधरजी ग्यानके खासे, तुम किया कर्मका नासे, चाकर हुं चरणके पासे, जिनदास करे अरदास, रखो मेरी प-तकुं ॥ रखो० ॥ गणधर० ॥ ४ ॥ ॥ २३ ॥

॥ अथ श्रीशंखेश्वरजीनी लावणी चोवीशमी ॥

॥ श्रीशंखेसर पास जिनेसर, अरज सुनो करो

महेरवानी ॥ तारक बिरुद सुनी मे आयो, तुम चरनां सरनां जानी ॥ श्री शखे० ॥ प आंकणी ॥ १ ॥ सोल सहस मुनि आदि जगत जन, तारे तुम अमृत बानी ॥ छनकु हुआ निम सुख लई सिद्ध, पाये परम गुरुजी दानी ॥ श्री शखे० ॥ २ ॥ पन्नग पावक जरतो निकास्यो, ज्ञानदेशना तुम पीछानी ॥ छनकु दरस सरस जयो सेरो, सुरपति पदवी ठहेरानी ॥ श्री शखे० ॥ ३ ॥ में आया यह कीरति सुनकें, विनति एक सुनियें ज्ञानी ॥ जव जव चरन कमलकी सेवा, देव दीजियें दिल मानी ॥ श्री शखे० ॥ ४ ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, वदन जगके सुलतानी ॥ अब तो लहेर महेर मोहि कीजें, रग सदाशिव सुखदानी ॥ श्री शखेश्वर० ॥ ५ ॥ ॥ २४ ॥

॥ अथ श्रीमगसी पारसनाथनी लावणी पचीशमी॥

॥ मुलक बीच मगसी पारसका, बाज रहा डंका ॥ मुक्तिगढ जीत लिया बंका रे ॥ मु० ॥ मुलक० ॥ प आंकणी ॥ कर्मदल बलकुं क्षय कीया रे ॥ कर० ॥ मुक्ति महेलमे केलि करे, अनुजव अमृत पीया ॥ सासता जीया, महाराज ॥ सा० ॥ कल्याणक कारज

कीया, अमरापुर पदकु लीया ॥ कमठ जसका कर गये
फंका रे ॥ कमठ ॥ मुलक० ॥ १ ॥ प्रभु पारस भज
ले भाइ रे ॥ प्रभु० ॥ भाव भरसका मेट ज्योत, तेरी
जगमे सवाई ॥ टेककुं टालो, महाराज ॥ टेक० ॥ चं-
चल चित्तसें मत चालो, गुमान गरवकुं गालो, गरवसें
धूल मली लंका रे ॥ गर० ॥ मुलक० ॥ २ ॥ मेरे शुभ
भाग्य उदय आया रे ॥ मेरे० ॥ इण पंचम आरामांहे
प्रभु, मगसी पारस पाया ॥ पापसें डरता, महाराज
॥ पाप० ॥ भव्य जीव ध्यान दिल धरतो, श्रावक सब
समरण करता, मरण दुःख मेटो मेरे अंगका रे ॥ म०
मुलक० ॥ ३ ॥ महीमा मगसीकी अब जानी रे ॥
मही० ॥ नही उघडी मेरी आंख विलोया, प्रब विना
पाणी ॥ में जिनवर जाच्या, महाराज ॥ मे जिन० ॥
जिनदास जिनंदसें राच्या, मगसी पारस हे साचा, करो
मत मनमें कोई शंका रे ॥ क० ॥ मु० ॥ ४ ॥ ॥ २५ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी छवीशमी ॥

॥ मन सुण रे तेरी सफल घडी श्रावककी, हाथसें
जावे ॥ हाथ० ॥ सूत्रकी न माने शीख, पीछें पछतावे
॥ ए आंकणी ॥ लंपटजनको डर राख, प्राण मत लूंटे

॥ प्राण० ॥ तु कुगुरुसें करे हेत, सुगुरुसें रूठे ॥ तारी जोबनीयांकी ठोस, ठिनक नहि तूटे ॥ ठिनक० ॥ इंद्रियसु लगाया तार, कहो केम छूटे ॥ तारे हीये वधी विषयेछा, नहीं कुमखावे ॥ नहीं ॥ सूत्रकी० ॥ १ ॥ तें सुणी शीख सूतरकी, हिये नहि आणी ॥ हिये०॥ तारो खरो खजानो ग्वाय, कुगुरुकी वाणी ॥ तोरी कुमति कछेलण नार, खियो लोये ताणी ॥ खियो० ॥ दुर्गतिकी विष्ठाइ सेज, बनी पटराणी ॥ तु सुतो कुमतिकी सेज, पार नहीं पावे ॥ पार० ॥ सू० ॥ २ ॥ तेरा गफलतमें दिन गया, गर्व तें राख्यो ॥ गर्व० ॥ कीधी जिनवाणी दूर, व्यसन रस चाख्यो ॥ तें ग्यान गांठको खोयो, रतन क्यु नाख्यो ॥ रतन० ॥ सत वचन दीयो तें छोरू, जूठ मुख जांख्यो ॥ एसो वार वार न रजब हाथ नहि आवे ॥ हाथ० ॥ सूत्र० ॥ ३ ॥ पो साक पापकी पेर, मानतो खूबी ॥ मान० ॥ तारे मद मोसीकी माख, सीसपर खूबी ॥ तारे हराम हुरतमां हसी, हजूरी ठबी ॥ हजू० ॥ शिर बांध्यो मिथ्या मोरू, बात तेरी कुबी ॥ तारे हिंसा दियाको हार, ऊर क्युं खावे ॥ ऊर० ॥ सूत्र० ॥ ४ ॥ सुकृत संपत्त

सुपनमें, रति नहीं सूजे ॥ रति० ॥ मेरो कोण गति को जीव, दाज कुण बूझे ॥ मेरे घर खूटे दुर्गति, काम नहीं दूजे ॥ काम० ॥ अलप दुनिया महोत्रत मुजेकुं पूजे ॥ जिनदास कपटकी खाण, मान नहीं मावे ॥ मान० ॥ सूत्र० ॥ ५ ॥ ॥ २६ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी सत्यावीशमी ॥

सिद्ध सरूपी सदा पद तेरो, तुं मूरख कां नूले रे ॥ व्याज नफो पल्ल जहिं बांध्यो, खामी लगाई मूले रे ॥ ए आंकणी ॥ नरक निगोद कुमतका शिरपर, आप बन्यो हे दूले रे ॥ सिद्ध० ॥१॥ सब संपतका सुख देख कर, चेतन मनमे फूले रे ॥ जिनदास ते दुनियामांहे, जन्म लियो सो धूले रे॥सिद्ध० ॥ २ ॥ २७ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी अठ्यावीशमी ॥

॥ आप समजका घर नहीं पाया, दूजाकु क्या समजावे ॥ बाका फिरे जिनदास जगतमे, हियो हाथमे नहीं आवे ॥ ए आंकणी ॥ दरस सवाद चाहनकी चित्तमे, चानक अधिकी आय लगे ॥ इन्द्रीके परवशमें पमियो, ग्यानकला कोहो कैसें जगे ॥ तृष्णाने जग लूट लियो हे, कपट करी परधनकु ठगे ॥

खाय खाय छोड़ी मास पधार्यो, प्राणी किसविध चले पगें ॥ विषय विपतकी करे चुथणी, मर्यादा चित्त नहीं लावे ॥ आ० ॥ १ ॥ अपने अवगुनकु नहीं देखे, दूजाका अवगुन भांखे ॥ हिंसादीमें हूंठे हजूरी, दयना दूर दिलसे नाखे ॥ गुणवंतका गुण लोपे मेरो मन, अवगुणके रसकु चाखे ॥ तिनुंही प्रणमे रा गधरामें, सरणो जिनवर किम राखे ॥ ठग फांसीगर चोर अन्यायी, धन मीसें इनकु ध्यावे ॥ आ० ॥ २ ॥ अवगुनकी मेरी खान आतमा, अजान होय सो मोहे पूजे ॥ नहि गाममें रुख अवको, परंरु अव सरिखो सुजे॥पारख नहि हे हिये ग्यानकी, गुन अवगुनकु क्युं बूजे ॥ गामर देख कहे मुज घरमें, कामधेनु इ तनी दूजे ॥ ऐसी मेरी अवनीत आतमा, अवगुन किम गाया जावे ॥ आप० ॥ ३ ॥ क्रोध मान मा यामें मातो, लोभमांहे लपट्यो रहेतो ॥ गरव गु मानी गमको गरजी, पीरु पारकी नहि सेतो ॥ भ क्ति नहीं गुरु देव धर्मकी, कठण वचन मुखसें केतो ॥ अंतर आंट नखुले हियाकी, पुठ परमपदकु देतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको ठग खावे ॥आप० ॥ ४ ॥ ॥ २७ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी उंगणत्रीशमी ॥

॥ वीत गयो नरभवको अवसर, नहि सुकृतको काज करयो ॥ मनको मेल मिट्यो नहि मूरख, उपर साधको स्वांग धरयो ॥ अल्प उमर उलख ले अपनी, निगोदमें क्युं नीम धरे ॥ कठ नहि याको जीव हमारो, पापकर्म कर पिंड भरे ॥ दया दान तप जप समरनकुं, दिलसेंती सब दूर करे ॥ काम क्रोध कुमतिमें काल्लो, पाप विना पल भर न सरे ॥ धोखा आय लगा अब सिर पर, दुर्गतिका दुःखसें न डरे ॥ अथागपूर समुदरमें पडियो, भवजलसें कहो कैसे तरे ॥ जिव्याके परवसमें पडियो, सरस परायो माल चख्यो ॥ मनको मेल मिट्यो नही मूरख, उपर साधको स्वांग धरयो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पेट पोषता फरे पिंडमांही, हाड मांस वधियो लोही ॥ मातपिता सब कुटुंब कबीलो, काम नहि आवे कोइ ॥ मुखपर मीठी मनमें चीठी, स्वारथकी दुनियां जोई ॥ पचपच मरे इनोंके कारण, मानव जन्म दीनो खोई ॥ मे मतिहीन बुद्धिको विणठो, इनसेंती मनसा मोई ॥ सरयो न सीज्यो काम रती भर, बैठ रह्यो मनमें रोई

॥ कुगुरुको रंग लाग रह्यो हे, जेनधर्म दिलमें न जरयो ॥ मनको० ॥ २ ॥ जेम्व पेर मनमांहे मगन मेरे, प फिया पोयारे पासा ॥ अनमतकों कोइ विरलो परखे, कचन नहि पीतल खासा ॥ कनक कामिनीको मन मांहे, लग रह्यो हे अधिकी आसा ॥ मुख उपर लो कोंको कहे में, महाब्रगचांहे किया वासा ॥ में किरिया पालु मुनिवरको, दोप नहि लागे माना ॥ कीयो क पट ए पेट भराणे, रोटीका लग रह्या सांना ॥ ऐसा कपट म करयो आकरो, रति नहीं परजवसें नयो ॥ मनको० ॥ ३ ॥ अन्न वस्त्रकु लाय पेर कर, अपने त नको पोप कीयो ॥ पहले बांध्या पाप प्राणीया, नहीं सुजसको लाज लियो ॥ जक्ति करी नहीं सात खे त्रकी, नहीं निर्ग्रंथकु दान दीयो ॥ निंदा कीनी जेन धर्मकी, सात विसनको जेर पीयो ॥ साधु श्रावक संघर कर कर, निर्मल करसा आप हियो ॥ जिन दास आण तृष्णाकी लागो, कोण गिनसम मेरो जी यो ॥ आण नहीं मानी अरिहंतकी में, आगमसेती अलग करयो ॥ मन० ॥ ४ ॥ ॥ २९ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी त्रीशमी ॥

॥ ओगुण कब लग कहुं दिल तेरा ॥ चेतन जबर जंजीर जड्यो, तन मन मोठा मेरो ॥ गुरु गुणवंतका गुण गावो ॥ तज कुगुरको संग, सुलट सुमतिके घर आवो ॥ प्राणी परगुण क्युं नहि गावो ॥ तुं उंगुणकी खाण जीव मन, से मत पहोंचावो ॥ मिटे जब दुर्गतिका फेरा ॥ चेतन० ॥ १ ॥ जीव दुर्गतिमें रुलबधियो ॥ जगत वीच नर नीच विसनके, वीच आइ पडियो ॥ शीख सूत्रोंकी तें ठेली ॥ कुदेवताकुं सेवत रूगधी, समकितकी मेली ॥ दिया जब नरकबीच डेरा ॥ चेतन० ॥ २ ॥ सेज सुमतिकी ते छोडी, अंतर्गतकी प्रीत जाय कर, कुमतिसे जोडी ॥ करी नहि जिनवरकी भक्ति ॥ परगतिका परवशसे दब गई, चेतनकी सक्ति ॥ करम मुझ घाल रह्या घेरा ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ जिनेंद्र देव सदा भज रे ॥ मोह करमकी खोल पलकमें, आलसकी सेज तज रे ॥ जोबन धन देख देख फूले ॥ बोध बीज निज चित्तथी जिन, वाणी क्युं भूले ॥ कहे जिनेंदास सुणो बहेरा ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ ॥ ३० ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी एकत्रीशमी ॥

॥ गई सब तेरी शीघ्र समता, लपट रही नार गले ममता ॥ ए आंकणी ॥ नही समताकी करी करणी, कुमति कुबजाकु क्यु परणी ॥ करो करतूत जगत म रणी समज देख दुगतिकी हरणी ॥ जीय तन मनकु नहि दमता ॥ गई० ॥ १ ॥ करी सुख सहजमांहे लूवी, हाथ जोमी अबला कुवी ॥ दोरुके नार गले लुवी, वात तेरी जगमे सब डुवी ॥ रति दुःख तनमे नहीं खमता ॥ गइ० ॥ २ ॥ शीख सजनकी नहीं लागी, विषय अंतर जाखम जागी ॥ स्वर्ग सुखसेंती गयो नागी, हुठ दुर्गतिमतको रागी ॥ भोगकी नात तुझे गमता ॥ गइ० ॥ ३ ॥ पकि जगजाल गले पांसी, गया उनसें कहो कुण नाती ॥ कहे जिनदास वात खासी, सुष्टति भवि जनके मन भासी ॥ जोव जि नराज विना भमता ॥ गइ० ॥ ४ ॥ ॥ ३१ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी बत्रशमी ॥

॥ सदा नमुं जिनराज चरनकू, कीयो जगसमे उ द्दार ॥ सफल कर दियो मेरो अवतार ॥ कमी उंघ मेरी अनंतकालकी, हुठ जैनको जान ॥ जिन तेरा

वचन वस्या मेरे कान ॥सत्यवादी मुख सदा सुहावे, चढ्यो रंग विन पान ॥ वस्यो अनुभव पद हिरदे आन ॥ तन मनसुं सब त्याग दीयो, अधरस अनमतको ध्यान ॥ हुवो इणमांहे घणो हेरान ॥ कुगुरु दलकुं दिया सब मार ॥ सदा० ॥१॥ "दोहा ॥ वीतराग रवि ऊगीयो, (अरे) मोय हिरदेमे जाण ॥ अंधकार अलगो रह्यो, सो निरख लीयो निज ग्यान ॥ १ ॥" निशदिन फरके नयन हमारा, भइ दरसनकी आस ॥ हियो सब रह्यो, चरनके पास ॥ निपट हुउं लयलीन नाममें, विसरुं नहीं एक सास, लगी थुं मनमें ऐसी प्यास ॥ नाटक नाचे करे कीरतन, रचे को सनको रास ॥ हियाकी अकल गइ सब नास ॥ भूलमें पड्यो जगत संसार ॥ सदा० ॥ २ ॥ " दोहा ॥ जगत पड्यो जंजालमें (अरे) जैनधर्म दियो छोरु ॥ कुगुरुका उपदेशमें, तें कीनी मायाफोरु ॥ २ ॥" उजल रह्या सब जीव जगतका, चले कुगुरुकी चाल ॥ सीसपर ऊपट रह्यो तेरे काल ॥ मुऊ रुचती निज छवी जिनंदकी, तज्यो जगत जंजाल, वस्यो जिननाम हीयामें लाल ॥ वल्लभ लागे चरण हमारा, एही रगो है

ख्याल, करोगे मेरी प्रभु प्रतिपाल ॥ उतारो जिम तिम मोहे भवपार ॥ सदा० ॥ ३ ॥ "दोहा ॥ देव जगतका जोइया, (अरे) नहीं सरनको ठाम ॥ जिनराज आज आनंदको, म पायो विसराम ॥ ३ ॥" ठेर न सूजे ओरु दोरु, तुम चरनोमें आयो ॥ ग्यानको भेद भलो पायो ॥ अधिक हुर्ड आनद, आज मेरे जिन घर जस गायो, वचन तेरो रोम रोम ठायो ॥ खुस वखतीमें मोज करे मन, अनुजवर्स न्हायो ॥ कुगुरु तजी वीतराग ध्यायो ॥ कियो जिनादास जिणंद फितार ॥ सदा० ॥ ४ ॥ " दोहा ॥ पहिज मोक्ष दीजीयें, (अरे) जैनधर्मकी ज्योत ॥ ठेर भयो रुचत नहीं, में कुगुरु जोया वहोत ॥ ४ ॥ ॥ ३२ ॥

॥ अथ श्रीशंखेश्वरजीनी लावणी तेत्रीशमी ॥

कृपा करो शंखेसर साहेब, गुणधामी अंतरजामी ॥ संखेश्वर पुरमांहे बिराजे, ठाजे तखतपर शिवगामी ॥ कृपा० ॥ १ ॥ परमज्योति परमातम पूरण, पूर्णानंदमयी स्वामी ॥ प्रगट प्रजाकर गुणमणि आगर, जग जनना ठो विश्रामी ॥ कृपा० ॥ २ ॥ महानद पददायक नायक, परम निरंजन घननामी ॥ तु

अविनाशी सहज विलासी, जीतकासी ध्रुव पद पामी ॥ कृपा० ॥ ३ ॥ काल अनादि अनंते साहिब, तुम सूरति पुण्यें पामी ॥ अब हो तुम अमृतपद सेवा, रंग कहे निज शिर नामी ॥ कृपा० ॥ ४ ॥ ॥ ३३ ॥

॥ अथ श्रीगणधरजीनी लावणी चोत्रीशमी ॥

॥ वंदत हे कोई समेतशिखरकुं, दुरगतकी दूर नाशी रे ॥ कोइ जवोंका करम कटत हे, होय शिव-पुरके वासी रे ॥ वंद० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म जगनका, मे जाण्या सब राशी रे ॥ वीस जिणंद मुगतिपद पाया काटी कर्मकी फांशी रे ॥ वंद० ॥ २ ॥ ए तीर्थ जे जात्र करी जेटे, उनको समकित खासी रे ॥ विकन वन्यो जिनदास जगतमें, खूब कराई हांसी रे ॥ वंद० ॥ ३ ॥ ॥ ३४ ॥

॥ अथ श्रीकेशरीयाजीनी लावणी पांत्रीशमी ॥

॥ सुणजो वातां राव सदाशिव, मत चरू जानां धूलेवा ॥ गढपति उनका वका अटंका, मत छेमो तुमें उन देवा ॥ ए आंकणी ॥ सक्तावत चूंडावत बोले, अमही नोकर उनहीका ॥ हिंदुपति वाकु हाथ जोडे, तीन जुवन शिर हे टीका॥सु०॥१॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल

सवेईी, सुर नर माकु ध्यावत हे ॥ इन्द्र चन्द्र मुनि द
र्शन आवे, मनकी मोजां पावत हे ॥ सु० ॥२ ॥ गया
राज धनहीकु आपे निर्धनियाकु धन देवे ॥ खाजां
खिधावे सुंदर सबका, सदा सुखी जे प्रभु सेवे ॥ सु०
॥ ३ ॥ तारे फदाज समुद्रमें जह, रोग निवारे जबद
बका ॥ चूप भुजंगम हरि करी नदीयां, चोरन बंधन
अरि दलका ॥सु०॥ ॥ ४ ॥ धों धों धों धों धोंसा बाजे,
दसो दिसामें हे ऊगा ॥ जाद तातीया नहीं जसाई,
मत घतलावो गढ बका ॥ सु० ॥ ५॥ रायाजीके ठ
मरावजीकां, मानतो नहीं वे बातां ॥ थांकी कीधी
थेंहिज पाये, में नहीं, आबु थां सातां ॥ सु० ॥ ६ ॥
मूछ मरोडे चडे अभिमाने, जहेर भरयो हे नजरमें ॥
रूपचंदासका साहेय सचा, देख तमासा फजरमें ॥
सु० ॥ ७ ॥ मयाराम सुत जयो मूलचंद, चडे सीतां
घर तुम देषा ॥ फोज थिखर गइ घरघर घोमा,
लक्षा रखो तुम देषा ॥ सु० ॥ ८ ॥ ॥ ३५ ॥
॥ अथ श्रीगोमी पारसनाथनी लावणी छत्रीशमी ॥
॥ जगत चक्रिकज महेर अनंत गुण, तेज तपत
हे श्रीजिनको ॥ प्रगट प्रबल प्रताप परम गुण, सु

णतां सुख दिये तन मनको ॥ नील कमल दल नव
कर दीपे, देह हे गुणगणके वृंदा ॥ नमो निरंजन फ-
णिपति सेवित. पास गोमीचा सुखकंदा ॥ १ ॥ ए
आंकणी ॥ मोह करी कुंजस्थल नेदन कंठ रव प्रभु
तुं सच्चा ॥ हरि हर इंद्र विरचि देव गण, कर्म कीचमें
परू कच्चा ॥ तुज सम ऊर ठोर कुण जगमें, देव इ-
न्सरो जे वंदा ॥ नमो० ॥ ॥२ ॥ तुं अकलंक सरूपी अ-
रूपी, परमानंद पद तुं दायी ॥ तुं शंकर ब्रह्मा जगदी-
श्वर, वीतराग तुं निर्मायी, अनुपम रूप देख तुज
रीज्या, सुर नर नारीके वृंदा ॥ नमो० ॥ ३ ॥ जल
हल ज्वाल वलत चिहुं कोरे, धूम घटागगनें चाली ॥
जलत काठ कोटर सर सर्पन, रूरपत मरण दिशा
आली ॥ जगत सरण दुःख हरण प्रबल प्रभु, कहत
कमठ सुण जोगिंदा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ तप जप करत
धरत नहीं करुणा, तासें दुःख दोहंग पावे ॥ कहत
कमठ तव अरुण नयन करी, जोग वात तुमकुं नावे
॥ पावक अंतर जलत नागकुं, सेवक हाथे निकसंदा ॥
न० ॥ ५ ॥ सुणी नवकार नाग जिन मुखसें, धरणींद्र
७ पदवी पावे ॥ चंद कीरण उज्ज्वल जस पसरित, पास

प्रभु निज घर आवे ॥ तजी संसार चरण प्रभु लीनो, ध्यान धरत मन आनंदा ॥ नमो० ॥ ६ ॥ ध्यान धरत प्रभु देखी कमठ सुर, आय करी परिसह जारी ॥ गगन गाग चिहु ठेर घनाघन, धीर घटा ठसटी धारी ॥ चचल चपला होत चिहु ठेर, चचल चपलाके वृंदा ॥ नमो० ॥ ७ ॥ कटट काटका होत गगनमें, गरुड गडरु चिहु दिशि गाजे ॥ फरर फरर घन पवन फुरत हे, तरुवर वरु मरु भांजे ॥ ठनन ठनन पावस जल लागी, मूशल धारे वरसंदा ॥ नमो० ॥ ८ ॥ खलल खलल जगती जल पसरत, ठिनजर नाक तोडे आला ॥ मेरु परें प्रभु धीर रही तव, ध्यानरसें रहे मतवाला ॥ ततक्षण धरणरायको आसन, कपटी ध्यान ज्यु चालदा ॥ नमो० ॥ ए ॥ ततक्षण धरणराय अरु धरणी, आय नमत जिनकु रगें ॥ शिरपर छत्र धरे फणिगणको, शेषनाग कोमल अंगें ॥ हांस्यो कमठ सरण करी प्रभुको, गयो निज स्थानक हर्षदा ॥ नमो० ॥ १० ॥ नाचत धरणरायकी ललना ठमक ठमक पग ठमकती ॥ ठमक ठमक वींछुआ ठमकावत, घम घम घुघरी घमकती ॥ ताल तान लय

मान प्रकारें, नव नवछंदें नाचंदा ॥ नमो० ॥ ११ ॥
धप मप धप मप मादल धमके, करझ करझ करताल
करे ॥ रण रण रणके रण रणकंती, झल्लरी नाद रसें
पसरे ॥ दरूरु डुक्करां वाजे, भुंगल भेरीना वृंदा
नमो० ॥१२ ॥ वाजे श्रीमंडल सरणाई, वीणा ताल कं-
साल ठटा ॥ टुक टुक मिलत मिलत एक एकसें,
जोर बनी तब रंग घटा ॥ प्रभु पण ज्ञान ध्यान लय-
लीना, मोडे कर्म अरिवृंदा ॥ नमो० ॥ १३ ॥ केवल-
ज्ञान लही प्रभु निर्मल, स्थापन चउविह संघ करे ॥
चरण कमल सुररचित कमल शिर, धरत धरणि जिन
तिमिर हरे ॥ शत सम आयु करी प्रभु पूरण, सिद्ध
वधू कर पकरंदा ॥ नमो० ॥ १४ ॥ अजर अमर अ-
विनाशी निरंजन, सिद्ध बुद्ध समरो रंगें ॥ परम महो-
दय परमातम पद, लहियें जिन सेवन संगें ॥ रोग
सोग दोहग दुःख जावे, पावे सोहग सुखकंदा ॥
नमो० ॥ १५ ॥ अरि करी जलण जलोदर जल भय,
नाम जप्यां सहु दूर टले ॥ प्रभु पदपद्म सेवनसे क-
मला, रंग रसाला आय मिले ॥ रूपविजय कहे सुनत
लावनी, पामे चित्त परमानंदा ॥ नमो० ॥ १६ ॥ ३६ ॥

॥ अथ श्रीनेमीश्वर भगवाननी लावणी लाख्त्रीशमी ॥

॥ तुम समुद्रविजयका तन्न, अरज सुन लीजें ॥ अरज० ॥ मेरी इतनीसी एक चाह, दरस मोहे दीजें ॥ ए आंकणी ॥ तुम वीतराग शुभ ध्यान, बडे तुम सूर ॥ बडे० ॥ तुम रिद्ध सिद्धके भमार, लब्धिके पूर ॥ तुम सात व्यसनका संग, किया सब दूरें ॥ किया सब० ॥ तुम पहोंते मुक्ति महेल बिच, ज्ञानके पूरे ॥ में हु लगी कगाल, कृपा मोहे कीजे ॥ कृपा० ॥ मेरी इत० ॥ १ ॥ में घमी घमी महाराज, भजन नहीं चुछु ॥ भजन० ॥ में पम्या विषम भवकूप, कुगुरु संग फूलुं ॥ में हुठे दुखी जिनराज, तेरेसु बोलु ॥ तेरे० ॥ अब भवसागरथी तार, भरम में खोलु ॥ अब सुनो अरज महाराज, जगत जस लीजें ॥ जगत० ॥ मेरी० ॥ २ ॥ में आय पमा जिनराज सरण अब तेरे ॥ सरण० ॥ तोरे दरसनकी अभिलाख, लगी रही मेरे ॥ में जम्यो अनतो काल, मोहके पूरें ॥ मोह० ॥ अब सरने लीजें मोक्, करन दुःख दूरें ॥ अब आठ कर्मके मांहे, मेरो तन लीजे ॥ मेरो० ॥ मेरी इत० ॥३॥ में हुओ बहुत धनवंत, करमके व

मावे ॥ करम० ॥ अब सुद्ध असुद्ध विचार, ध्यान नहीं पोवे ॥ अब चेतन जीव जिनराज, धर्ममें आयो ॥ धर्म० ॥ अब आठ कर्मके मांहे, सुगति फल पायो ॥ तुम सुमुद्रविजयका तन्न, अरज सुन लीजें ॥ अरज० ॥ मेरी इल० ॥ ४ ॥ ॥ ३७ ॥

॥ लावणी काव्यरूपे आरत्रीशमी ॥

॥ भुजंगी छंद ॥ आनंद वरते मंगल प्रभु नाम लीला, फरसो इष्ट धरम करो करम ढीला॥आराधा अचल देव त्रैलोक्य नाथं, अरिष्टनेमि पद्म प्रणम्यं प्रभातं ॥ १ ॥ महानिष्ट अनादि करम वीज वाल्यो, अतिहि वजर सील विषय भाव टाल्यो ॥ विकट विरत धारी शीलरंग रातं, अरिष्टनेमि० ॥ २ ॥ वल्लभ इष्ट लीधो परम ज्योति धामं, तुं विमलं बिराजे अचल सिद्धनामं, ॥ केवलज्ञानें सदा मगन मातं ॥ अरिष्टनेमि० ॥ ३ ॥ सही वेदना में सूक्ष्म निगोदं, कियो पाप परिचय विषयसुं प्रमोदं ॥ इणविध में भुगति अनंत असातं ॥ अरिष्टनेमि० ॥ ४ ॥ जिनेश्वर बिराजे देह दीपमानं, परम तेज प्रभा अखंड वरत ध्यानं ॥ निर्मल लह्यो कुल उत्तम जाकी ज्योतं ॥ अरिष्टनेमि० ॥ ५ ॥ अमरापुर

पहोंसा माया जाल मूस्यो, घूज्यो हुं नरकमें तत्र पाकि चूस्यो ॥ अदय सुख लीया सें करी कर्म घात ॥ अरिष्ट नेमि० ॥ ६ ॥ अनंत बल उपायो तज्यो जगत सारो अल्प गुण कह्या में प्रभु मोहे तारो ॥ जिनदास विनवे तुहि माय तात ॥ अरिष्टनेमि० ॥ ७ ॥ ॥ ३० ॥

॥ लावणी काव्यरूपे ओगणचालीशमी ॥

॥ भुजगी छंद ॥ दुःख दुष्ट भुगता हुयो नरकवासी, चिहुं दिस फिरयो गले गेरि फांसी ॥ कियो कठ छेदन हीये आप छायो, परम जिनधर्म बिन ऐसा दुःख पायो ॥ १ ॥ पापी नरकमें खुली सेज सोय, सब्बलही हुये शिश शुलीमांहे प्रोयो ॥ पड्यो जमके परवश कुंभीमें पचायो ॥ परम० ॥ २ ॥ कुगुरुके कलेजेसु ले जाय खटकी, जबर जंजीर करमने नरमांहे पटकी ॥ ओ पखीने मस्तक सब तोड खायो ॥ परम० ॥ ३ ॥ बर छीसु छेदे घाणीमांहे पीले, काढे देव नेत्र वींतु लगाली कीले ॥ महा लाख बजसू मुके सेझ लगायो ॥ परम० ॥४॥ नरकमें मेरो अंग करवतसु फाड्यो, विकट नदी वेतरणीमांहेज मने दाड्यो ॥ छक घडे सामली तले मुक घेठायो ॥ परम० ॥५॥ क्या खिलावे गोलो लाख

मुखमें, जुंजे जांकमांहे पड्यो हुं महा दुःखमें ॥ फरस लई छोले जकमा दारूमें जकायो ॥ परम० ॥ ६ ॥ माखी दील चूटे सरप नीक खावे, ए जम छंदे पग तरुवो लाल पावे ॥ अग्निमय वृक्षसु बंधो लटकायो, ॥ परम० ॥ ७ ॥ जाली में पकमी सूवरने विणास्यो, शोले रोग उपजाइ रगत कोल वास्यो ॥ पिंम प्रोवे करमवस तनसुं विधायो ॥ परम० ॥ ८ ॥ करायो स्नान कुंम तेलें उकाल्यो, विणास्यो हे सिहने दिलें घात्र घाल्यो, महाखार जखमो उपर बुर बुरायो ॥ परम० ॥ ए ॥ सह्या वार अनंतो सो दुःख अब में जान्यो, विकट वेदना दुःख अल्प में वखाण्यो ॥ अरिहंतके सरणे जिनदास आयो ॥ परम० ॥ १० ॥ ॥ ३ए ॥

॥ लावणी काव्यरूपे चालीशमी ॥

॥ भुजंगी छंद ॥ ब्रह्मपदवी जीत हुवा नेख धारी, मुगति पंथकी हे सब रीत न्यारी ॥ अगनि होम करता जारो देत घीको, दयामूल धर्मों विना काम फीको ॥१॥ अनेक नेख जगतमें वन्यो हे वजीतो, श्री जिनधर्म विना जन्म जाय रीतो ॥ हिरदे प्रकाश नयो हे कुमतिको ॥ दयामूल० ॥ २ ॥ परनव संघाती दया दान

मेटे, कुदेव कुगुरुका चरण जाय मेटे ॥ करति न पावे धरम मानि नीको ॥ दयामूल० ॥ ३ ॥ जुवारा वावे जहाँ अखरू ज्योत घाले, दुर्गतिकी नीसानी गर्वकु न घाले ॥ गगामे न्हायो दियो शीश टीको ॥ दयामूल० ॥ ४ ॥ जगतरामकीकु सती जाणी पूजे, जगत खेती करतो घरे जप डूजे ॥ जगत नाम जगतमें धरावे जती को॥दयामूल०॥५॥धन्य संत जगतमे कुमति डूरवर्जी॥ नाती ओर गोती ए कुटुंब आप गरजी ॥ जिनदास कहे यु कोई न किसीको ॥ दयामूल० ॥ ६ ॥ ४० ॥

॥ लावणी काव्यरूपे एकतालीशमी ॥

भुजगी छद ॥ कुजाप जपतां घणो काल खोयो, मोहो करमकी निंदे अनादिशु सोयो ॥ हे नीम नव कार रत्न जैसो मोती, विना जैन धर्में सर्व जकि थोथी ॥१॥ कुदेव देखी पूजे भूल्यो भरमें, मुगति पंथ पावे जबर बांधे कर्मे ॥ जिस पुरुषकु हे दुर्लभ ब्रह्म ज्योति ॥ विना जैन धर्मे० ॥२॥ ब्रह्म नाम धारी कहे ग्यान मोमें,छहो कायके जीव अगनमांहे होमे ॥ सीजे नरक जाल थोथी पेर धोती ॥ विना जैन धर्में० ॥ ॥ ३ ॥ धरे भरणो घर घर करे नरसु दगा, भस्म तन

लपेटी फिरे जगमें नगा ॥ धरी ज्ञेख ज्ञगवो ज्ञएयो ब्रोत पोथी ॥ विना जैन धर्मं० ॥ ४ ॥ ४१ ॥

॥ अथ श्रीनेमजीनी लावणी बहेंतालीशमी ॥

नेमनाथ जिनवरको बदन मुख, निरखुं कैसे री ॥ नेमनाथ ज्ञगवंत बनबासी, सिवरमणीके रागी ॥ सुमताज्ञाव धरचो अंतर्गत, राजुल त्रिय त्यागी ॥ अकेली बनमें कैसेरी ॥ ने० ॥ १ ॥ जल बिन मीन छिन होय जावे तिम, राजुल दुःख पावे ॥ अंतर आस लगी अब ऐसी, नेमनाथ नहीं आवे ॥ मुजे कब दरसन देसे री, कैसे री ॥ नेम० ॥ २ ॥ सरोवरके तट खडे नगन होय, ममता मनकी मूकी ॥ सीत ताप वेदन बहु वेदे, कंचनसी देह सूकी ॥ परिसह ज्ञारी सहेसे री ॥ नेम० ॥ ३ ॥ बिन अन्नपाणी बिन बिकारी, बिन बसतर तपधारी ॥ विन आधार निरंजन निर्मल, नेमनाथ गत न्यारी ॥ मुगतिपद वेगां लेसे री ॥ नेम० ॥ ४ ॥ कर्म ज्ञर्म तज केवल लीनो, सुख संपतके दरिया ॥ समवसरणके बीच बिराजे, अनंत ज्ञानगुणें ज्ञरीया ॥ सिंहासन उपर बेसे री ॥ नेम० ॥ ५ ॥ नेम सती मुक्ति पद लीनो, हुवां करमसे रीता ॥

दुगतिका दु ख पछोत सहेता, जिनदास पहु पीडीता ॥ तुमारे सरणे रेहे री ॥ नेमनाय० ॥ ६ ॥ ॥ ४२ ॥

॥अथ श्रीथूलिभद्रजीनी लावणी त्रैंतालीशमी॥

॥ सुणो सखीरी रग महेलमे, में फिरती थी दी वानी ॥ मेरा प्रीतम कोइ मुजे मिलावे, धरी पलक दुःख कट जावे ॥ सुणो सखी री मेरा दरद हे, कुण पथिसें दूर होता ॥ मेरा यारकी छवी दिखावे, ऐसे ज्ञानी कुण आवे ॥ सु० ॥ १ ॥ महेलके उपर चम कर देखु, दुरबिनमें दुनियां सारी ॥ दुनियां सारी हो त हजूरे, नाथको रूप नहीं पावे ॥ घरमें फिरती आंसु ऊरती, खान पण मे नहीं खाती ॥ घाव लगा सो घायल जाने, आलम सारी फटकावे ॥ सु० ॥ २ ॥ छतीयासेंती मेरे पीठ नहीं, दूर होता गोखमे होती ॥ गोखमे होती फिर फिर जोती, घरमे जाकर फिर रोती ॥ धार बरस लगे खेल खेलाई, ॥ वालमें गोरी भीगोती ॥ भागा बिहूणा पथमें चलसे दुनियां चांपत पांऊ मोती ॥ सु० ॥ ३ ॥ मेरा लायन जोग लेइ कर, घर घर फिरते थूलिभद्रा ॥ थूलिभद्रकी बात सुणसे छतीयां फाटत हे मेरी ॥ दु लभर सारी रेन गइ पण,

सोवन खाटे नहीं सोती ॥ चोमासा पर नाथ न आते, तो मरणां हे एक फेरी ॥ सु० ॥ ४ ॥ जाडु करणेवालेकुं कोई, बोलावे नथको मोती ॥ नथको मोती लाख सवाको, में कुरबान करा देती ॥ मोहनीमंत्रे पियकुं मिलावे, लेइ बलैया पाऊं परती ॥ श्रीशुनवीर कहे सुण सजनां, वेधक बात कहुं केती ॥ सु० ॥ ५ ॥ ४३ ॥

अथ श्रीआदिनाथजीनीलावणी चुम्मालीशमी

॥ मेरे दिलके महेरम तुंही, श्रीनाजिनंदन जगवान ॥ तेरे चरणोसे जलजा प्राण ॥ ए आंकणी ॥ कैलास पर्वत पर मंदिर, जिहां प्रजुजी राजे ॥ देव डुंडुन्नि गयणें गाजे ॥ सिद्धखेत्र शेत्रुंजो स्वामी, आजूषण ठाजे ॥ ज्योतिसें चंद्र सूर्य लाजे "॥ दोहा ॥ रत्नमांहे हे चिंतामणि, ज्ञानमे हे केवलज्ञान ॥ सिद्धगिरि तिम तीर्थमें, अवर न एह समान ॥" जलांजी अवर० ॥ आण एही जुगत जिनराज प्रगटी आपो सेवक सुखथान ॥ तेरे चरणोसें जलजा० ॥ १ ॥ अष्टापद श्री आदि जिनेसर, शिवरमणी ठाया ॥ दर्शन तुम इंद्रादिक पाया ॥ सुर नर नारी तेरे दरसनसें, केवल उपजाया, मुनिजन ज्ञान उदय पाया "॥दोहा॥

मुक्ति तपे पंथे चढे, पामी केवलज्ञान ॥ सिद्ध अनंत आगे हुवा, करत शत्रुंजय ध्यान ॥" जसांजी करत० ॥ जुगलाचारी तेरे दरसनसें, गये गये निर्वान ॥ तेरे० ॥ २ ॥ मात मारुदेवा कुखें, अवतार रत्नधारी ॥ चक्केसरी के हे करतें, ए जय जयकारी ॥ धुलेव नगरमें प्रगट प्रभुजी, मोहा संसारी ॥ गले बिच मुक्ताफल हारी"॥दोहा॥पांच कोड मुनिराजसें, भरत लहे शिव वास ॥ अजरामर अज जे हुवे, केवलज्ञान विलास ॥" जसांजी केवल० ॥ ब्राह्मी सुंदरी बाहुबल जिनकुं, दीया रे केवलज्ञान ॥ तेरे० ॥३॥ जगत बीच विस वास तेरो, हे महा तेज गुणवंत ॥ प्रभु तुम अरिग जण अरिहंत ॥ क्रोध मान मद लोभ करो प्रभुजी, दूर करो रे एकांत ॥ तेरा गुण गाऊं एक मन चित्त ॥ "दोहा ॥ सुरगिरि अष्टापद गिरि, गिरनार आबू तेम ॥ समेतशिखर ए पंचकुं, वंदूं वंदू भरी प्रेम ॥" जसांजी वंदू० ॥ जिनदास प्रभुचरणों तोरे, थो दरिसण भग वान ॥ तेरे० ॥ ४ ॥ ॥ ४४ ॥

॥ अथ श्रीकेशरीयाजीनी लावणी पिस्तालीशमी ॥

॥ रिषभ देव तु बडा देव हे, देखनकी गत हे न्यारी

॥ कालाजीकी बनी ज्योति हे, अंगे केसर अति प्यारी ॥ ए आंकणी ॥ आगे पीछें तोरा कोट बनाया, बिचमें हे बावन देरी ॥ सुवर्णका तोरा इंदा झलकता, सुरत कंठ सबसें न्यारी ॥ रिषभ० ॥ १ ॥ आगें पीछें तोरी बावन देरी, बेठी हे आसन वाली ॥ माता मरुदेवी पिता नाभिराया, हस्तीकी तोरी असवारी ॥ रिषभ० ॥२॥ तीन सरूप एक दिनमें धरते, धन्य देवा तोरी माया ॥ लाख चोरासी पूर्व तोरुं आउखुं, धनुष्य पांचसें सोवन काया ॥ रिषभ० ॥ ३ ॥ देश देशका संघज आवे, मानता माने सहु तेरी ॥ केसर सोनैया हुंडीयो लावे, आशा पूरे सहु केरी ॥ रिषभ० ॥ ४ ॥ धुलेवा नगरमें आप बिराजो, दुनियां सहु दर्शनआवे ॥ झगमग ज्योति बिराजे प्रभुकी, सो कहेवेमें नहीं आवे ॥ रिषभ० ॥ ५ ॥ कोइक पाटे कोइ चढावे, कोइक केसर लइ आवे ॥ अतर अबीर फूल ज्युं बहेके, रात दिवस गंधर्व गावे ॥ रिषभ० ॥ ६ ॥ कलियुगमें तो तुंहि देव हे, प्रगट नाथ देखु मोरा ॥ चोशठ इंद्र तोरी करे चाकरी, समरण करता सब तोरा ॥ रिषभ० ॥७॥ नाम लेवंता घटे पापना, संकटमां वारे वारे ॥ वाट

घाट घघीसानेघी, कासोजी कासी लावे ॥ रिपज० ॥७॥ अकबर बादशाह चढकर आये, हुग्मत लेने कालेकी ॥ बावीस लाख तो लसकर लावे, पार नहो कतु प्यादलकी ॥ रिपज० ॥ ए ॥ सब लशकरकु कीय अधले, फोज लुटी फिर जमरोकी ॥ अल्लाकर जागे तुरकरु, पकडी वाट फिर दिल्लीकी ॥ रिपज० ॥ १० ॥ अवधिज्ञानमें जोयु देवियें, रास लुटी सब धूलेवेकी ॥ लीले घोडे चढकर आये, हुलकारे सब चिह्न नकी ॥ रिपज०॥११॥ कपूतने तो मार दीयो हे, गर्दनसें सब तातेकुं॥ ऐसा देव हिंदुका जाणी, मत चढ जाओ धुलेवेकु ॥ रिपज०॥१२ ॥ नथुरामकूं सरण तुमारो आवे गिरिवर दर्शनकु ॥ ध्यान धरावी चित्त ठरावी, चाहुंसे देवन मुक्तिकु ॥ रिपज० ॥ १३ ॥ ४५ ॥

॥ अथ श्रीकेशरीयाजीनी लावणी तेंतालीशमी ॥

॥ लगा लगो प्रभु अरज करता, समरण करता सब तोरी ॥ दीनानाथ मोरी अरजी सुन कर, जबकी टालो तुम फेरी ॥ ल० ॥ ए आंकणी ॥ विनिता नगरीमें तोरा जनम हे, माता तोरी मरुदेवा ॥ चोशठ इन्द्र तोरी करे चाकरी, चंद्र सूर्य करता सेवा ॥ नाभिरा

याके कुलमें सोहे, ऋषभ देवजी नाम तोरा ॥ दीना० ॥ १ ॥ धूलेवा नगर तेरा खूब बना हे, वांहे देवल जिनवरका ॥ फिरती बावन देहरी सोहे, हस्ती खम्भा मरुदेवीका ॥ दोनुं हाथी झुले गिरुवा, दरवाजे प्राक्रम भारी ॥ दीना० ॥२॥ आंगी तेरी खूब बनी हे, बूटी सोहे जमावनकी ॥ गले मोतिनको हार बिराजे, सोभा दीसे कुंडलकी ॥ चमरी तोरे ढडे शिर पर, रिषभ देवकी बलिहारी ॥ दीना० ॥ ३ ॥ ठमक ठमक तोरो मादल ठमके, झणण झणण नाद झालरका ॥ घनन घनन तोरा घंटा बाजे, डंका बाजे नोबतका ॥ सभी सांजकी होवे आरति, मंडपमांहे भीड भारी ॥ दीना० ॥ ४ ॥ नित नित तोरी आंगी सोहे, मुकुटकी गत हे न्यारी ॥ सिरपर तोरे छत्र बिराजे, सामला सूरत दीसे प्यारी ॥ एक दिनमें त्रण रूपज होता, देखत हे सब नर नारी ॥ दीना० ॥ ५ ॥ चार खंडमें नामज तोरा, संघ आवे सब देसनका ॥ छत्रीशा खाविंद आणा माने, तुम समरण अरिहंतोका ॥ सर्ग लोक पाताल लोकमें, मृत्यु लोक माने भारी ॥ दीना० ॥६॥ ऋशभ देवका दरसन करतां, पाप जावे भवो

जथका॥समरथ करतां बेमी जांजे, बध छूटे सब कर्मों का॥ जिसका तोरी आण माने, ऐसो परचो हे भारी ॥दीना०॥ ७ ॥ सम्वत अढार ओगणसाठ आसाढ, शुद्ध बीजे दिन बुधवारी ॥ ईडर गढका सघज आया, जात्रा करे सब नरनारी ॥ मानता तोरी सहुको माने, ऐसो परचो हे जारी ॥ दीना० ॥ ८ ॥ दरिसन करतां जोकी धा बणी,सुन स्यों उनका ठीकाना ॥ राव मलारका कमी परगणा, गाम उनुंका मेसाणा ॥ रूपविजयजी सेवक तुम्हारो,सुन क्यो प्रजु अरज मेरी ॥ दीना० ॥ ९ ॥४६॥

॥अथ श्रीसमवसरणानी लावणीसुन्ताखीशमी॥

॥ अरिहंतजीके समवसरणमें, चोशठ इंदर आय खडे ॥ धर्मचक्रका दरसन देखत, चोरासी मत बूट पडे ॥ केवल जडे घडे ग्यानसे, दरसनसु दरसाव पडे ॥ परम धरम समकित गुण देखो, पचरंगी नीसान चडे ॥ सुर नर मुनिवर स्तुति करत हे, प्रजु हे सब देवनमें वडे ॥ अरि० ॥ १ ॥ प आंकणी ॥ सोना रूपाके गढज बनाया, रत्न सिंहासन कमल जडे ॥ पूरव मुखसें बेठे प्रजुजी, केवल दरसन ज्ञान जडे ॥ सुण कर देव मानव धरणीधर गणधर साधु ग्यान वडे ॥ सब

चतुर्विध देव देवता, ज्ञान क्रिया शुद्ध भाव चढे ॥ हाथ जोड़ विनति करे तोकु, भविक जीव गुणगाणे चढे ॥ अरि० ॥ २ ॥ अशोकवृक्षकी छाया मनोहर, योजनमें विस्तार करे ॥ भूमि शुद्ध कर अचिर अरगजा, पाणीका छंटकाव करे ॥ पचरंग बादल फूल सुगंधित, फूलनके वरसात करे ॥ जोजन भूमि सुगंध वेदिका, तीर्थंकर पद आप वरे ॥ देव काटि कोटि करे प्रदक्षिणा, जयजय मंगल मुखसें पढे ॥ अरि० ॥ ३ ॥ त्रण्य छत्र मस्तक पर सोहे, भामंडल मुखसें तपते ॥ धर्मचक्र जोजनगत उन्नत, दुंदुभि नाद बाजा जमते सुर नर किन्नर असुर विद्याधर, चउविह संघ पूजा करते ॥ चोशठ इंद्र सब करे आरति, गणधर वाणी मुख पढते ॥ जैनधर्म पाये नरभवमें, मुक्ति नीसेनी तबही चढे ॥ अरि० ॥ ४ ॥ चार परखदा धर्मसभामें, धर्मराजकी सेव करे ॥ घाती अघाती कर्म खपा कर, शुद्धातम शुभ भाव धरे ॥ लोकालोक प्रकाश करत हे, सात नय नव तत्त्व भासे ॥ उत्पाद व्यय ध्रुव सत्तामें भवण्द निश्चे गुण भासे ॥ मनुगम उदय जिनराज सभामें, हाथ दीपसें चक्रचडे ॥ अरि० ॥ ५ ॥ ॥ ४७ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी अमतालीशमी ॥

॥ गिरिवरकु गये गुरु ग्यानी, राजुल मनमें नहीं मानी ॥ गिरि० ॥ नव जवको नेह मेरो जुनो, तज गयो मेरो श्याम सलूनो ॥ मेरे सिरपें पड्यो दुःख दूनो, मेरो हिरदो हुवो सब सूनो ॥ नित नेन करे मुक पानी ॥ गिरि० ॥ १ ॥ शुद्ध सजन सनेला पाखे दू पण मननी सब टाखे ॥ सब गांठ गरवकी गाखे, मुगतिकें मारग चाखे ॥ ऐसे नेमनाथ हे ध्यानी ॥ गिरि० ॥ २ ॥ राजुल कहेती सुन पीया, जुगमें ऐसा क्या कीया ॥ अबलाकु दोस प्रभु दीया, जुगमें धिक्क धिक्क मेरा जीया ॥ परबतकु चलु रे दिल जानी ॥ गिरि० ॥ ३ ॥ शुद्ध सतीने संयम लीनो आतमको कारज कीनो ॥ परमातम पदकु चीनो, अनुभव रसमें दिल भीनो ॥ जिनदास प्ररूपो जानी ॥ गिरि० ॥ ४ ॥ ॥ ४० ॥

॥ अथ श्रीमगसीनाथजीनी लावणी उंगणपचासमी ॥

पारस पूजन ज्योत जगतमें, मगसीके स्थाने ॥ मालवा मुलक सम्पक जाने ॥ ए आंकणी ॥ खरच से सुद्धतम माया, पूरव जवके पुण्य जागसें मगसीनाथ पाया ॥ करो तुम मेरा, मिलमें मुगतिका मेरा, एब

ाम निरंजन देवा ॥ वडे हे सब संवर क्याने ॥ पारस०
॥ १ ॥ चाव धरि दर्सनकुं आवे, माणिनन्द रखवाली
करता, श्रावक सुख पावे ॥ प्रभुगुण गाता, जिन चर-
णोंसें लय लाता, सुख संपत ले घर आता ॥ लग्यो
जिनवरजीसें ध्यानें ॥ पारस० ॥ २ ॥ अतिशय पोर-
सका भारी, देश देशको मेलां हुवे, दर्सनकुं नर नारी
॥ भावसें पूजे, जिण घर कामधेनु दूजे, सुरगति जाव-
णकी सूजे ॥ सूत्रको सीख हिये आने ॥ पारस० ॥३॥
पार जिनजसको नहीं पावे, मगसीनाथकी महीमा
किम, सेवकसें कहि जावे ॥ सदा पगे लागे, मेरे ग्या-
न कला एक जागे, जिनदास एही वर मागे ॥ हरो
दुःख दूर सुणो काने ॥ पारस० ॥ ४ ॥ ॥ ४ए ॥

॥ अथ श्रीनेमजीनी लावणी पचासमी ॥

॥ दगा दे गया पति गिरनारी, कहो रे माइ कैसें
लगे कारी ॥ ए आंकणी ॥ विधि विन तोरणकुं आया,
सखी सव मिल मंगल गाया ॥ पशु फंदसें छुडाया,
सतीने दरसन नहीं पाया ॥ तोड गये नव भवको यारी
मेरी दिल दया नहीं धारी ॥ विलखती हे राजुल
नारी, आतमा अपनीकुं तारी ॥ कहो० ॥ १ ॥ पति

मेरा परवत पर चढिया, करमसें सन्मुख जइ अमी या ॥ ग्यानका घाट हिये घमीया, पाप सब तनम नका जमिया ॥ वेदना तन पर सम लेता, मुनि वन वनमें वस रहेता ॥ किसार्से सुख दुःख नहीं कहेता, परीसह सहे बहुत जारी ॥ कहों० ॥ २ ॥ इणविध पन घाती तोड्या, नेह सब सजमसें जोड्या ॥ करी हे स मकित पटराणी, हिये रुच रही जैनवानी ॥ ममता एक मुक्तिकी ताणी, रखा सब पर उदासी आनी ॥ संसारकु बहोत असार जानी, प्रज्ञु तुम ममता सब मारी ॥ कहो० ॥३॥ सती मन मनसुधा सोन्या, केस अपना सिरका लोच्या ॥ दिया दुरगतिके सिर धोवा, सीताजी शिवपुरकु पहोंच्या ॥ अखय सुख प्रज्ञुजीने लीना, म रण दुःख मेट सबे दीना ॥ इस्या जिन मारगमें जीना करे जिनदास सेव तारी ॥ कहो० ॥ ४ ॥ ॥ ५० ॥

॥ अथ देव गुरु अने धर्मआश्रयी लावणी एकावनमी॥

॥ में नीत नमाउं सीस, साध संतनकु ॥ साध० ॥ जुगमांहे इंद्रिय जोत, किया वस मनकु ॥ ए आंकणी॥ अब जिनचदा जुग जाण, जयो जिनवर रे ॥ जयो० ॥ ए अथघल बिराजे देव, दरस दिल धर रे ॥ अब जि

नवाणी जिन नीर, नरयो सरवर रे ॥ नरयो० ॥ कोई न्हावे संत सुजाण, सुघरु जन नर रे ॥ अब इतनी सुन कर सीख, करम क्षय कर रे ॥ करम० ॥ इणविध शिव समता सुखसें, अमर पद वर रे ॥ अब नज नव मानवमांहे, नाभि नंदनकुं ॥ नाभि० ॥ जुगमांहे० ॥ १ ॥ तुम जग जंजीरा तोरु, तज्या घर फंदा ॥ तज्या० ॥ कोइ उलज रह्यो अज्ञानी, आंख विन अंधा ॥ मे रह्यो विषय नरपूर, गरवमें गंधा ॥ गर० ॥ में वहुत हुउं हेरान, जबर जुग धंदा ॥ में कुगुरु जोया जोर, जोगी उंर नंदा ॥ जोगी० ॥ में जिनवर परख्यो आज, हुवो आनंदा ॥ अव जिन नजनां सो लाज, लुंट निज धनकुं ॥ लुंट० ॥ जुगमांहे० ॥ २ ॥ अब जप परमेष्ठी पंच, परम पदधारी ॥ परम० ॥ ए जपतां जय जयकार, नरक होय न्यारी ॥ अब ले गुरु गौतम नाम, लब्धि नंमारी ॥ लब्धि० ॥ ए जुगमें साचा संत, सदा सुखकारी ॥ तुम नवजल पाम्या पार, समुद्र महा नारी ॥ समुद्र० ॥ तुम तारया वहु नर नार, वहुत संसारी ॥ तुम काट कियो मेदान, करम सब वनकुं ॥ करम० ॥ जूगमांहे० ॥ ३ ॥ अव

अंतदृष्टि लगाय, सुनो जिनवाणी ॥ सुनो० ॥
सुख संपतकी खान, मुगति नीसानी ॥ अब अमर
सी करतूत, हिये नहीं आणी ॥ हिये० ॥ में दुर्गति र
लीयो वहोत, सेव्यो जिम धाणी ॥ अब ते मान
अवतार, चेत तु प्राणी ॥ चेत० ॥ ए जिन दरिस
परभाव, नरक विरलाणी ॥ अब विनवे यु जिनदास
चाहु दरिसनकु ॥ चाहु० ॥ जुगमांहि० ॥ ४ ॥ ५१

॥ अथ श्रीवीरभगवाननी लावणी बावनमी ।

॥ अनतबली निजराजी जगतपति, चरण अगुं
मेरु कपाया ॥ देव देवी मिल करे वीनति, सब सु
पति आनद पाया ॥ ए आंकणी ॥ तेरे गुणकी म
हिमा अब पाइ, इतनो गुनो बगसीस करो ॥ खमो
अपराध प्रभु पापको, प्रेम नजर हम उपर धरो ॥ करि
स्तुति ठवे सुरि सुर सब, जन्म मोच्छव अब करणो
खरो ॥ अधिक अधिक धरि हर्ष हियेमें, आसस अ
पने तनको हरो ॥ शुद्ध तन मनसें करो महोत्सव,
शिव रमणीकु सिताब वरो ॥ जगतिसें जर धर्यो ही
याकु, अब दुगतिसु काहेकु डरो ॥ जनम मरनकु मेट
दिया है, सो जिन भक्तिसें नहाया ॥ देव० ॥ १ ॥

सुरनकी संपत सुख दायक, जिनवरकी ए भक्ति भली ॥ दोहिलो तुं मत होय जीवरा, अण तेरी ऋद्धि आवे चली ॥ उछाय कलश हाथोसें लीना, सुरपतिका मन हुवा रली ॥ जय जय शब्द मुखसें सब बोले, विषय गये तस दुर टली ॥ हरख वदन कर सुर सब गावे, आनंद घरी मुझ आय मिली ॥ जन्म हमारो लेखे लग्यो हे, सुखकी सेज सुरतोल ढली ॥ धन धन हे जिनकी जिंदगानी, जिनवरका गुण मुख गाया ॥ देव० ॥ २ ॥ करे निरत जिनवरके आगें, वाजांकी धुन वाज रही ॥ सुरतका सुर नर हे सबला, महिमा मोसें न जाय कही ॥ अंग मोरु हित जोरु करे सब, सफल घरी मेरी आज भई ॥ उदय आनंद दिनकर घर उग्यो, कुमति कलेसण अलगी गई ॥ सुर नरका सुखकी नहीं गिनती, अमरापुर पद जाय लही ॥ छ पन कुमारी जिनगुन गावे, मुखसुं कथन कर कीरति कही ॥ ऐसो उछट धरि करतां महोत्सव, हिरदे ह-रख अधिका आया ॥ देव० ॥ ३ ॥ मेरु शिखर पर कलस ढाल कर, हाथ जोरु सुर आगें खडे ॥ में चर-णोंका चाकर तेरा, अरज करे युं खडे खडे ॥ छत्र च-

मर डाले जिनवर पर, लखि लखि सब सुर पाय पडे ॥ हुकम करो तो नीर नमणको, सब सुरपतिके सीस चडे ॥ इण विधिसें भक्ति जे करता, भव भवका सब पाप जडे ॥ तुम गुनको सुर पार नहीं ले, जिनदास कैसो कैसो रचे ॥ फूल सुगधी नीर छटकता, सुर सब प्रभुकु घर लाया ॥ देव० ॥ ४ ॥ ५२ ॥

॥ अथ आत्मपर लावणी त्रेपनमी ॥

॥ मरणमय कूप को न जाने, फिरे तजि मूल चूख पाने ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ लोकपत पेट बीच व सती, किसो शत्रुसें नहीं खसती ॥ संत कोठ सुरग करे मसती उनुसे कुगति दूर खसती ॥ सूमति कर लही थोत ससती, आतम निरखे नाथ हसती ॥ कुबे पमग्राकु पच्यो ध्यानें ॥ मरण० ॥ १ ॥ राजके सीस छात धरता, अनंत दल बलसें नहीं मरता ॥ विना हथियार ओर करता, किसिसें मार्‍या नहीं म रता ॥ मुगट विन काज सब्री सरता, निगोदादिक दु खकु हरता ॥ जिनंदका बोल वस्या काने ॥ मरण० ॥ २ ॥ शीख अब सुनो लाल मारी, ग्यान विन आ तम रहि कोरी ॥ भेदकी रीत लहे दोरी, जगन सब

बुद्धि गइ तोरी ॥ ज्ञानसें आप चली दोरी, समज न लहे करया चोरी ॥ कुगुरुकुं खोटा करि माने ॥ मरण० ॥ ३ ॥ पाणी विन प्राण बहुत जावे, निकल कर बाहार नहीं लावे ॥ अधोमुख जगमें वतलावे, भेद षट द्रव्य सबी पावे ॥ इस्यो जिनदास ज्ञान गावे, वचन भविजनके मन भावे ॥ भेद भवि विरलो कोई आने ॥ मरण० ॥ ४ ॥ ॥ ५३ ॥

॥ अथ काया उपर लावणी चोपनमी ॥

॥ चल जावो रे मुसाफर यार, प्रीत सब तेरी ॥ प्रीत० ॥ उठ चल्या प्राण परदेश, आस तज मेरी ॥ ए आंकणी ॥ युं बोले करुणा बोल, कामिनी काया ॥ कामि० ॥ में पिया न निर्मल नीर, सरस नही खाया॥ तेरे संतके परभाव, नहीं सुख पाया ॥ नहीं० ॥ पेस्या नहीं मखमल चीर, लीर लटकाया ॥ तुज बिना मे बल जल हुइ गइ, राखकी ढेरी ॥ राख० ॥ उठ० ॥ १ ॥ में दुरगतिकी करतूत, पगें कर ठेली ॥ पगे० ॥ हुवो कुमतिके शिर शत्रु, सूमतिको वेली ॥ तें समता शीलकी बात, हियामें मेली ॥ हिया० ॥ सुर गतिके सूखकी खान, खरी कर जेली ॥ तें कियो न

हमसु देत, बण्यो मेरो वेरी ॥ बण्यो० ॥ ठठ० ॥ १॥ तें बहोत लगाई लोभ, काम नहीं आइ ॥ काम० ।तें छव्यो है मेरो संग, प्रीत बिरखाई ॥ वे चस्या चोरासी मांहे, करम मुझ घेरी ॥ कर० ॥ में रूल्या जगतकी बीच, करुं किस पेरी ॥ तेरी संगतसें में कियो, पाप अति जारी ॥ पाप० ॥ ठठ० ॥ २ ॥ मेरी हुई खराबी बहोत, प्रीत तेरी जाणी ॥ प्रीत० ॥ जुगता यिगता में अनेक बहुत पछतानी ॥ सूक गइ सोचके माहे, काया कुमलाणी ॥ काया० ॥ मोहे पमी विपतके बीच मांरु कर घाणी ॥ तें रखी नहीं मेरी लाज, मुगतका लेरी ॥ मुगत० ॥ ठठ० ॥ ४ ॥ सुख दायी सुमतिकी सेज, सजाइ वेठो ॥ स० ॥ कायाने कीयो हेरान, हुठ में सेठो ॥ तज थो मिजलसकी मोज, मानकु मेटो ॥ जजो जाय जक्ति प्रजुनाम, डुरितसब नेटो॥ जिनदास आस जिनराज, चरण पर ठेरी ॥ च०॥ ठठ०॥५॥ ५४॥

॥ अथ विनतिरूप लावणी पचावनमी ॥

॥ आयो अब समकितके घरमें, पडे नहीं निगोदके फरमें ॥ ए आंकणी ॥ प्रजुजी में जगत सब फोयो, कहिं जिनराज नहीं जोयो ॥ गांठको माल सजी खोयो,

कुगुरुसें मन मेरो मोह्यो ॥ ग्यान नहीं रह्यो मेरे करमें ॥ आयो० ॥ १ ॥ कुगुरु मोहे ऊवटमें पटक्यो, जीव जब दुर्गतिमें अटक्यो ॥ विषय सुख विहूने चटक्यो, हियो दुःखनिगोदको खटक्यो ॥ कारज नहीं कियो आप नरमें ॥ आयो० ॥ २ ॥ दया कर दरिसन मोहे दीजो, दुःखीकुं सरणे रख लीजो ॥ नजर सुन मुझ उपर कीजो, नवि तुमें वचनोसें जीजो ॥ मरणमें मरे कोण नरमे ॥ आयो० ॥ ३ ॥ प्रभुजी तुम मेरे मन वसिया, मेरा सब रोम रोम हसियां ॥ वन्या में जिन गुणाका रसिया, सरण जिनदास आय धसिया ॥ लगे नहीं मन ब्रह्मा हरमे ॥ आयो० ॥ ४ ॥ ॥ ५५ ॥

॥ अथ सूगुरुनी लावणी छप्पनमी ॥

॥ नमुं नमुं में गुरु निर्ग्रंथकुं, वे जिन मुद्राधारी हे ॥ पुद्गल उपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे ॥ न० ॥ १ ॥ गर्व गाल कर गुप्ति गोपवे, गति निर्ग्रंथकी न्यारी हे ॥ कनक कामिनीके नहीं जोगी, वे पुरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० ॥ २ ॥ छकायाके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काट कर केवल पावे, ज्ञान गरथ गुण जारी हे ॥ न०॥३॥ शुद्ध श्रद्धासें समति

सेवी निज आतमकु तारी हे ॥ जिनवरकु जिनदास वीनवे, उनके चरण बलहारी हे ॥ न० ॥ ४ ॥ ॥५६॥

॥ अथ कुगुरुनी लावणी सत्तावनमी ॥

॥ तजु तजु मे उन कुगुरुकु, कनक कामिनी धारी हे ॥ ज्ञान ध्यानकी वात न जाने, अष्ट करमसें भारी हे ॥ त० ॥ १ ॥ करी कपालें भभूत लपेटी, शिर पर जटा वधारी हे ॥ कान फाड कर मुद्रा पहेरता, उनके घरमें नारी हे ॥ त० ॥ २ ॥ जोग लेइ कर जीव विणासे, वे मद्य मांस आहारी हे ॥ कूडा पथी जग तकु करता, मुखसें कहे आचारी हे ॥ त० ॥ ३ ॥ कहु उगुण कुगुरुका कथ लग, साध नहीं संसारी हे ॥ आप डुवे ओरकु डुवावे, दुर्गतिका अधिकारी हे ॥ त० ॥ ४ समकित श्रद्धा जैनधर्मकी, नहीं कुगुरुकों प्यारी हे ॥ जिनवरकु जिनदास विनते, कुगुरु संग खूवारी हे ॥ ५ ॥ ॥ ५७ ॥

॥अथ परस्त्री त्याग उपर लावणी अठावनमी॥

॥ चतुर परनारी मत निरखो ॥ आयण केरी रेन अंधेरी, विजलीको चमको ॥ रावण महोटा राय क हावे, लंका गढ धको ॥ पाप करीने नरक पहोंचियो,

दुःख पायो अलिको ॥ १ ॥ धातकी खंडको राय पद्मो-त्तर, द्रुपदीने हरतो ॥ कृष्ण नरेशर करे खुवारी, जव पुण्य हुवो हलको ॥ २ ॥ कीचकराय महा दुःख पायो, जीमेंसूं अधिको ॥ नारी द्रोपदी नेहें विचारी, जव ज-वमें जटक्यो ॥ ६ ॥ परनारी को रंग पतंग हे, पोगलको झलको ॥ ओसबुंद जब लगे तावरूा, ढलक जाये ढलको ॥ ४ ॥ परनारीको सनेह करतां, धन जाशे घरको ॥ दूजा देख कर करे खुवारी, जव वनमे जटक्यो॥५॥५८॥

॥ अथ स्वार्थ विषे लावणी ओगणसाठमी ॥

॥ कोन जग तमे तारा चेतन, कोन जगतमें तारा रे ॥ अपने अपने स्वारथ वस, विन स्वारथ होय न्यारा रे ॥ कोन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ स्वारथें मात सुपुत्त वोलावे, जीजी कर कहे दारा रे ॥ वीर कहे जगिनी निज स्वार्थे. लागे पिताकुं प्यारा रे ॥ कोन० ॥ २ ॥ हय गय रथ पायक धन परधन, कोइ न रा-खनहारा रे, ॥ काल वेहाल सवहीकुं करते, करता मुख पोकारा रे ॥ कोन० ॥ ३ ॥ इंद्रजाल सुपनां सम जाना, जूठा जगत पसारारे ॥ सेवो चरण कोई संत जनोके, जीव होवे निस्तारा रे कोन० ॥ ४॥ ५९॥

॥ अथ नवपदजीनी लावणी साठमी ॥

॥ जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले भारी ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम पद तीर्थपति राजे, दोष अष्टादशकु त्याजे ॥ आठ प्रातीहारज छाजे, जगत प्रभु गुण बारे साजे " ॥ दोहा ॥ अष्ट करम दल जीतके, सकल सिद्ध ते थाय ॥ सिद्ध अनत भजो बीजे पद, एक समय शिव जाय ॥ " प्रगट भयो निज स्वरूप भारी ॥ जगत० ॥ १ ॥ सूरि पदमें गौतम केशी, उपमा चंद्र सूरज जैसी ॥ उगारयो राजा परदेशी, एक भवमांह शिव लेशी " ॥ दोहा ॥ चोथे पद पाठक नमु, श्रुतधारी उवज्झाय ॥ सव्वे साहु पचम पदे, धन्य धन्नो मुनिराय ॥" ॥वखाएयो वीर प्रभु भारी ॥ जगत० ॥ २ ॥ द्रव्य खटकी श्रद्धा आवे, सम संवेगादिक पावे ॥ विना ए ज्ञान नहीं किरिया, जैन दरस नसें सब तरिया '॥दोहा॥ ज्ञान पदारथ सातमे, पदमें आतमराम ॥ रमतां रम्य श्रध्यातमें, निज पद साधे काम ॥" देसना वस्तु जगत सारी ॥ जगत० ॥ ॥ ३ ॥ जोगकी महिमा बहु जाणी, चक्रधर छोडी सब राणी ॥ जति दश धम करी साहे, मुनि श्रावक

सब मन मोहे "॥ दोहा॥ कर्म निकाचित कापवा, तपकूठार कर धाय॥ क्षमासुं नवमुं पद धरे,कर्म मूल कट जाय" ॥ जजो तुम नवपद सुखकारी ॥ जगत० ॥ ४ ॥ श्रीसिद्धचक्र जजो जाइ, अचामल तपनीधी थाइ ॥ पाप त्रिहुं जोगें परिहरजो, जाव श्रीपाल परे करजो " ॥ दोहा ॥ संवत उंगणी सत्तराशोमें, जे पोषी श्री पास॥चैतर धवल पूनम दिनें ,सकल फली मुज आश॥ बाल कहे नवपद ठवि प्यारी ॥ जगत० ॥५॥ ॥ ६० ॥

॥अथश्रीशांतिनाथजीनीलावणीएकशठमी॥

॥ शहेर जुनेरमें शांति बिराजे, अंगजर फुलनकी माला॥ अगरूबम अगरूबम नोबत वाजे, घंट वाजता चोताला ॥ गजपुर नगरीमें तेरा जनम हे, घेर घेर मंगल सब गावे ॥ इंद्रलोकथी इंद्र इंद्राणी, उत्सव करनेकुं आवे ॥ चालीश धनुष सोवन तेरी काया, मृग लांछन तोरे पाया ॥ विश्वसेनके कुलमें शोजित, माता अचिराके जाया ॥ सरग मरत पाताल त्रिलोकमें, हुवा ज्योतका अजुवाला ॥ अगरू० ॥ १ ॥ केसर चंदन घसा-घसीने, पूजा करुं जिनेसरकी ॥ अनुपम आंगी खूब बनी हे, जागी ज्योत राजेसरकी ॥ अशरण श-

रण पतित दुःख वारण, करुणा साहेब तुम्ह धणी।
मुझ करणी शुभ मति जो जागे, कृपा करो मोरी
भक्ति घणी ॥ तेरे नामसें नवनिधि पावे, शांतिना
थजी मतवाला ॥ अगरु० ॥ २ ॥ आंगी तेरी अज
बनी हे, शांतिनाथ साहेब मेरा ॥ जडावकी तुझ शोहे
टीलडी, हीरा चमकता हे चोफेरा ॥ अगजर फूलन
जटा बनी हे, चमर ढलता चोफेरा ॥ धूपधाण ठंठ
जात बनी हे, शिर सोहे मोती सेहरा ॥ नव रतनका
हार गलेमें, जेसा चंद्रका अजुआला ॥ लगो ज्योत
तेम जोत जगतमें, दीप तेजका अजुवाला ॥ अगरु०
॥३॥ तेरे नामसें सब जुग महिमा, धन्य तुमारी क
रणीकु ॥ शांतिनाथजी में सेवक तुमारा, मेरी लाज
अपने घरकु ॥ शांति करोने रे शांतिनाथजी, समरण
करता सब तेरा ॥ सभी सांझकी होती आरती, श्याम
मूरत दीसे प्यारा ॥ आरती उतारे आनंद गावे, बाजे
मृदंग गडताला ॥ अगरु० ॥ ४ ॥ पूजा करु रे प्रभु
साहेब मेरा, चरण पखालु मे तेरा ॥ जनम मरणका
भय निवारो, तारो भवसायर फेरा ॥ लख चोरासी
भवमें भमियो, जेसा घाणीका फेरा ॥ शांतिनाथ मोहें

पार उतारो, गरीब चाकर में तेरा ॥ ज्ञानुचंदके जय निवारो, बाऊ जीतका घरियाला ॥ अगरू० ॥५॥६१॥

॥ अथ श्रीनवदपजीनी लावणी बासठमी ॥

॥ धर सुमतिसे ध्यान, चेतन संवरमे रखनां ॥ नवपद श्री नवकार मंत्र श्री, घरी घरी जपनां ॥ ए आंकणी ॥ क्या कहुं मे तारिफ नवपद, जवाब बरुा जारे ॥ नहीं आदि नही अंत जीनोका, नहीं लगता पारें ॥ पहेले पद अरिहंता, ओ जगवंता जयकारे ॥ जपो नाम तुम उनका, जिनसें होवे उद्धारे ॥ कटे पापका मल विघन सब, हो जावे दूरें ॥ अनंत अनंत कर्मके थोकरे, हो जावे चूरे ॥ जवोजवके प्रायश्चित्त सारे, जावे मिटकारे ॥ शाश्वता ए मंत्र जिनोमें, बरुा चमत्कारे ॥ जिस दिन जपनां जाप ध्यान श्री, अरिहंतका धरनां ॥ नव० ॥ १ ॥ नमो सिद्ध जगवंता उ हे, अलेप किरतारे ॥ नहीं रंग नहीं रूप जिनोमें, नहीं कुछ आकारे ॥ नही चक्षु नहीं जिव्हा नहीं उ, नासा श्रोता रे ॥ नही पाद नहीं पानी नहीं उ, करता जुक्ता रे ॥ चउद राजका अग्रजागमें, हे सिद्ध शिला रे ॥ ईषद्जारा नाम कहेते, सिद्धांत अंदरे ॥ एहे सिद्ध शिलाको नाम है, तुम सुन करके लेनां ॥ नव० ॥ धर०

॥ २ ॥ पीस्ताधीश लाख जोजन हे, उनका परि
माणे ॥ जोजनका चोवीस भाग एक, ऊपरसें लेने ।
आवे जावे ना आप आपकी, ठेठ अग्यो स्याने ।
वहां रहे अधर माहाराज नहीं, कुछ पाणी पवने ।
नहीं क्रोध नहीं कषाय नहीं छे, करते भगवाने ॥ एक
हजार ठेर आठ गुनोसे, बिराजे भगवाने ॥ भरे सुख
भरपूर नहीं, संख्याका परिमाणा ॥ नव० ॥ धर० ॥ ३
नमो पद आचारज प्रायश्चित्त, जावे भव भवके ॥ ३
आप बडे महाराज जीतता, पांचो ईंद्रीके ॥ नव ब्रह्म
चार पालनेवाले, पच महाव्रतके ॥ पच समिति तीन
गुपती गुन, छत्रीस हे उनके ॥ सुधर्मास्वामी जंबू
स्वामी बहुत गिनती उनके ॥ करु वदना उनकु प्राय
श्चित्त जावे भव भवके ॥ आचारिज पद जपोने अ
विचल, अक्षय सुख पानो ॥ नव० ॥ धर० ॥ ४ ।
उपाध्यायजी भगवान मेरा सत, गुरु सबसे बडा ।
नमस्कार म करता चोथे, पदमें नाम जिनका ॥ आ
चारंग सुगडग ठाणांगें, समवायांग करणका ॥ भगवती
ज्ञाता उपासग अतगड, अनंतर उववाईका ॥ परसन
व्याकरण विपाक नाम, सुनो बार सूत्रका ॥ वाचन
ठेर प्रतिबोधना, अभ्यास हे उनका ॥ नवपल्लवका

देवे मूर्खकुं, ऐसे ग्यान गुरुका ॥ आचारिजके जेसे होई, मेरे सद्गुरुकुंकहेनां ॥ नव० ॥ धर० ॥ ५ ॥ नमो लोय सव्वसाहूणं, नमस्कार करनां ॥ साधु मुनिराज केसे उनके, गुन तुम सुन लेनां ॥ अढीद्वीपके म्याने पंदर, खेतर सुन लेनां ॥ उ पंदर खेतरके साधु उनको, नित्य वंदन करनां ॥ पंच समिति समता तीन, गुप्तिसें गुपत रहेनां ॥ छकायके पीअर पंच, महाव्रतकुं पालना ॥ नव प्रकारके परिग्रहोंसों, उनकुं त्याग देनां ॥ स्त्री और लक्ष्मी राज ऋद्धि, सबकुं छोड देनां ॥ अखय पदके खातर संयम; साधनकुं चहानां ॥ नव० ॥ धर० ॥ ६ ॥ पांच पद तो कहे उर दूसरे; पद होइगे चारे ॥ सुनो नाम तब उनका कहेता; सारा विसतारे ॥ एसो पंच नमुक्कारो; नव पद अंदरे ॥ ए पांचो भगवान् कहे तजो; उंहां नमस्कारे ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं निर्मल, कारी किरतारे ॥ पढमं हवइ मंगलं, नव पद हुवे पूरे ॥ उनके गुन तुम ग्रहो ने उतरो; भव सागर पारे ॥ ए पांचोके नाम रतनसें; पाप हुवे दूरे ॥ चउद पूरवको सार; मंत्र नवकार सुन लेनां ॥ जो नर भजे दिन रेन होवे;मुक्तिसें मिलनां ॥ नवपद्श्री नवकार मंत्र; श्री घरी घरी जपनां ॥ नव० ॥ धर० ॥६१॥

॥ अथ केशरीयाजीनी लावणी लेसठमी ॥

॥ श्रीरुखदेव महाराज केसरीया, बेठा पहाडोंमें ॥ केसरी० ॥ आसपास गुलजार जमी, लग रही पो हाडोंमें ॥ ए आंकणी ॥ टुक टुक पर हे धजा, धजा पर चोकी जिनवरकी ॥ सब श्रावक मिल पूजा करते, केसर चदनकी ॥ श्री० ॥ १ ॥ खासा देवल घन्या देवल पर, कल्ली चरुवाह ॥ अष्ट द्रव्य से पूजा करते, उद्योत सवाई ॥ श्री० ॥ २ ॥ सेत्रुजा गिरनार जीव तुम, अष्टापद जानां ॥ सोनगिरिके दरसन करके चपापुरी आनां ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चपापुर ठेर पावा पुरी जीव, समेतशिखर जानां ॥ मुक्तागिरिके दर्शन करिके, आबुजी आनां ॥ श्री० ॥ ४ ॥ रायणपुर ठेर गढ आबूजी, मार्गे तुगी गिरि जानां ॥ मगसीजीके दरिसन करकें, गोडीजी आनां ॥ श्री० ॥ ५ ॥ श्रीश खेश्वर दरिसन कर चल, तारंगे जानां ॥ पुरपट्टणके दरसन करकें, कलिकुड आनां ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सब तीरथकी करी जातरा, घरकु धी जानां ॥ कहे श्री गगा दास भाई वाणी, भगवतकी सेनां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ ६२ ॥

॥ अथ जिनपूजारूप होरीखेलनी लावणी चोसठमी ॥

॥ फागुण महीना फागमें होरी खेलनां, नाभिनंदा हो नंदके सरनमें रहेना ॥ चूना चंदन उर अरगजा केसर घसना, केसरसें करो जिनपूजा ॥ नाभिनंदा हो नंद बडे महाराजा ॥ तुंहीं तुंहीं तुंहीं विना नहीं दूजा ॥ प्रीतम प्यारा ते प्यारा प्राण जीवने, करता बंदगी तेरी, बंदगी दिलके मीयाने, भविजन भावे भावसे ने पूजा करनां ॥ नाभि० ॥ फागु० ॥ १ ॥ गुणी जन गावा तुम गावो जिनके गुणे, आशा तृष्णा तृष्णाकुं तजो आभमाने, सीयल समता समतासे धरनां ध्याने ॥ दुर्लभ धर्म हो धर्म पाया पुण्ये, ऐसा अवसर हो अवसर फरि नही आवे ॥ देवगुरु भक्ति भक्ति जुगति नहीं पावे ॥ चेतन चेत चेत कर रहेनां ॥ नाभि० ॥ फागु० ॥ २ ॥ अबीर गुलाल गुलाल उर खरबोइ, फुल लेनां केतकी ने जाई जूई ॥ चंपो रू-मरो रूमरो मोगरो सही ॥ आंगीयां रचावो रचावो प्रभुके तोइ ॥ जासुस लेनां तुम लेना कमल लाले ॥ मालती मचकुंद मचकुंद चमेली फूलें ॥ सत्तर भेदे भेदे तुम पूजा करनां ॥ नाभि० ॥ फागु० ॥ ३ ॥

द्रव्यभावे भावसें होरी खेलना, अष्ट कर्म हो भ
जला कर देना ॥ मोह माया माया ममता परि
रना ॥ सद्गुरु गुरुके चरन चित्त धरना ॥ संसार
पना सुपना मात्र तुम जानो, देव गुरु धर्म तुम
र्मकु पीछानो ॥ भविका भावे भावसें भक्ति कर
॥ नाभि० ॥ फागु० ॥ ॥ ६४ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी पासठमी ॥

॥ कुमतिकी संगत नहीं करियें रे ॥कुम० ॥ संग
करिये ऐसी सद्गुरुकी, भवजलनिधि तरियें ॥ ग
विना ग्यान ध्यान नहीं सुजे रे ॥ गुरु० ॥ सद्गुरु स
नहीं कोइ जगमें, मूरख प्रतिबूझे ॥ भक्ति बहु भावो
महाराज भक्ति बहु भावो, मुक्तिमें फावो ॥ सेवन गुरु
विनय विध करियें रे ॥ सेवन० ॥ संगत० ॥ १ ॥ सद्
गुरु शब्द दीये ऐसा रे ॥ सद्० ॥ ॐ ह्रीँ श्री अरि
हत जपो जन, लहो सिद्धि जगत तैसा ॥ चिदानंद
ध्यावो ॥ महाराज चिदानद ध्यावो ॥ परम सुख पावे
॥ जेम चोराशीमें न भमियें रे ॥ जेम० ॥ संगत० ॥
॥ २ ॥ सद्गुरु शीख दीये, ते [illegible] रे ॥ सं० ॥ [illegible]
मान ममता परि[illegible]ये. काया

कोइ ॥ महाराज अमर नहीं कोइ ॥ जगतमें जीवन जोई ॥ दयाधर्म दिल बिच धरियें रे ॥ दया० ॥ संगत० ॥ ३ ॥ जोबन धन थिर नहीं रहेना रे ॥ जोबन० ॥ खलक खजानां खीण नहीं खूटे, हलक होय जानां ॥ संचो मत तोइ ॥ महाराज संचो मत कोइ ॥ सुकृत कर सोइ ॥ काहेकूं कृपण चित्त करियें रे ॥ काहेकुं० ॥ ॥ संगत० ॥ ४ ॥ सबे है स्वारथके मीता रे ॥ सबे० ॥ तप जप देव गुरुकी सेवा, एह परमारथ चित्ता ॥ जगत्पति जाचो ॥ महाराज जगत्पति जाचो ॥ मदन्नरें ममता मत माचो ॥ जिन समरण चित्त धरियें रे ॥ जिन० ॥ संगत० ॥५॥ कहे रंगविजय सुण प्राणी रे ॥ कहे० ॥ धंधा सबे संसार तणा, तजी सर्दहो जिनवाणी ॥ सुणो जिन करणी ॥ महाराज सुणो जिन करणी ॥ शिवपद निसरणी ॥ सेवो रे जिन चरणा, जिस अजर अमर पद वरियेंरे ॥ जिम० ॥ संगत० ॥ ६ ॥ ६५ ॥

॥ अथ श्रीशांतिनाथजीनी लावणी ढासठमी ॥

॥ श्री शांतिनाथ महाराज विराजे, मांडवगढ मांहि ॥ सरव धातुकी मूरत खासी, दरसनणे त्यांहिं ॥ शांति० ॥ १ ॥ ऊंडु दोढु बावन देरा, बीच जिने-

सरजी ॥ मानभद्र महाराज खड़ा हे, शोभा व
नकी ॥ शां० ॥ २॥ देश देशके आवे जातरा, द
नके त्यांहि ॥ सुंदर मूरत खूब रचना, मांडव
माहि ॥ शांति० ॥ ३ ॥ देख सुपना तेरे दर्श
आया, मांडवगढमांहि ॥ शोभण तो घी चढाय
दीपकके मांहि ॥ शांति० ॥४॥ ऋतुपसीका पच आप
मांडवगढ माहि ॥ अष्ट दरबकी पूजा करके, ि
नात जमवाई ॥ शांति० ॥ ५ ॥ सेवक अरज त
कर जाली, मूरति में मागी ॥ शांतिनाथ दुखखं
दाता, जनम मरण त्यागी ॥ शांति० ॥ ६ ॥ ॥ ३६

॥ अथ लावणी सम्मतठमी ॥

॥ तेरे सुरत सोहणी देख, मेरा मन हरखे ॥ तें
दर्शनकुं में नित्य, ऊठ आवुं तरके ॥ तेरे मस्तक
मुकुट, कानमें कुंडल लटके ॥ तेरे बाजुबंधकी झ
लक, मेरे मन अटके ॥ कोई पढे कगीके जोरू
हाथ बिच दमके ॥ कोई पढे करीके जोरू, हाथ बिच
दमके ॥ मेरे पाप हुवे सब दूर, देख कर तनके ॥
प नदीश्वऊन सुरपें, किरपा करके ॥ प धर्मदास तेरा
गुन, गावे हरखें ॥ १ ॥ ॥ ६३ ॥

॥ अथ चैत्यवंदननी लावणी अमसठमी ॥

॥ सिद्ध नमो अरिहंत नमो वली, आयरियो उव-ज्झाय नमो ॥ नमो नमो सव साधु निरंजन, केवली कह्या जिन धर्म नमो ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बार देवलोकें नव ग्रैवेयकें, पंच अनुत्तरें चैत्य नमो ॥ जुवनपति व्यंतर नंदीश्वर, शाश्वताशाश्वत चैत्य नमो ॥ सिद्ध नमो० ॥ २ ॥ शत्रुंजय अष्टापद गिरनारें, पावा चंपा समेतशिखर नमो ॥ चतुर्विध श्रीसंघ मंगल जण-तां, जक्त जणे नित्य नित्य नमो ॥ सिद्ध० ॥ ३ ॥ ६७ ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीना पालणानी लावणी जंगणोतेरमी ॥

॥ माता त्रिशला जुलावे नंदनकुं रे, जुलावे महावीरकुं ॥ तीनो जुवनके नाथ, जुल रहे पारणेकुं ॥ मणि कं-चनके पारणे, दोरी हे रेसमकी रे ॥ दोरी० ॥ घुघरु वाजे घुम घुम, क्या शोजा कहुं उनकी ॥ सो रहे आप जगवान, नहीं इछा धावनकी रे ॥ नहीं० ॥ अंगुष्ठ म्याने अमरित चूसे, रहे स्वाद उनकी ॥ ए स्वादकी सुगंध, चलती फूल कमानकी रे ॥ चल० ॥ सुवर्णवर्णी काया जेसी, वन रहि कंचनकी ॥ देशी फेंकनी ॥ऐसी

मया शासा फहू उनकी, कहेता नहीं लगता पार॥
पसे अनंत गुणके धणी, सो करनहार किरतार॥ चे
सठ इंदर, सब नमते हे उनकु रे॥ सब०॥ तीनो०॥१॥
सोधर्म इंदरने, बोलवाये कुबेरकु रे॥ बोल०॥ तिर्यग्जृंभक
धन ले जाओ, सिद्धारथ घरकुं रे॥ धन लाय आय करे
जर दिये उनके घरकु रे॥ जर०॥ सिद्धारथ राजा चि
विचारसे दिलकु॥ ए सबी पुन उनके, कहेते हे त्रि
सालु रे॥ कहे०॥ जे जे हुवा मंगलदीपक, अपने रे
लकु॥ देशी पेंकनी॥ बहुत बधारा देख कर, उलट प्र
दिल राजाका॥ वर्द्धमान कुवरका नाम लीया, न
पार पराक्रमका॥ आन हके बडे राजा, सब नमते
उनकु रे॥ सब०॥ तीनो०॥ २॥ पांच बरसके हुं
वर्द्धमान कुंवरे रे॥ वर०॥ रमत रमते आये, सभा
अंदरे॥ सबके दिलकु, नदन लगते प्यारे रे॥ नद०
भणनेके खातर बाल, मुकनां निशाले॥ घरघोडा कीर
तैयार, गज घोडे शणगारे रे॥ गज०॥ नंदनकु बेठ
य, नृप हस्तीके उपरें॥ देशी पेंकनी॥ वाजित्र बहोत
साथ रहा, मीकलता सुरतान॥ लीछे पीछे निशान
पंचरंगी कहां उडे बहुत निशान॥ जय से

भगवान, कोन भणावते उनकुं रे ॥ कोन० ॥ तीनो० ॥ ३ ॥ सवी बालक ले कर संग, नंदन चले रमनेकुं रे ॥ नंदन० ॥ इंद्रकी सन्नामे, वरणावते उनकुं ॥ एक देव उठा उहांसे, आया फिर पृथ्वीकुं रे ॥ आया० ॥ वन्ना नोरींग वन कर, लपटाया वृक्षकुं ॥ बालक लगे बिहीने, लगे पोकार करनेकुं रे ॥ लगे० ॥ वर्द्धमान कुंवरे, फिर फेंक दिया उनकुं ॥ देशी फेंकनी ॥ उहांसे बालक बन गया, लगा उं समे रमने ॥ आप हाथसें दाव लिया सो, कोइ नहीं जाने ॥ रमत रमते, क्या विचारते दिलकुं रे० क्या० ॥ तीनो० ॥ ४ ॥ फिर उसी देवनें, बेठाये खंदा परें रे ॥ बेठा० ॥ लंबी कीधी काय रूप कियोज विकराले ॥ बालक लगे बिहिने, करते सब पोकारे रे ॥ कर० अपने नंदनकुं ले चले गगन परें ॥ फिर अवधि ठोरू करने, देखा दिल अंदरें रे ॥ देखा ० ॥ एह देवनकी जात, मूकी ऊठाई उन परें ॥ फिर कीया मूकीका प्रहार, देव गये समाकरे रे ॥ देव० ॥ ए उनका बल देख कर, नाम लीयाज महावीरे ॥ देशी फेंकनी ॥ ऐसा बल देख कर, देव गये इंद्रासनकुं ॥ महावीसर नाम

लिया सो, कहेते इंदरकु ॥ ए बहोत कहे विस्तार, मे
क्या कहु तुमकु रे ॥ में क्या० ॥ तीनो० ॥ ५ ॥ ६९ ॥

॥अथ श्रीमहावीरस्वामीनी लावणी सित्तेरमी॥

॥ उत्तम जीव जब उदर आये हुवे सपना उनके
माताकु ॥ तेजवंत नहीं छुप कर रहेता, मालुम पकत
हे सबकु ॥ चोवीशी तो हो गइ यारो, जिनशासन
जिनका चलता ॥ कोन पुरुषोंकु याद करु मेरे, ख
ल्वेमें रम रहेता ॥ देवानंदा ब्राह्मणके घर, प्रथम ग
र्भ उनने लीयोथा ॥ महा सुखमें बेठे इंदर आसन
उनका कपाथा ॥ फिकर हुइ इंदर राजाकु, विचार
दिलमें करताथा अवध जोड कर देखा इंदने सब
उनकु मालुम पडताथा ॥ देशी फेंकनी ॥ देखा तीर्थं
कर ब्राह्मण घरक, फिकर हुइ इंदर राजाकुं ॥ बो
लावे हरणगमी देवताकु, ले जावो गर्भ त्रिशला घरकु ।
अशुभ निंद्रा डाली, गरभ हर ले चले उनके घरकु ।
तेजवंत नहीं छुप कर रहेता, मालुम पडता हे सबकु
॥ १ ॥ गरभ बदल कर चले हरणगमी आय बेठे
फिर आसनकु ॥ चउद सुपन फिरमातकुं देखे, जूदे
जूदे कहेते तुमकु ॥ पहेले सुपनगजवर देखा, रिषभ

सेंह कहेता तुमकुं ॥ चोथे लछमी माता आई, पांचमे पुष्पकी मालाकुं ॥ छठे चंद्रमा सातमे सूरज, आठमे देखी धजाकुं ॥ नवमे कलश अमीय जरेला, पदम सरोवर कहे तुमकुं ॥ देशी फेंकनी ॥ अगीयारमे खीरसागर देखा, वारमे विमान तुम कर ल्यो लेखा ॥ तेरमे रतनकी करो परिक्षा, चउदमे अग्निशिखाकु देखा ॥ सुपन देख कर राणी जागी, कहेने लागी स्वामीकुं ॥ तेजवंत नहीं छुप कर रहेता, मालम पकता हे सबकुं ॥ १ ॥ बकी फजर हुइ ऊठ सिद्धारथ, पूछे सुपन पाठककुं ॥ ग्यान ध्यानसें बोल्या पाठक, उत्तम जीव आया उदरकुं ॥ तीन भुवनके नाथ चक्री, होवेगा कहेता तुमकुं ॥ पूरण मासें जनम लियाथो, सिद्धारथ राजा घरकुं ॥ ओच्छव मोच्छव कारण इंदर, ले गये फिर मेरुकुं ॥ छोटी काया देखी उनोकी, संशय उपना इंदरकुं ॥ देशी फेंकनी ॥ तीन ज्ञान उदरसें आये, पगके अंगूठे मेरु कगाये ॥ फिर तीर्थंकरकुं नवराये, पीछें सिद्धारथ घरकुं लाये ॥ सात हाथकी काया ऊंची, उत्तराफाल्गुण नखेतरकुं ॥ तेजवंत नहीं छुपकर रहेते मालम पकता हे सबकुं ॥

लिया सो, कहेते इंदरकु ॥ ए बहोत कहे विस्तार, मैं क्या कहु तुमकु रे ॥ में क्या० ॥ तीनो० ॥ ५ ॥ ६९ ॥

॥अथ श्रीमहावीरस्वामीनी लावणी सित्तरेमी॥

॥ उत्तम जीव जब उदर आये हुवे सपना उनकी माताकु ॥ तेजवत नहीं छुप कर रहेता, मालुम पकता हे सबकु ॥ चोवीशी तो हो गइ यारो, जिनशासन जिनका चलता ॥ कोन पुरुषोंकु याद करु मेरे, रुव रुवेमें रम रहेतो ॥ देवानंदो ब्राह्मणके घर, प्रथम गर्भ उनने लीयोथा ॥ महा सुखमें बेठे इंदर आसन उनका कपाथा ॥ फिकर हुइ इंदर राजाकु, विचार दिलमें करताथा अवध ठोक कर देखा इन्नने सब, उनकु मालुम पकताथा ॥ देशी फेंकनी ॥ देखा तीर्थंकर ब्राह्मण घरक, फिकर हुइ इंदर राजाकु ॥ बोलावे हरणगमी देवताकुं, ले जाओ गर्भ त्रिशला घरकु ॥ अशुच निंद्रा डाली, गरज हर ले चले उनके घरकु ॥ तेजवत नहीं छुप कर रहेता, मालुम पकता हे सबकुं ॥ १ ॥ गरज बदल कर चले हरणगमी, आय बेठे फिर आसनकुं ॥ चउद सुपन फिरमातकु देखे, जुदे जुदे कहेसे तुमकु ॥ पहेले सुपनगजवर देखा, रिपज

णिकू ढोम खरीद क्युं, करता पथरुंकी ॥ देशी फं- कमी ॥ चेतो चेतो मेरे यार, रखो जिनजीसें प्यार, हो जाओ गानोसें तैयार, सुख अनंत अनंत पावोगे ॥ करो दयाधर्म वेपार, लान हो जावे अपार, जीनसें होवेगा उद्धार, ऐसे नवसागर तरोगे ॥ ऐसी वातां ही राखो हिरदे, खोलदो वज्जर कपाट ताला ॥ पण अष्ट करम चकचूर करत कोइ, चेतननी रे आला ॥ नाइ कलकी खबर नहीं कीसो घमीमें, क्या होने- ाला ॥ १ ॥ नाइ धरम करो कुछ ध्यान, वातां जै- नोकी झीणी ॥ पर दश चोलें संसार, पावे ओई सु- कृतकी करणी ॥ नाइ उंच खेत्र उंच धर्म दूध ओर, पुत्र मिले प्राणी ॥ पण पांचइंद्रियकु वश करे, सद्गुरु मीले ज्ञानी ॥ देशी फेंकनी ॥ जाणपणा हे अजब चीज, हे जिनोके वीच, उर सब हे कीच, समजे कोइ सुरता ॥ उे सच्ची बात मानो, मारग शुद्ध पीछानो, समकित- धारी होवेगो साणो, एही प्रगट वात कहेता ॥ अब आगे सुण जाओ रे, अब आगें सुण जाउं वात मर- मकी ॥ मरमकी समजे कोइ विरला रे ॥ पण जिनकुं पाया हेज्ञान, उही नर जपता हे माला ॥ नाइ कल०

॥ ३ ॥ सोवनवरणी काया जिनकी, जघपर सिंहका लंछना ॥ महा पराक्रम अनत बलवत सोही हुवका हे वरणा ॥ मागशर सुदि दशमीके दिने, संजम लिया महावीरने ॥ बार बरस लगें मोन रहे फिर, करम छज्मा दीया भगवाने ॥ वैशाख शुदि दशमोके दीने, न पाया केवलज्ञानें ॥ उस दिन देशना खाली गई जब, कोइ न लियेव्रत पच्चक्खाणो ॥ देशी फेंकनी ॥ अगियार गणधर संग जिनुके, चउद हजार साधु हे उनके ॥ बत्रीश हजार साधवी सब मिलके, साचे दाखवे हे सिद्धांतके ॥ कवि गिरिधर लाल हे सूरतके ॥ हुई सद्गुरुकी मेहेर सदा में, याद करु उन पुरुषोकु ॥ तेजवत नहीं छुपकर रहेते, मालम पडता हे सबकु ॥४॥ ७०॥

॥ अथ ससार उपर लावणी एकोतेरमी ॥

॥ जाइ कलकी खबर नहीं कीसी, पलमें क्या होनेवाला ॥ पण चेत चेत मन चेतन प्यारे, अब अवसर मिलना ॥ ए आंकणी ॥ भाई चेत शके तो चेत, मूठी भर ले हीम्की ॥ पण रतन चिंतामण हाथ आयाहे, कर जतना उनकी ॥ जाइ जान होत अपु अजाण होना, ए बात किनकी ॥ पण स्फटिक म

णिकू ढोरू खरीद क्युं, करता पथरुंकी ॥ देशी फें-
कमी ॥ चेनो चेतो मेरे यार, रखो जिनजीसें प्यार,
हो जाओ गानोसें तैयार, सुख अनंत अनंत पावोगे ॥
करो दयाधर्म वेपार, लान हो जावे अपार, जीनसें
होवेगा उद्धार, ऐसे नवसागर तरोगे ॥ ऐसी वातां
ही राखो हिरदे, खोलदो वजर कपाट ताला ॥ पण
अष्ट करम चकचूर करत कोइ, चेतननी रे आला ॥
नाइ कलकी खवर नहीं कीसो घमीमें, क्या होने-
वाला ॥ १ ॥ नाइ धरम करो कुछ ध्यान, वातां जै-
नोकी कीणी ॥ पर दश बोलें संसार, पावे आई सु-
कृतकी करणी ॥ नाइ उंच खेत्र उंच धर्म दूध और,
पुत्र मिले प्राणी ॥ पण पांचइंद्रियकु वश करे, सद्गुरु
मीले ज्ञानी ॥ देशी फेंकनी ॥ जाणपणा हे अजव चीज,
है जिनोके बीच, उर सब हे कीच, समजे कोइ सुरता ॥
उे सच्ची बात मानो, मारग शुद्ध पीछानो, समकित-
धारी होवेगो साणो, एही प्रगट बात कहेता ॥ अब
आगे सुण जाओ रे, अब आगें सुण जाउ बात मर-
मकी ॥ मरमकी समजे कोइ विरला रे ॥ पण जिनकुं
पाया हे ज्ञान, उेही नर जपता हे माला ॥ नाइ कल०

॥ २ ॥ एक पथी परदेशी फिरता, अटवीके म्यान ॥ पण दूरसें एक हस्ती देखा, मकाज मस्तानें ॥ जब धोक लगी दिलकु रे, ठेही नर लगाज जागनने ॥ पण जरी श्वास निःश्वास दोरुता, गीराज कूपमाने ॥ देशी फेंकनी ॥ देखो केसी गति हुइ, मूली वरुकी हाथ आइ, अदर लटकता हे जाइ, ओ नीचें देखे ॥ अदर चार हे भुजग, ए तो चधे बकजग, देखेसे होयेगा दग, गीरेगा उनके मुखमें ॥ ओ करे अंदेसा दीलमें, अकल गइ हुवा रे घेला, पण किस तरेसें निकलु वहार, मेरा कोन करे रखवाला ॥ जाई कल० ॥ ३ ॥ उपर मधु पूडेका घर, मांखीया लगी हे चटकाने ॥ पण वखी आपदा आइ ठेसें, फिर होती वेदाने ॥ उहांसें मधका टीपा गीरा, आया जाइके मुख म्याने ॥ पण लालच बुरी बला, ने अतें लोयेगा जाने ॥ देशी फेंकनी ॥ सुर विद्याधर आवे, दुःख उनका जावे, कार के कहावे, तु चल मेरा संग ॥ तुजे बाहार नीकालें, तुजे विमान बेठावे, तुजे देवलोकमु ले जावे, तु चले मेरी संग ॥ एेसा बोल उस मूलापर उदर एक काला एक धोला, ए दोने लगे कातरने गमकाता, मत रहेनां लाला ॥

नाई० ॥ ४ ॥ ऐसा सुखी सकल संसार, तुम अम दोनुं हे नाइ ॥ पण पिंडेसें नरम देख लो, करना च-तुराइ ॥ नाइ नवरूपी आ कुवा, आउखा रूपी वरू-वाइ ॥ पण रात दिन दो उंदर समजो, सुरता नर कोइ ॥ देशी फेंकनी ॥ कालरूपी हाथी, मधपूडा कु-टुंब सहु साथी, जीव होवेगा पंथी, अटवी संसार जाणो ॥ गुरु विद्याधर कहेना, उपदेश वारंवार लेनां, आपना कानुंसे सुननां, एही प्रगट वात कहेतो, धन धन आगम अरिहंता ॥ तुमारी ज्ञानकी लीला, पण पीयो प्रेम रस प्याला, अनुनव जागे रे लाला ॥ नाइ० ॥ ५ ॥ ॥ ७१ ॥

॥ सिद्धगिरिनी लावणी बहोंतेरमी ॥

॥ सिद्धगिरि सिद्धगिरी रे सिद्धगिरी ॥ सिद्धगि-रिने अमरापुरी, नहीं अधुरी, सुन ज्ञानी ॥ सूरजकुं-मका निर्मल पानी जी ॥ आदिनाथ रे आदिनाथ, रे आदिनाथ ॥ आदिनाथ, अजित प्रनु साथ, संनव अनिनंदन सेवा ॥ तुम हो देवनके देवा जी ॥ सु-मति० ॥ सुमति रे सुमति रे सुमति ॥ सुमति, आ-पदा मिट, निर्मल हुइ गति आप सेवा ॥ नवो नव

॥ १ ॥ एक पथी परदेशी फिरता, अटवीके म्यान ॥ पण दूरसें एक हस्ती देखा, महाज मस्तानें ॥ जब धोक लगी दिलकु रे, उंहां नर लगाज जाननें ॥ पण जरी श्वास निःश्वास दोमता, गीराज कूपमाने ॥ देशो फेंकनी ॥ देखो केसी गति हुई, मूली वमकी हाथ श्राइ, अदर लटकता हे जाइ, श्रो नीचें देखे ॥ अदर चार हे जुजग, ए तो बडे अजगर, देखेसे होयेगा दग, गीरेगा उनके मुखमें ॥ श्रो करे अदेसा दीलमें, अकस गइ हुवा रे घेला, पण किस तरेसें निकलु बहार, मेरा कोन करे रखवाला ॥ जाई कल० ॥ २ ॥ उपर मधु पूडेका घर, मांखीया लगी हे चटकाने ॥ पण वली आपदा श्राइ उसें, फिर होती वेदाने ॥ उहांसें मधका टीपा गीरा, श्राया जाइके मुख म्याने ॥ पण लालच बुरी बला, ने असें खोवेगा जाने ॥ देशी फेंकनी ॥ सुर विद्याधर श्रावे, दुःख उनका जावे, प्यार के कहावे, तु चल मेरा संग ॥ तुजे बाहार नीकाले, तुजे विमान बेठावे, तुजे देवलोकमु ले जावे, तु चले मेरी संग ॥ ऐसा बोल उस मूलापर उंदर एक काला एक धोला, ए दोने लगे कातरने गभराता, मत रहेना लाला ॥

कोज आज नक्तनका सारा जी ॥ गुणवंता० ॥ देशी फेंकनी ॥ अरनाथ जपुं दिन रात, महाराज जी ॥ मल्लि जिन मुनिसुव्रत, महाराजजी ॥ सुगति रे सुगति रे सुगति ॥ सुगति सुन कुगति, करुं जगति, नमि-नाथकी नेमजी गिरनार निशि आनी ॥ सूर०॥ सिद्ध० ॥ ३ ॥ एवीश रे एवीश रे एवीश ॥ एवीश, नमि जिन ईश; नमावुं शीश; समेतशिखर सुगतें गया ॥ वासुपूज्य चंपापुरी थया जी ॥ नेमिनाथ नेमिनाथ रे नेमिनाथ रे नेमिनाथ ॥ नेमिनाथ, पारस प्रनु नाथ, जोमी वे हाथ, महावीरस्वामी पावापुरी गया, वासुपूज्य चंपापुरी थया जी ॥ नेमिनाथ० ॥ देशी फेंकनी ॥ चोवीश जिन मनोवांछित फल, दातारे महाराज जी ॥ सेवकने ऊतारो, नवपार रे महाराज जी ॥ सुन छंद रे सुन छंद रे सुन छंद ॥ सुन छंद, हरफ करी बंध, तुट गया फंद, ऊनोसें सफल जिंदगानी ॥ सूरजकुंमोका निर्मल पानी जी ॥ सिद्धगिरि० ॥ ४ ॥ ॥ ७२ ॥

॥ अथ श्रीउपदेशनी लावणी त्र्होंतेरमी ॥

॥ साखी ॥ नव दव दहन निवारवा, जलद

करू तारी सेवा जी ॥ सुमति० ॥ देशी फेंकनी ॥ दा
नथी दुःख मिट गयो, होत सुख पाया, जा
जात्रा गया, पाप गुमाया ॥ दिलसें रे दिलसें रे
लसें, दिलसें शुद्ध भक्तिसें, चोखे मनसें, ठोग
कमटकी वानी ॥ सुरजकुण्डोका निर्मल पानी जी
सिद्धगि० ॥ १ ॥ ठहा रे ठहा रे ठठ , ठहा पदमप्र
स्वामी, कहु शिर नामी, जी अंतरजामी, करु पूजा
तरण तारणमें तुंही दूजा जी ॥ ठहा० ॥ सुपास रे
पास रे सुपास ॥ सुपास रे, पुरो मन आश, नवो च
दास, बजाव बाजा ॥ हाथमें चढ प्रभ राजा जी
सुपास० ॥ देशी फेंकनी ॥ सुविधि जिन नवमा,
वमा महाराज जी ॥ शीतल जिन दशमो, कहु
शमा महाराज जी ॥ प्रथम रे प्रथम रे प्रथम, प्रथ
तलाटी गया, वदना कीयो, नाम तो लिया, जनो
सफल जिंदगानी ॥ सूरज० ॥ सिद्ध० ॥ २ ॥ श्रेयां
रे श्रेयांस रे श्रेयांस ॥ श्रेयांस और वासुपूज्य,
मल अनत नाथ प्यारा ॥ गुण में गाठ आज तोरा
॥ गुणयता, गुणथता रे गुणयता गुणयता ॥ गुणय
धर्मनाथजी, शांति नाथजी, कुंथुनाथजी मोहनगार

चार दिनोकी देख चांदनी, ताहीमें लोभाना हे ॥ चेत० ॥ २ ॥ पूरव भवके पुण्य संयोगसें, नरकी देही पाना हे ॥ नव महिना तुं रह्यो उदरमें, दुःख देख्या असमाना हे ॥ चेत० ॥ ३ ॥ मल मूत्रकी अशुभ कोथली. ते मांहे संकट भीना हे ॥ रुधिर सुकाया आहारज कीना, प्रथमपणे तो लीना हे ॥ चेत० ॥ ४ ॥ जनम समय तो कोडि गुणेरी, वेदन ते देखाणा हे ॥ अब तो भूल गयो तुं प्राणी, एसा मूढ अजाना हे ॥ चेत० ॥ ५ ॥ कंठ कोरु ते सुइया सरखी, नाति कर चोबाणा हे ॥ तेथी वेदन अनंत गुणेरी, कंधे मुख झुलाणा हे ॥ चेत० ॥ ६ ॥ बालपणो तें खेलें गमायो, यौवनमें गरवाणा हे ॥ आठ पहोर कीनी मद मस्ती, खोटी लगन लगाना हे ॥ चेत० ॥ ७ ॥ रंगी चंगी देही राखे, टहेकी चाल चलाना हे ॥ आठ पहोर कीयो घरधंधो, लग रह्या आरतध्याना हे ॥ चेत० ॥ ८ ॥ साधु संतकी सुनी नहीं वानी, दान सुपात्र न दीना हे ॥ तप जप करणी कछुअ न कीनी, नरभव सफल न कीना हे ॥ चेत० ॥ ९ ॥ मात पिता सुता वेन भानेजो, [illegible]ाना हे ॥ तुं नहीं इशका ए नहीं तेरा,

घटा सम जेह ॥ जिनपूजा जुगतें करी, त्रिविधें कीजे तेह ॥ १ ॥ पूजा कुगति अरगला, पुण्य सरोवर पाल ॥ शिवगतिनी साहेलकी, आपे मंगलमाल ॥ २ ॥ शुज नैवेद्य शुज जावशुं, जिन आगें धरे जेह ॥ सुर नर शिवपद सुख लहे, हलीय पुरुष परें तेह ॥ म्हांजी सो हलीय पुरुष परें तेह ॥ ३ ॥ चन ॥ अजितजिन उपमा जारी, पुजे नहीं जे परचारी ॥ संजव मन सेविये साता, अजिनंदन जुगमें त्राता ॥ १ ॥ सुमति जिन संत हे प्यारी, पदमजी पहोंता निरवाणी ॥ हां रे जिनराज तेरा लखा, तेरे ।चन लखी काम कखा ॥ २ ॥ जज जिन तुंही तुंही० ॥ अरिहंत हंत जगवत वत बशता घट घटमें खेलता परमातमा जी ॥३॥ इति ॥ ७३ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी चम्मोतेरमी ॥

॥ चेत चतुर नर कहत सज्गुरु, किसि विधसें लग चाना हे ॥ तन धन योवन सयल कुटुंबा, एक दिवस तुज जाना हे ॥ ए आंकणी ॥ मोह मायाकी बरु जालमें, जिसम तु उलजाणा हे ॥ काल आहेरी चोट आकरी, ताक रहा नीसाना हे ॥ चेत० ॥ १ ॥ चिहुं गतिमें तो जटकत जटकत, तोहि अंत न आना हे॥

॥ अथ विनतिरूप लावणी पंचोतेरमी ॥

॥ तुमें निरंजन नाथ महारा, अरज करुं सो मा-
नोयें ॥ तुमें० ॥ ए आंकणी ॥ में कायर कंगाल कुसंग
दया डुचलकी आणी ए ॥ तुमें० ॥ तुम नक्तिमां सुर-
ति अण वनती, दुःखनर तन मेरो जाणीयें ॥
॥ तुमें० ॥ कहे जिनदास एही जगतमें, निर्ग्रंथ-
मत ताणीयें ॥ तुमें० ॥ १ ॥ ७५ ॥

॥ अथ श्रीकुंथुनाथनी लावणी गेंतेरमी ॥

॥ श्रीकुंथुनाथ करम काट, मुक्ति मोज पाया
॥ करुणा कर सब जीवनको, करणी करण धाया ॥
अब दुर्गतिको खोज खोयो, बाध बीज पाया ॥ श्री०
१ ॥ ॥ सुरपति होय हजूर, चरणें चित्त लाया ॥ अब
नक्तिनाव हृदये वसाया, जिनवर जस गाया
॥ श्री ॥ २ ॥ नवि नव जनम कियो सफल लीयो,
लान माया ॥ अब नरक दुःखसें मर कर, जिनदास
शरण आया ॥ श्री० ॥ ३ ॥ ७६ ॥

॥ अथ श्रीनेमिनाथनी लावणी सत्योतेरमी ॥

॥ चोक पहेलो ॥

॥ श्रीनेमि निरंजन बालपणे ब्रह्मचारी ॥ प्रभु

स्वारथ सगें आधीना हे ॥ चेत० ॥ १० ॥ कृत अकृत कर धनकु मेल्या, घणासु वेर बंधाना हे ॥ माया तो कछु साथ न चाले, जहांकी जहां रहानां हे ॥ चेत ॥ ११ ॥ ऊचा ऊचा मंदिर चणाया, कीया घणा का रखाना हे ॥ घडी एक नहीं राखत घरमें, जाखत जाः मसाना हे ॥ चेत० ॥ १२ ॥ छिन छिनमांहे आयु छीजे, अजसी केसा जरना हे ॥ कोड जतन कर पड जीवका, तोपण आखर मरनां हे ॥ चेत० ॥ १३ ॥ चक्री केशव मण्डलिक राजा, इंद चंद सूर दाना हे ॥ काल आहेडी हे सरब जगतको, तो क्यु धरे गुमाना हे ॥ चेत ० ॥ १४ क्रोध मान माया मदमातो, परकी पीर न जाना हे ॥ आशा तृष्णा चरत चउगनी, करता जन्म मराना हे ॥ चेत ० ५ योवन गमाया बुढो होइ बेठो, तोही समज न लीना हे ॥ धर्मरत्न कछु हाथ न लीनो, परभवमें पछताना हे ॥ चेत० ॥ १६ ॥ सुखा नंदजी सुखके दाता, हीरानंदगुन ठाना हे ॥ रामकृष्ण उपदेश सुनाया, भव्य जीव समजाना हे ॥ चेत० ॥ १७ ॥ संवत अढार वरस सत्तसठे, सादडी सहेर सुहाना हे ॥ फागुण सुदी तेरशके दिवसें ए उपदेश सुनाना हे ॥ चेत० ॥ १८ ॥ ॥ ३४ ॥

॥ श्रीनेमनाथजीनी लावणी अठयोतरमी ॥

॥ चोक बीजो ॥

॥ गुणवंता श्री जिनराय, सभामें आवे ॥ प्रणाम करी हरि हेत, धरी बोलावे ॥ मनमोहन प्राण आधार दरशन मुझ दीजे ॥ हो बंधव आपण बलनी, परीक्षा कीजे ॥ तुमे वालो अमचो हाथ, वदे गोपाला ॥ प्रभु हरिनो वाले हाथ, कलम ज्युं नाला ॥ श्रीनेम तणुं बल देखी, अचरिज पावे ॥ प्र० ॥ १ ॥ प्रभु लंबावे निज हाथ, सकल गुणखाणी ॥ तिहां करे खराखर जोर, ते सारंगपाणी ॥ न नमे तिलमात्र लगार, टिकायो नारी ॥ जाणे हिंडोले हिंचतो, होय गिरधारी ॥ देखी बल अद्भुत तेज, चमक्यो आवे ॥ प्र० ॥ २ ॥ हरि बोले मधुरी वाणी, नय मन आणी ॥ नाखे हलधरने एम, नेम बल जाणी ॥ हो बांधव महारा नेम, सकति अति महोटी ॥ में दीठी नजर हजूर, वात नही खोटी ॥ ए राज तणां ते काज, में बला कहावे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ए महाबलियो बलवंत, ठे बाले वेशे ॥ मुझ राज उलाली एक, पलकमें लेशे ॥ एम करतो मन आलोच मइनो दाणी ॥ इण अव-

मुख पूनमको चंद, अतुल बलधारी ॥ ए आंकणी ॥ लिये बरोबरीके मित्र, अति सुरसाला ॥ रसरंगे आवे जदुपति, आयुधशाला ॥ कहे मित्र सुणो प्रभु ए छे, शंख उदारा ॥ नहीं गिरधर पाखें ओर, बजावनहारा ॥ करकमलें लेकर शंख, बजायो भारी ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ सुणी शंखशब्दकी धुनी, अति विकराला । खलभलिया शेष ने फणी, सत पाताला ॥ चित्त चम का मनमें जबन, पतिका ईश॥थरहर थरक्यां त्यां व्य तर, पति बत्रीश ॥ मूकी निज ठामने, नासंती सुरनारी ॥ प्रभु० ॥ सागर गज्या गिरिवर ने, डुंगर कोड्या महोटा ॥ त्रोडी बंधनने नाठा, गज रथ घोडा ॥ उ छलियां सायर नीर, चढ्यां कल्लोले ॥ भांगी तरुवरनी डाल पयो, रुमझोले ॥ त्रुटा वर मोतीहार, कबूकी नारी ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ शशी सुरज तारा, वैमानिकना स्वामी ॥ सहु करे प्रशंसा अहो, प्रभु अंतरजामी ॥ प्रभु चक्र फेरवी, लियो धनुष टंकारे ॥ गिरधरनी गदा लेइ करमां, नेम फेरे भकारे ॥ कहे मायक मुनिवर चिंता, जइ मुरारी ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ ॥ ३३ ॥

ड्विजयने कृष्णजी एम कहेतां, सहु करे विवाहनी वात आमण नथी लेता ॥ कहे माणक प्रभुनेप दमणी परणावे ॥ कहे० ॥ ४ ॥ ॥ ७० ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी एंशीमी ॥

॥ चोक चोथो ॥

॥ मल्यो जादव केरो वृंद उपन कुल कोडे, प्रभु करी सणगार ने नेम चढ्या वरघोडे ॥ ए आंकणी ॥ तियां भेरी नफेरी पंच शब्द वजडावे, मली वाला कोकिल कंठ मंगल गावे ॥ कोइ हाथी घोडे बेठा रथ सुखपालें, पायक अडतालीश करोड, ते आगल चाले ॥ मल्या दशे दसार हलधर, हरिजी जोडे ॥ प्रभु करि शणगार ने नेम चढ्या वरघोडे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ वाजे तंबालु जरी फरके नीशान, बहु साजन महाजन जोर चलावे जान ॥ एम करतां प्रभुजी उग्रसेन घेर आवे, देखी मुख नाथनुं, राजुल मन सुख पावे ॥ तव करते पशुओ पोकार लाखो करोडे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ ढोरी-ने पशुनो वृंद रथमो वाले, घर आवी प्रभुजी दान संवत्सरी आले ॥ सुणी वातने राजुल मूर्च्छा धरणी ढलती, हे नाथ शुं कीधुं कोमी विलापी करती ॥ लइ संयम

सर वाले देव गगनमें वाणी ॥ कहे माणक प्रभु सं यम लेशे जावे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ ॥ ३० ॥

॥ श्रीनेमनाथजीनी लावणी ओगणाएंशीमी ॥

॥ चोक त्रीजो ॥

॥ हरख्योहरि निज चित्त सजोमा आवे, कहे रुक मणी ने नेम विवाह मनावे ॥ ए आंकणी ॥ अति सुंदर बाला नवजोबन मदमाती, दीपे ससिवयणी सहस व त्रीश सोहाती ॥ जिनजीनो झाली हाथ हरिजी लावे, निज मंदिर अंतेउरमें आवे ॥ बोले पटराणी आठ देवर ने नावे ॥ कहे० ॥ १ ॥ कोइ छांटे अधिर गुलाल केसरना पाणी, कोइ घाले गलामां हार, पुष्पना आणी ॥ राधा ने रुक्मिणी बोले मधुरी वाणी, हो देवर म्हारा पर णीजे एक नारी ॥ तुज जादवकुल सणगार समान सो हावे ॥ कहे० ॥ २ ॥ मुख मचकोडीने प्रभुनो पालव झाले, सामलिया सुंदरी एक विना किम चाले ॥ बहु मली कृष्णनी नार वरणवी कहेसी, न करोजी बालक बुद्ध, ठंसाचा देसी ॥ वनितानां सुणीवचन मुख मल काये ॥ कहे० ॥ ३ ॥ बाला सहु बोली मुख मलकतु जाणी, मान्योजी मान्यो नेम परणशे राणी ॥ श्रीसमु

जोगी, वडे जोर तपस्या करता करतो ॥ ॥ नीचें लगाता ज्वालो जोगी, वडे वडे झांके खोता ॥ बार बरसकी उमर जिनजीकी, छोटेपनमें बहोत कला ॥ बरोबरीके लीये सोबती, तपसीकुं देखन चल्या ॥ ४ ॥ ज्ञान देखकें वोले जोगीसें, ऐसी तपस्या क्युं करता ॥ उं जोगी तेरे वडे लकडेमें, नाग नागिणी दो जलता ॥ पारसनाथ जोगीकुं कहेता, तोवी तपसी नहीं सुनता ॥ लकडे दीये फेंक जंगलमें, लोक तमासा देखंता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने, नागनागणी जला दीया ॥ शरन नवकारा दीया नागकुं, धरणेंद्रकी पदवी पाया ॥ बमी उमेदसें आया साहेब, संवत्सरीका दान दीया ॥ मात पिताकी आज्ञा लेकर, महाराजाने योग लीया ॥ ६ ॥ राज छोमकें चले जंगलमें, जुगतीसें काउस्सग्ग कीया ॥ वडे धीर गंजीर तुमने, तीन लोकमें नाम कीयो ॥ उष्णकालकी वमी धूपमे, निरंजन निराकार खडा ॥ कमठासुरने किया कमाका नत्तमंडल वादल चमा ॥ ७ ॥ सोहि दिनकों कमठासुरने , पीछला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी सेना लेकर, जलकूं जलदी बुलवाया ॥ वमा किया घमघोर जोरसें, पवन चलाया

दपती करम कठिनने तोडे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ अब उपत्
केवलज्ञान मुगतिमां जावे, प्रभु सिद्ध बुद्ध अजराम
पदवी पावे ॥ गुरु रूप कीरति गुण गाते रंग सवाया।
मेसाणे रही चोमास, श्रीजिनगुण गाया ॥ मुनि माणक
लावणी गावे मनने कोडे ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ ८० ॥

॥अथ श्रीपार्श्वनाथजीनी लावणी एक्याशीमी॥

॥ धगरूधम् धगरूधम् बाजे चोघडा, सवाइ डंका साहेबका ॥ ठनन ठननं अवाज होता, महेल बनाया गगनोंका ॥ श्री कल्याण पारसनाथ नामका नित बाजत हे चोघडा ॥ तीन लोकमें बडा साहेब, पारस नाथ अवतार बडा ॥ १॥ बणारसि नगरीमें तेरा जनम हे, मात वामाके नंदा ॥ अश्वसेनके कुलमें शोभे, जैसा शरदपूनमचंदा ॥ स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावे ॥ तेत्रीश क्रोड देवता मिलकर, ओच्छव करनेकुं आवे ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता कोइ नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंदर अरज करता, चंद सूर्य करता सेवा ॥ केइ सुरनर साहेबके आगे, अरज करता खडा खडा ॥ जिनके स्वरूपको पार न पावे, जिनका गुण हे सबसें बडा ॥ ३ ॥ दूर देशसें आया

जगो जगोपर शिखर चढाया, बडा काम दरवाजेको ॥ चामंरूलके आगे शोजता, मूल गंजारा आरसका ॥ पीछें पचीश देरीयां शोजित, सिरे काम सिंहासनका ॥ १३ ॥ मूलनायकके उपर सोहे, सहस फणो महारा-जजीका ॥ चोमुखी चतुराई वनी हे, उसा काम में नहीं देखा ॥ अढारसें पांसठ्ठ सवाई, मुहूर्त फागुण मास बमा ॥ शुदि त्रीजकुं तखत बेठे, जगो जगोपर नाम चला ॥ १४ ॥ देश देशके संघो मिलकर, तेरे द-र्शनकुं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वमी तेरी अकल माया ॥ धर्मचंद जोइता सवाइने, वमा स्वामि-वात्सल्य कीया ॥ सकल संघकी आज्ञा लेकर, वमा शिखर नीशान दीया ॥ १५ ॥ करमचंदने देव-चंदने, खेमचंदने खूब कीया ॥ पारसनाथकुं तखत बेठाकें, जगो जगोपर नाम किया ॥ कीर्त्तिविजय गु-रुराजजी प्रणमुं, पाया गुरुका राज वडा ॥ गलुवचंद साहेबके आगें, जिनशासनका काम वमा ॥ १६ ॥ तेजा गावत चंग रंगसें, ग्यान ध्यानसें खमा खमा ॥ हाथ जोमकर अरजी करता, पारसनाथजी तुंही वडा ॥ वमा काम तेरे हे साहेब, [illegible] हो कहा

मतवाला ॥ कडकड़ धड़कड़ हुआ कडाका, चमका यी जका अजुवाला ॥ ८ ॥ मूसल धारे मेघ वरसता, गगन गाजता चोताला ॥ साता सूरकी वडी जमीमे, प्रभु खडा है मतवाला ॥ नाक बरोबर आया पानी, नाथ निरंजन धीर खडा ॥ पराजय नहीं होय जीनुका, ऐसा प्रभुका ध्यान चडा ॥ ९ ॥ सकटसें सिंहासन डोल्या, हुवा घटका अवाजा ॥ अवधिज्ञानसे इन्द्रे देख्या, धाई धाई धरणीराजा ॥ धरणीधर जलदीसें आया, पद मावतीकु सग लीया ॥ पद्मावतीने लीये शिरपर, शेषनागके छत्र किया ॥ १० ॥ कोड उपाय कीये क मठने, कुछ इलाज नहीं चलता ॥ तरनेवाला साहेब उनकु, डुबनेवाला क्या करता ॥ जोते श्री जिनराज हारके, कमठ हाथ दो जोड खडा ॥ धरणीधर साहेबके आगे, अरजी करता खडा खडा ॥ ११ ॥ केवल लेई शिवपुरकु पहोंचे, पारसनाथ शुभ मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योत दीपककी, तपे तेजका अजुवाला ॥ बीसनगरमें पारसनाथका, देवल बनाया सेताला ॥ वडे देवलमें इन्दर सोहे, घट बाजता चोमाला ॥ १२ ॥ वडी जुगतसें सिंहासन कर, कोट बनाया देवलका ॥

मंडे ॥ धन० ॥ २ ॥ पुण्ययोगें विजयाकुमरी मली गु-
णवंती, शुद्ध चोशठ कलानी जाण महा बुद्धिमंती ॥
गजगमणी रमणी बोले कोकील वाणी, तनु कंचन
सोहंत वदन नाल जलकाणी ॥ अतिअधर लाल
कोमल कपोल बहुत सोहे, कर चरण उदर नयनक-
मल जोइ मन मोहे ॥ बहु हर्षे नावशुं विजयकुमरजी
वीया, पुण्ययोगे जोड मली परणे घरप्रीया ॥ धन०
॥ ३ ॥ हवे विजयकुमरजी सोहे सुंदर तलाइ, अब
सुरसुंदरीकी देवरूप ठवि ठाई ॥ बहु कानें कुंडल रत्नें
जम्मियां सोहे, शिर लाल मुकुट मुक्ताफलें सुरनर मोहे॥
गले हार रत्नें जम्मिया सोहे बहु नारी, कर कंकण
चमकण मुद्रडियां ठवि न्यारी ॥ अरु वदन नाल
निर्मल शशि नेत्रें सोहे, इत्यादिक गुण करी विजय-
कुमर मन मोहे ॥ धन० ॥ ४ ॥ तब रंगमहेलमें बैठां
पलंग बिठाई, प्रीतमको सेजा सुंदर तन सज आई ॥
अणियालां कज्जल वीजलीयां चमकंती, कर जोमी
जत्ती पियु आगल मलपंती ॥ चमके चूम्मियां सार म-
णियें चमकंती, नाकवेसर वेण जुम्मरियां जमकंती ॥
१२ कर कडियां जम्मियां मुद्रम्मियां दमकंती अरु नेउर

जोता ॥ शिवरमणीकु वरी जिनजीने, भवि जनके सुखके दाता ॥ १७ ॥ ॥ ७१ ॥

॥ अथ श्रीविजयकुमरजी अने विजया कुमरीनी लावणी व्याशीमी ॥

॥ श्री वीतराग जिनदेव नमु शिर नामी, कहु शील तणो अधिकार मुक्ति जिण पामी ॥ जिहां वछदे शमें कोसंबी नयरी जाणी, पण दखण देशमें प्रगट पणे वखाणी ॥ तिहां शेठ तणो सुत विजयकुमर वैरागी, सुणी शील तणो महिमा मनमें लय लागी ॥ तब हाथ जोडकर मुनिपें सोगन मांगी, हुआ एक मासमें कृष्णपक्षका त्यागी ॥ १ ॥ धन विजयकुमरकी करी कमी कछु नांजी, जिणे चित्त चोखे शील आदर्यु नर जोबनके मांजी ॥ ए आंकणी ॥ पाले श्रावकधर्म शुद्ध ज्ञान मुख उचरे ॥ पोसह पडिक्कमणां सवर करतां विचरे ॥ करि दया दान संतोष शील शुद्ध पाले, धरी धर्मध्यान और आतमकु अजुआले ॥ दृढ समकितधारी शंका कल्ला नवि आणे, पर पाखंडीको परचो नहीं वखाणे ॥ देवादिकनां दुःख देखी धर्म नवि छंडे, चमते परिणामें करणी अधिकी

शील रुच्यो मनमांहि, पहिला परणेका परिणाम हता नही कांहि ॥ धन० ॥ ८ ॥ गुरुणीपें किया में शुक्लपक्षका सोगन, अब तो म्हारे हुआ दोनुं पक्षका आगन ॥ प्रीतमजी तुम तो परणो नारी अनेरी, पण पहेली इच्छा शील तणी थी मेरी ॥ कहे विजयकुमरजी अहो वल्लभ गुणवंती, अब तुम हम जोडी मली बहू दीपंती॥हवे हवे रत्न छोड कुण काच ग्रहे सुण प्यारी, शुद्ध शील पालशुं मुक्ति रमणी छे नारी ॥ धन० ॥ए॥ बहु देवलोकनां सुख विलस्यां वार अनेरी, पण मन इच्छा पूरण भइ नहीं कुणकेरी ॥ जीव नरक निगोद भम्यो भवसायरमांही, बहु काल गमायो गरज सरी नहीं कांही ॥ अब उत्तम कुल अवतार लियो छे आई, पुण्ययोगें मुनिवर योगवाई पाई ॥ अब मात तात सब भ्राता मिले स्वारथका, चढते परिणामें शियल पालशुं नित्यका ॥ धन० ॥ १० ॥ अब अल्प संपदा देखी कहो किम खोइये, ॥ पण वाटी साटें खेत खोया दुःख होइये ॥ अब एह वात अपने नहीं करना किसीकुं, जो हम दोनुंनें नियम लिया हे खुसीकुं ॥ कर जोडी कुमरी कहे कुमरशुं अरजी, पण वात ए छानी

पगमें घूघरियां घमकती ॥ धन० ॥ ५ ॥ जब वद
दिखावे काम जगावे बाला, इन्द्राणी सरखी ठवी रू
रसाला ॥ प्रीतमको आदर मागे सुंदरी ठमाइ, त
मन उल्लसंती करती आशा साइ ॥ कहे विजयकुम
रजी अहो सुंदरि जले आइ, पण हमणां तुमशुं का
नहीं मुज कांइ ॥ दिन तीन लगें तो नहीं मदनक
कांइ, फिर तम हम पीछें सुखें सुखें दिन जाइ ।
धन० ॥ ६ ॥ कहे कुमरी कुमरकों कहो कारण
छांइ, हु सुंदर तन सजकर आइ छुं ठमाइ ॥ अ
अवसर जरियां केम तजो प्रीतमजी, मेंनियम लिय
छे तु सुंदरी नहीं समजी ॥ तब कुमरी पूछे कहो प्री
तमजी हमकुं, अब किसी जातिका नियम लिया है
तुमकुं ॥ मुज बालपणाथी शियल रुच्यो मनमांहि,
किया कृष्णपक्षका नियम मुनिपे आइ ॥ धन० ॥ ७ ॥
तब विजयाकुमरी कहे मुख कुमलाइ, मुज मनकी
आशा आश रही मनमांहि ॥ कहे विजयकुमर सुण
सुंदरी थयु कुमलाई, पण जिम छे तिम मुज वेग कहो
फुरमाई ॥ तब विजयाकुमरी विरजपणु मन लाई, नी
चा नेत्रे करी वात करे मुरजाइ ॥ मुज बालपणाथी

करी होंशे हुं आयो, शीलवंत कुमर कुमरीको दरिसन पायो ॥ धन्य तुमचे कुलमे उपना उत्तम प्राणी, श्री विमल केवल शोभा घणी वखाणी ॥ धन० ॥ १४ ॥ एक सेजें सोवे शील निर्मलुं पाले, बहुं बाल ब्रह्मचारी आतम अजुवाले ॥ बहु अचरिज सरखी वात सूणी हुं आयो, पण भाव मुनिको दर्शन निर्मल पायो ॥ तब मात तात कहे कहोजी हमकुं नहाना, तुम किसी भांतिका नियम लियो है ठाना ॥ तब नेत्र नीचां करी वातकहे विस्तारी, अब संयम लेना इछा भई हमारी ॥ धन० ॥ १५ ॥ जब मात तातपें मागे कुमरजी आग्या, तब नात जात सब कुमरकुं कहनें लाग्या ॥ तब बहुत हठनशुं लही कुमरजी शिक्षा, चढते परिणामें दोनुं लीनी शुद्ध दीक्षा ॥ बहु कठिन होइनें तपस्याशुंलय लाई, भवि जीव सुधारया शुद्ध समकित पद पाइ ॥ अरे जीव अब ढती वांठे किम ढटकाई, धन्य विजय विजया (कुमरी) नें अधिक करी अधिकाई ॥ धन० ॥ १६ ॥ चढते परिणामें करणी कीधी निर्मल, मुनी मुक्तें पहोता दोनुं पाम्यां केवल ॥ श्री दोलतरामजी जीवाजी स्वामी, रुषि लालचंद गुणग्राम किया शिर

किम रहेशे कुअरजी ॥ सुणी ससरो सासु घणा खी जशे तुमसु, पण कोसी शरमसें रहो जायशे हमसु । ॥ धन० ॥ ११ ॥ सुण प्रीतम प्यारी एह आपणं शिक्षा, यह बात प्रगटी तब निश्चै लेषी दीक्षा ॥ प कण सेजें सोवे सुंदरी अरु सांइ, सुते सूते बात कां ज्यु वहेन ने भाइ ॥ दो बेर करे पडिकमण सामायि श्राई करे दान शील तप जली भावना जाई ॥ तिह बार बरस वही गयां एम करतां, पण बात विस्तरं शीलपणे विचरतां ॥ धन० ॥ १२ ॥ तब दक्षिण दे शमे विजया विजयजी केरां, श्री विमल केवली किय वखाण घणेरां ॥ बेहु चरमशरीरी ठे महा उत्त प्राणी, सहु अचरिज पाम्यां सुणो केवली मुखवाणं ॥ सुणी जिनदास श्रावक हुर्ड बहुत प्रसन्न, हु जाइ करु तिहां हर्ष धरी दरसन्न ॥ बहु हर्षे भावशुं आव्य नगरी कोसंबी, श्री विजय कुमरनी बात सुणी श्र चनी ॥ ॥ धन० ॥ १३ ॥ बहु हर्षे भावथी मलियो कु अर कुअरिआं, परिवार जिमाया बहु हर्षे मन धरि यो ॥ तब मास तात कुमरका घणु उमाहा, तुम कहो शेठजी कुण सगपणथी आया ॥ श्रीजैनधर्म स्नेहे

सरवरको, जल घन चावे॥जग चातक मास वसंत, कोकिल हरखावे ॥ मूल लग्यो नेह तुम साथ, चरणको चेरा ॥३॥ जिन० ॥ जस पायो चोमासे बीच, अवंती नगरी ॥ सोहागन गावे गीत, नीर जरी गगरी ॥ श्री संघ अठाई महोत्सवकी, चित्त धररी ॥ गुरुवार डूज तिथि आश्विन, में वदि वररी ॥ नित्य नव नव महोत्सव हुवे, शांति जिन देहरा ॥ ४॥ जिन० ॥ जवि जीव करे जिनजक्ति सदा हरखाई ॥ मुज रहो सदा अनुकूल, प्रजु सुखदायी ॥ अब फली मनोरथमाल, विजयपद पाई ॥ रणधीर विजयनो लाज, लावनी गाई ॥ अब सरण तिहारी नाथ, अवंती मेरा ॥ ५ ॥ जिन० ॥ सवईया एकतीसा ॥ प्रजुसेंती प्रीत कर, मुनिकी संगति कर, ज्ञान जर ध्यान धर, कुमति निवारकें ॥ तन मन वच कर, जिनवर सेवा कर, द्रव्य अरु जाव धर, पूजो नेम धारकें ॥ धपमप धों धों कर, अनुपम वेशधर, तत्ता थेई ताला वर, नाचो पाप टारकें ॥ सदगति होय जब गुरुरणधीर जब, कहे लाज दीजें अब, अवंती जुहारकें ॥ १ ॥ इति अठाई महोत्सव लावणी संपूर्ण ॥ ८३ ॥

नामी॥ सय सवत अठार अरुशर्छे अवसर पाया, शहेर कोटा केरा रामपुरे गुण गाया ॥ जिहां श्रावक बहु वसे श्रद्धा गुणवंता, जिहां साधु साधवी आवे विहार करता ॥ धन० ॥ १७ ॥ इति श्रीविजयकुमरजी अने विजयाराणीनीलावणी समाप्त ॥ ७२ ॥

॥ अथ अवतीजिन अठाई महोत्सव
लावणी आशीमी ॥

॥ प्रभु करो सेव चित्त लाय, जाय भव तेरा ॥ जिन वरशुं कर तु प्रीत, मिटे जवफेरा ॥ टेक ॥ जीव रम्यो कुमतिके संग, सुमति नहीं पायो ॥ बहि गयो अनंतो काल, कुगुरु जरमायो ॥ दुःख सह्यो निगोदके बीच, नरकमें ठायो॥ में पुन अकरके न्याय, मानवगति आयो ॥ प्रभु आयो शरण में आज, काज करो मेरा ॥ १ ॥ ॥ जिनवर० ॥ जिनजक्तिके परजाव, रोग सब जावे ॥ श्रीपाल नरेसर कोढ, दुर सब थावे ॥ जिम अजयदेव सूरिनो, रोग गमावे॥सुख पावे जस विस्तार, प्रजू जो ध्यावे ॥ प्रजु तुम सम नहीं कोई देव, जगतमें हेरा ॥२॥ जिन० ॥ मुरू घस्यो हियाके मांहि, और चित्त नावे॥ घन केकी अवाज सुनी, हर्षी उलसावे ॥ मन गमे नहीं

सरवरको, जल घन चावे॥जग चातक मास वसंत, को-
किल हरखावे ॥ मूल लग्यो नेह तुम साथ, चरणको
चेरा ॥३॥ जिन० ॥ जस पायो चोमासे बीच, अवंती
नगरी ॥ सोहागन गावे गीत, नीर जरी गगरी ॥ श्री
संघ अठाई महोत्सवकी, चित्त धररी ॥ गुरुवार दूज
तिथि आश्विन, में वदि वररी ॥ नित्य नव नव महो-
त्सव हुवे, शांति जिन देहरा ॥ ४॥ जिन० ॥ जवि जीव
करे जिनजक्ति सदा हरखाई ॥ मुज रहो सदा अनु-
कूल, प्रजु सुखदायी ॥ अब फली मनोरथमाल, विजय-
पद पाई ॥ रणधीर विजयनो लाज, लावनी गाई ॥ अब
सरण तिहारी नाथ, अवंती मेरा ॥ ५ ॥ जिन० ॥ स-
वईया एकतीसा ॥ प्रजुसेंती प्रीत कर, मुनिकी संगति
कर, ज्ञान जर ध्यान धर, कुमति निवारकें ॥ तन मन
बच कर, जिनवर सेवा कर, द्रव्य अरु जाव धर, पूजो
नेम धारकें ॥ धपमप धों धों कर, अनुपम वेशधर, तत्ता
थेई ताला वर, नाचो पाप टारकें ॥ सदगति होय जब
गुरुरणधीर जब, कहे लाज दीजें अब, अवंती जुहारकें
॥ १ ॥ इति अठाई महोत्सव लावणी संपूर्ण ॥ ८३ ॥

॥ श्रीस्थुलिभद्रजीनी अने कोश्यानी लावणी चोराशीमी ॥

॥ राजठक्कर्वे लावणी ॥ ए देशी ॥ मंजन चीर तिलक ओपत, चतुर शणगार सफार धरी ॥ मनोहर शिरपर चीवर चंगी, कोसंजीकि शोज करी ॥ १ ॥ चिहु दिश जाली फुलकी जाली, दीपक माली ज्योति धरी ॥ धुर परिणाम लकामह रामा, रामा रंगे गेल करी ॥ २ ॥ नव नव रंगें ठद उपैया, ठंचरीया रस गुण जरीयां ॥ ठमक ठमक पग जूलख ठमके, ऊमके रमऊम ऊांऊरीयां ॥ ३ ॥ हृदयानंदन केसकी चदन, फूल अमूल मलक मलकें ॥ खलक खलक कर कंकण खलके, ऊलक ऊलक टीको ऊलकें ॥ ४ ॥ ऊरमर ऊरमर मेहुलो वरसे, जलसें जरि जरि वादलीयो ॥ घनन घनन घनघोर अघोर, गाजे राजे वीजलीयो ॥५॥ ड्डुक ड्डुक अविवेका नेका, जेका सोरस जोर घने ॥ कुहुक कुहुक रसीला नीला, कोकीला सहकार वने ॥ ६ ॥ बहुल पिपाशी मेघजलाशी, फली वनवासी वेलडीयां ॥ प्रेम तणा रसरेला चाल्या, पण थूलीजद्द नाव चलीया ॥ ७ ॥ टहुक [illegible] रि केका ठेका,

करता केकी माल्हे ठे ॥ वैरीनी परे ए वरसालो, वि-
रहीने घणुं साले ठे ॥ ७ ॥ धप मप मादलके धोकारा,
कंस ताल वीणा सखरी ॥ ताथेई ततथेई तान न चूके,
मूके नेत सहेत धरी ॥ ए ॥ फरसत कणतर कुंतल
नूतल, चंचल अंचल कर लेती ॥ गीत रीत मदमोद
विनोदें, फरक फरक फुदकी देती ॥ १० ॥ ललक ल-
लक ढलकंती काया, काच ढलाया में ठाया ॥ जीव-
नके पर नेह उपाया, बचन वदे करती माया ॥ ११ ॥
प्रीतम प्रेमकी बात विचारो, भ्रमन भ्रमन रोतो नमरो
॥ दग्धा केतकी नस्में लोटत, पंकित पूठत कांई करो
॥ १२ ॥ नमर कहे मोय देह दहे एक, विरह केतकी
नारी तणे॥तस रक्षायें विरहे समशुं, रमशुं नही मरुवे
दमणे ॥ १३ ॥ कहे कविता श्यामलता सब तनु, पीली
पुंठ किशुं कीधी ॥ प्रेमकी चोट लगी मोय बहुली,
तास उपर हलदी दीधी ॥ १४ ॥ करि चित्त बदने ल-
टके चटके, मटके नवि अटके रागें ॥ प्रीतकी रीति
अनुपम नाटक, करतां प्रेम दान मागे ॥ १५ ॥ कहे मु-
नि हेली सुणो अलबेली, नाटक नवि करतां आवे ॥ श्री
शत्रवीर वजीर पसायें, नवनाटक मणजो नावे ॥ १६ ॥

॥ अथ आत्मोपदेशी लावणी पचाशीमी ॥

॥ सुणो श्री जैनधर्म जवि प्राणी, आतमवाणी अरदासी ॥ आत्मसरूप अध्यातम चेतन, शुद्ध आतमा अविनाशी ॥ १ अनुजव जाकी मति प्रगटी हे, सुखरूप आतम जान्या। शुद्ध सुचद सदा अति निर्मल, आत्मज्ञान आत्मेमें मान्या ॥ २ ॥ परवशरंगी होई पर वशमें, बहुरंगी बहु हे अंधा ॥ बाह्योज्यतर करे मगरूरी, दुःख भरे मूरख छंदा ॥ ३ ॥ मूलग्यान हित कहे तुमचा, साहेबसें वधी बुध जागी ॥ आतम सत्य अध्यातम प्रगटे, स्यादवाद तिहां रूढ लागी ॥ ४ ॥ द्वैत अद्वैत कह्या नवि जावे, क्या ठगावे गूढ स्वप्ना ॥ अधो अधकी परंपर जासी, ठेठ क्यु अब पोर परना ॥ ५ ॥ चारु वेद टले सिद्धांते, मूरख कहे मेरा तेरा ॥ ग्यानकी बात ग्यानीही जाने नहीं मूरख मेरा तेरा ॥ ६ ॥ विस्तार वाणी देख तु मूरख, अंधा क्यु तेरे दिलमें ॥ सदगुरुकी तो बात नहीं जाया, फिर क्या काम जया इनमें ॥ ७ ॥ जोगाज्यासी जोगाज्यासी, तरनेकी गति हे न्यारी ॥ पूरण सरूप घर दीपक प्रगटे, ब्रह्मरूप जुख टले जारी ॥ ८ ॥ हंससरूप पिछे कोड प्ररा. ग्यानी

पुरुष वे हे हंसा ॥ क्षीर नीरका भेद बतावे, मिट जावे
हे मनसंसा ॥ ए ॥ हंस सभाव हंस हुइ जाने, काग
जाति तो पत खोवे ॥ जीव शिवका सरूप घटमांहे,
समजु विचारी चित्त जोवे ॥ १० ॥ सद्गुरुकुं चित्तमें
धर लीना, मानवभव पुण्यें पायो ॥ कर अपनी भल-
पन तुं प्राणी, मूढ जन्म ऐलें गमायो ॥ ११ ॥ दान
शियल तप भाव सुखाणी, संतोष ठेर सुमतां ठाई ॥
धरमध्यान जीवदया विवेका, आतमरसमो सुखदायी
॥ १२ ॥ क्षमा खरुगसें अरि कालनकुं, जीत लिये हे
जगनाथा ॥ अजरामर भये साहेब सच्चा, सेवो प्रभु
शिवपुर सच्चा ॥ १३ ॥ जीवघात कहे जे परमेश्वर,
मूढ आतमदर्शी काचो ॥ ज्ञान रहित धरम सब जूठा,
साचकुं खोजे सोइ साचो ॥ १४ ॥ गुरुग्यान दीप लेइ
हाथमें, क्युंहि करे तनमें सामा ॥ जाण हुई अजाण
क्युं होवे, समजीयें आतमरामा ॥ ५ ॥ निर्भय ज्ञान
चिदानंद तेरा, धर्मपर्यायें हे अनंता ॥ अनंता पर्यायें
धरमज प्रगटे, भेदें भाखे भगवंता ॥ १६ ॥ तत्वधरम
जैनगुरु ज्ञानी, नहीं हे पक्षका संगी ॥ पक्षापक्ष कथे
उस कुमतिकुं, अध्यातम हे सत भंगी ॥ १७ ॥ ज्ञां

परे ससारसमुद्रमें, एही हे श्रधार कुश्या ॥ जनम मरण जय श्यु नहीं श्रावे, सुण रे शीखामण सुश्रा ॥ १८ ॥ ज्ञानरूप खांमा धारपर चलनां, एही हे श्रजी श्रथिर बाजी ॥ हसविलास हे हस सजामध्य, तिहां हे श्रनु जवराजी ॥ १९ ॥ गुण प्रगटपा विन मुक्ति डुर्लज, जी वका रूप गहे सो जाती ॥ जला न बूरा न जाणे श्र पना, जिसकु जीतर हे काती ॥ २० ॥ दगो दृज बात श्रथिर बाजी, करमज रूठे कौन सगा ॥ समज्या विन तेरी कोन गति हे, तेरो जेद हे हसकागा ॥ २१ ॥ जीवज एसे डुर्गति रुलसे, मानवजवकुं विगोइ ॥ प रनिंदा परधरमकु ध्याता, मरे नरकमें श्राप रोइ ॥ ॥ २२ ॥ ग्यानकथा धर्मकथा सुने, पीडासु पकरी जावे ॥ जिने दिया श्रो में पीडा दीया, मूरखि क्या मानव कहावे ॥ २३ ॥ धिग हे श्रपनी नात जातकु, मात तातकु लजवाया ॥ इस सुजाव काल लख नांहीं, वा यस हंसकु ठग श्राया ॥ २४ ॥ हंसा होश्के मोती चु गणां, श्रागम सरोवरके मांहे ॥ मोती श्रथाग श्रताग - विवेका, हे कोइ गणती नांहि ॥ २५ ॥ चौद राज जूमि मध्य जागें, हसा कागा चूक जाता ॥ हसा ग्यानी वि

वेक विचारे. समऊ ग्यानकी तुं बातां ॥ २६ ॥ या संसार वेरागर नरिगो, हुइया एका अवतारी ॥ परम सिद्ध पदारथ पामे, आ ठाम हे सुखकारी ॥ २७ ॥ नव्य अनव्यकी खबर जो पावे, नव्य ते उपदेशा पावे॥अनव्यकुं प्रतिबोध न लागे, चउद लोक उनसे नावे ॥ २७ ॥, सुख वांछे जीव सर्वे सुखकुं, सिद्धशिलाकुं ते ध्यावे ॥ करम नाथ नाथ्यो सुखवासी, खेंच पीछही फिर ध्यावे ॥ २ए ॥ लख चोराशी परिच्रमन करे, जीव काग उपाधिको ॥ हंस सुनाव नूल गयो संगें,जीवज काग अनादिको ॥ ३० ॥ तज उपाधि अबाधक जानी, टले हि भ्रमना आतमकी ॥ हंस चालकी चलगत जानो, प्रीत बने परमातमकी ॥३१॥ धन्य धरामैं सदगुरु पाये, धन्य ज्ञान सच्चा माने ॥ धन धन प्रनुजी केवलज्ञानी, जैन धरम धन धन जाने ॥ ३२ ॥ अज्ञानीका तज उपदेशा, नेदें समऊं या वाणी ॥ कहे रुषन नेकी विचारत, मुक्ति लहेगा नवि प्राणी ॥ ३३ ॥ इत्यात्मोपदेश लावणी संपूर्ण ॥ ७५ ॥

॥ अथ श्रीकविदीपविजयजीकृत श्री ऋप
देवजीनी लावणी गर्शीमी ॥

॥ दोहा ॥

आदिकरन आदि जगत् आदि जिणद जिनराज
धुलेवनाथ जाचो धणी, परनु श्री महाराज ॥ १

॥ लावणी ॥

॥ काश्यप गोत इक्वाग वशमें, मरुदेवा जन
जायो ॥ नाभि नरेसर वस उजाल्लन, आदि धर्म ज
प्रगटायो ॥ १ ॥ चोसठ सुरपति देव देवी मिल, म
र गिरपे न्हवरायो ॥ इसो ऋपज निधि प्रगट कल्प
तरु, सुर नर मुनिजन नित्य ध्यायो ॥ २ ॥ लघु देश
नगर धुलेवें, जास ददामा धुरता है ॥ ३ ॥ जाको म
हिमा अपरपारा, कविजन कीर्ति करता है ॥ ३
आदी मूरत काल असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरीं
॥ सुरपति नरपति वंदीत पद जुग, बलि पूजत सूर
चदा ॥ ४ ॥ लाख अग्यार हजार पंचासी, बरस पी
चशे पचासा ॥ इतने बरस पर लंका गढमें, पूजित
रावण गुनरासा ॥ ५ ॥ रामचन्द्र सीता अरु लछमन
ठ मूरत पूजन ध्याये ॥ नयरी अयोध्या जाते अ

विष, नयर उजेणी ठहराये ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणां धर्मनकी ॥ बाप करम अरु आप करमकी, जई लगाइ मरमनकी ॥ ७ ॥ आप करमके उपर नृपनें, कुष्टी वरपें परणाइ ॥ मयणां चिंते कांइ नवाइ, करम लखी सो बन आइ ॥ ८ ॥ इक दिन जिनपूजन गुरुवंदन, आइ श्री जिन मंदिरपें ॥ वंदन पूजन करकें इकचित्त, ध्यान धरे मनकंदरपें ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ मयणासुंदरीकी ध्यान स्तुति ॥

(मोतीदाम छंद)

॥ तुंहि अरिहंत तुंहि जगवंत, तुंहि जिनराज तुंहि जगसंत ॥ तुंहि जगनाथ तुंहि प्रतिपाल, तुंहि मनमोहन गाजि दयाल ॥ १ ॥ तुंहि नवनंजन नाव सरूप, तुंहि अरिगंजन रंजन नूप ॥ तुंहि अविनाशी तुंहि वीतराग, तुंहि महाराज तुंही वरु नाग ॥ २ ॥ तुंहि गुणधाम तुंहि विशराम, तुंहि नवनिध तुंहि वरुनाम ॥ तुंहि अघनाश तुंहि अविनाश, तुंहि मतिमंत तुंहि मतिवास ॥ ३ ॥ तुंहि गुन केवलरूप अनंत, तुंहि जगतारन तारन संत ॥ तुंहि जगदगेश

तुहि जगध्यान, तुहि चिद्रूप तुहि जग मान ॥ ४॥ तुहि मम मात तुहि मम तात, तुहि मम भ्रात तुंहि मम दास ॥ तुहि शरणागत राखणहार, तुंहि दुःख दोहग टालणहार ॥ ५ ॥

॥ लावणी ॥

॥ करु अरज एक तोपे जिनपति, कत कुष्टसें नहीं करते ॥ पूरव करमके लिखित लेख जे, किसके टारे नहीं टरते ॥ १ ॥ पण तुझ शासन जगत् देख ना, जगत् ढंढेरा बाजत हे ॥ आप कर्म अरु जैनथ मैंके, फल पार्श्वे यो लाजत हे ॥ २ ॥ यो दुःख मोसें सह्यो जात नहीं, आदिनाथ जग रखवालो ॥ करुनो करकें रोग निवारन, गुन कीजे जग प्रति पालो ॥ ३ ॥ यक्ष प्रसन्न होय फल बीजोरा, हाथ तणो फल तव दीनो ॥ मयणा तब उल्लास जई मन, चिंते सब कारज लीनो ॥ ४ ॥ सो दिन नमण नीर तनु फरसे कुष्ट रोग सब नासत हे ॥ कामदेव अरु अमर समोवरु, नृप श्रीपाल सोहावत हे ॥ ५ ॥ या कीरत प्रभु तिहारी भूतल, प्रगट प्रबल हे जस तेरो ॥ आसो चैत्र मासमें महिमा, देश देशमें प्रभु तेरो ॥ ६ ॥ फिर बागरु देश

वमोद नगरमें, जगपर प्रनु करुना कीनी ॥ कितने वरस लग महिमा महिमा, अविचल नूतल ऋद्धि दीनी ॥ ७ ॥ दिल्लीपर तुर कान नयो तब, पादशाह लस्वा आयो ॥ नूत नूत्त पथ्थरकी मूरत, जरूमुल्लांसें उखरायो ॥ ८ ॥ बहोत दिनां लग होई लराइ, थाक्यो यौं वाचो बोले ॥ देव हिंदको बमो जागतो, यौं बोलत फिर फिर मोले ॥ ए ॥ सुनो बात काजी मुल्लां तुम, एक बातसें त्रासेंगा ॥ गो ब्राह्मण प्रतिपाला कहाई, गोवधसें यौं नासेगा ॥ १० ॥ गोवध करन लगे जब नजरें, देख शके क्यौं प्रतिपाला ॥ करन युद्ध जब नये महा बल, शस्त्र ऊमोऊम विकराला ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ महा युद्ध करने लगे, घाव चोराशी अंग ॥
॥ करी मलोखां गारुन्नी, आय धुलेव सुरंग ॥ १ ॥

॥ लावणी ॥

॥ गाम धुलेवें वंश जालमें, गुप्त रहे हें प्रनु धरती ॥ गाय एक कोमी बनियनकी, आई उहां चरती चरती ॥ १ ॥ स्त्रवे तिहां पयधारा शिर पर, सांऊ समे फिर नहीं हूफे ॥ रीश करी तब गोपालन पर, गवपाल

थरथर धुजे ॥ २ ॥ दूजे दिन गो सारें आयो, सबो भेद कह्यो मनियनपे ॥ शेट आज जय नजरें देख्यो, चकित भयो है तनमनपे ॥ ३ ॥ मध्यरातमें सुपनो दीनो, ऋषभनाथकी मूरत है ॥ मंदिर निकासो करो आपसी, जिसर मूरत पूरत है ॥ ४ ॥ नव दिनमे सब धाव मिलासी, मत काढे तुं नव दिनमें ॥ कियो शेठने हुकम प्रमायों, आये संघ बहोतो दिनमें ॥ ५ ॥ कइ उपवासी कइ व्रतधारी, कइ अणुआयो पाव चले ॥ कइ लोकक डु कर याधा, कर्या प्रभुको दरस मिले ॥ ६ ॥ यु सब लोकों दरसतरसकी, कहे लोक मूरत काढो ॥ लाठ लाठ महाराजकी मूरत, संघ सबे लीनो आगो ॥ ७ ॥ जबर जस्तपें दिवस सातमें, लापसि बाहिर सब कीने ॥ अंश अश जर अण रहा य, संघ लोक दर्शन दीने ॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें द्रव्य दिखायो, सं घे मिल देवल कीनो ॥ मध्य बिराजे ऋषभ तखत पर, कलियुगमें यों जस लीनो ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ संवत अठार श्रेसठमें, भाठ सदा शिवराय ॥
कियो धिंगानो दुष्टने, भांखू बरन बनाय ॥ १ ॥

॥ मोतिदाम छंद ॥

॥ सदाशिव राय चिंते मत एह, लुंटे बहुधाम जमी प-
र जेह ॥ जिह्वां पत नाथ धुलेव कहाय, लखो लख-
डव्य भंडार सुनाय ॥ १ ॥ जावां अब लुंटण गाम धु-
लेव, ग्रहुं सब माल जई ततखेव ॥ आयो निज फोज
लेइ दल गाज, तोपां दोय साथ लीया बहु साज ॥ २
॥ कंपु दोय लार लीय फीरंगाण, उटां भर साथ ली-
ये कोक बाण ॥ तवां बहु लोक कहे महाराज, नहि
इह कारन कृत्य अकाज ॥ ३ ॥ ए तो वह जाजल दे-
व कहाय, रहे नहीं लाजा तिहांरिय कांय ॥ तवां फि-
र बोले सदाशिव भूप, ग्रहुं सब माल अबां चढी चूप
॥ ४ ॥ इस्यो कहि आवत दुष्ट करूर, कियो नजरा-
णह नाथ हजूर ॥ रख्यो नहीं नाथ तवां नजराण,
भयो मन चकित मान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चिं-
त भंडारी बुलाय, मिठे वच बोल सबे ललचाय ॥ लई
संग आय मुकाम मझार, कियो तब कूच लइ सब ला-
र ॥ ६ ॥ करे तब गाम पुकार पुकार, भंडारी सवेय
पुकार पुकार ॥ करो अब वहार नाथ दयार,
गयो किहां आज गरीब निवाज, चढो अब
वाहर राखण लाज ॥ ७

॥ दोहा ॥

॥ ऊण समे कोठ शेठको, महाण तारण काज ॥ गये अधिष्टायक नाथजी, भेरु गये महां गाज ॥ १ ॥ सुणो अरज ऋषिनाथजी, सहेर धुलेव मझार ॥ कियो अकारज दुष्टने, शीघ्र चलो जन तार ॥ २ ॥ आप तुरत महाराजजी, करवा जन सजाय ॥ दो घोडे दोनुं चढे, भेरु अरु प्रतिपाल ॥ ३ जिन्ह कोप आपे कियो, दश दिशि फोज हजार ॥ मार मार न्चोत रफर्थे, जई लडाई त्यार ॥ ४ ॥

॥ भुजगप्रयात छंद ॥

॥ कुकू कुकू कुकू वहे कोक थार्या, सणर्णं सणण तीर तरकस वार्या ॥ धुबाके धमाके वहे नाल गोला, जिसा कर्कसा जम्मरा नयण कोला ॥ १ ॥ किते अंगपे शम्मरा घाव लागे, किते मारथे कपते दूर जागे ॥ किसे दंतपे तरण लेवे वराका, किते थरथरे श्वास छोवे निराका ॥ २ ॥ किते रसुल्ला इलल्ला पुकारे, किते दीन व्हेके खुदापे संजारे ॥ किसे नाथपे केशरां खुन माने, किते नाथकु जागती जोत जाने ॥ ३ ॥ सदा शिवने घाव लग्गो अटारे, पुनी जाउ जशवंत दोनु

संहारे ॥ बम्हो कोप जानी सबे फोज नाजी, हुइ केशरी नाथरी जीत बाजी ॥ ४ ॥ सदाशिवने आखरी अटक लीनो, सवा पांचशे रुकमरा खून दीनो ॥ ईस्यो नाथ धुलेवरो मर्द गाजी, सदा केशरानाथरी जीत बाजी ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ या विध कलियुग जगजना, तारया कइ जिनराज ॥
दीपविजय कविराजकुं, महेर करो महाराज ॥ १ ॥

(मोतीदाम छंद)

॥ तुंहि नव निद्ध तुंहि अम सिद्ध, तुंहि मन वंछित वंछित रिद्ध ॥ तुंहि सरदार तुंहि किरतार, तुंहि सरणागत दीनदयाल ॥ १ ॥ तुंहि घटकुंभ तुंहि गवि धेन, तुंहि सुरवृछ तुंहि मम सेन ॥ तुंहि दछणावत दायक देव, तुंहि विसराम तुंहि वमसेव ॥ २ ॥ तुंहि मम प्राण आधार जरूर, तुंहि मम इछित दायक नूर ॥ तुंहि मम रूप तुंहि मम रिद्ध भंमार अगाह ॥ ३ ॥ तुंहि मम मंत्र तुंहि मम यंत्र, तुंहि मम सत्य तुंहि मन तंत्र ॥ तुंहि गछनायक तुंहि श्रीपूज्य, तुंहि मम पूज्य तुंहि जग पूज्य ॥ ४ ॥

॥ लावणी ॥

॥ नाथ धुलेवा कीरत सुनके, देश देश नृप आवत हे ॥ केशरमें गरकाव रहेवें केशरनाथ कहावत हे ॥ १ ॥ शहेर परगणे देश देशावर, फिरे दुहाइनाथ नकी ॥ हिंदु मुसल्ल सब राणा हाजर, पूरे इछित सब मनकी ॥ २ ॥ जलथट थलथट थाट घाटमें, रण रावण दुःख दूर हरे ॥ इकचित्त ध्याने जे नित्य समरे, अखय खजाना अमर भरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप धमप धमप मप, ताल पखावज राजत हे ॥ गरुगरुदों गरुगरुदों गरुगरुदों गरुगरुदों, धोंधों नोबत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदुपति पातशाह उदेपुर, भीमसिंहके राजनमें ॥ यह लावणी खूब बनाई, सकल सबके साभनमे ॥ ५ ॥ संवत अढार पच्चोत्तर वर्षे, फागुण सुदि तेरस दिवसे ॥ मंगलके दिन दीपविजयकु, दर सन परसन दो उलसे ॥ ६ ॥

॥ कलश छप्पय छंद ॥

॥ समवरसन जग सरन, तीन लोक कलिमल हरन ॥ धुनि वरसत जल भरन, भरन पोप पावन करन ॥ जुगल धर्म नीति हरन, सब करम छंघ च

न जरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन सुकनका, वरन सुध चरन ॥ इंद चंद मद जुगल सेवन, जगत विंद तारन तरन ॥ दीपविजय कविरज वहादुर, ऋषज्ञनाथ असरन सरन ॥ १ ॥

॥ पुनः छप्पय छंद ॥

॥ ऋषज्ञनाथ महाराज, सवे दुःखदारिद्र जंजन ॥ ऋषज्ञनाथ महाराज, सवे नूप मनरंजन ॥ ऋषज्ञनाथ पृथिनाथ, समरथो वाहर धाये ॥ ऋषज्ञनाथ पृथिनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय कविराज वहादुर, खलक मुलक हाजर रहे ॥ कलिजुग जायो देव तुं, सुर नर सव कीरत कहे ॥ २ ॥

॥ इति श्री श्रीमंतश्रीआतपत्रधारक श्रीत्रिलोकी पातशाह महाराजाधिराज चक्रवर्त्तीनरेंद्रसुरींद्रसेवितचरणारविंद श्रीऋषज्ञनाथजीकी लावणी स० ॥ ७६ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी सत्याशीमी ॥

॥ नेमनाथ मोरी अरज सुनीजे, में हुं दासी चरणुंकी ॥ तोरण आये फिर मत जाउ पिया, तुमकुं सोगन यादवकी ॥ नेम० ॥ १ ॥ जान लेइ तुम व्याहन आये, लारे सेना माधवकी छपन्न कोटि कुल यादव आये,

ए अवसर नहिं फिरनुंकी ॥ नेम० ॥ १ ॥ रथ फिराके गिरिवर धाये, हमकु ठरी नव जवकी ॥ मेरे सांवरे श्याम सलुने, अब सो हु नहिं रहेनेकी ॥ नेम० ॥ ॥ ३ ॥ सुण सजनी मे तोकु कहु छुं, देखुं शोवा गि रिवरकी ॥ नेम श्यामकु देखी आणंद, तत्क्षण पाये पकनेकी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ राजुल सुंदरी तिहांथीनि कली, जाइ चढी टुके सरकी ॥ मातपिता बंधव सहु ठांमी, जाशु संगें जादवकी ॥ नेम० ॥ ५ ॥ हाथजो मके विनवे राजुल, बात सुणो पियु मुज घरकी ॥ इ मकु ठांम चले निरधारी, अब हुं प्रीतम सरणुंकी ॥ नेम० ॥ ६ ॥ नेम कहे तु सुण हो राजुल, विषयारस हे विष सरखी ॥ ए ससार असार निरतर, कर क रनी एक तरनुंकी ॥ नेम० ॥ ७ ॥ पियुजी पासें संय म लीनो, जिनसें कारज सरनुकी ॥ तपस्या करिन उत्तम करणी, ए जवपार उतरनुकी ॥ नेम० ॥ ७ ॥ पियुजी पहेलां राजुल नारी, पहोतां हे परमपदकी ॥ केवल पाये नेम सिधाये, पछी शोजा हे जिनकी ॥ नेम० ॥ ए ॥ चतुर कुशल सो कहत लावनी, जिनसें कारज सरनुकी ॥ अरिहंत ध्यान धरो दिलमांहे. फिर

फेरा नहि फिरनुंकी ॥ नेम० १० ॥ इति ॥ ८७ ॥

॥ अथ श्रीपारसनाथनी लावणी अठ्याशीमी ॥

॥ तेना गावत रंग चंगशुं, ज्ञानध्यानसें खूब खमा ॥ तीन लोकमें सच्चा साहेब, पारसनाथ अवतार वमा ॥ १ ॥ सहुसें दिल लगा निशानी, उपर हे निगोबानी ॥ अंजलिगत जल जरथा जैसा, जरोंसा पिरूका ऐसा ॥ २ ॥ औरत उंर महेल क्या करनां, छोम कर एक दिन चलनां ॥ तेरा नहि कोइ कीसी बातें, चलेगा एकला रातें ॥ ३ ॥ हम याद करे अमंग प्रजुसें, जा मिले गौतमही हमसें ॥ सैयुं यो रोज दिल बेठो, सदा शुजवीर घरे बेठो ॥ ४ ॥ अरे जिनराज मेरा सच्चा, तेरे बिन सबी काम कच्चा ॥ जज जन तुंहि अरिहंत जगवंत साधु संत संत, थैथा घटमें खेलता परमातमा ॥५॥ इति ॥८८॥

॥ अथ श्रीपारसनाथनी लावणी नेवाशीमी ॥

॥ पोरसनाथ विख्यात जगतमें जिनशासनमें जयकारी ॥ जस गुण महिमा अपरंपार हे, ध्यान धरे सुर नरनारी॥ए आंकणी॥नाथ निरंजन जवदुःख जंजन, तत्त्वज्ञानके दरिया हे ॥ ज्योतिस्वरूपी जगदानंदन.

जग जस कीर्त्ति वरिया छे ॥ पा० ॥१॥ नगर बनारसी मरते जगमें, अश्वसेन नृप अधिकारी ॥ वामाकूखें कुख अजुवालण, प्रगट्या पारस पटधारी ॥ पा० ॥२॥ नरक निगोद थया अजुवाला, आसन कंप्या सुरपतिका ॥ छपन दिक्कुमरी करवा आइ, जन्म महोत्सव जगपतिका ॥ पा० ॥ ३ ॥ चोसठ सुरपति प्रणमी प्रभुने, मेरु गिरि लई न्हवरावे ॥ करी महोत्सव माता पासे, मूकी सुर सुरगे जावे ॥ पा० ॥ ४ ॥ अनुक्रमे जोबन पाया जिनजी, विषयारसमें वरणावे ॥ मात पिता करी हरखे महोत्सव, राणी प्रभावती परणावे ॥ पा० ॥ ५ ॥ अद्भुत रूप अनूपम जोडी, दंपती विलसे सुख सारा ॥ महेल मनोहर मनकी मोजां, प्रेम पुरातन धरी प्यारा ॥ पा० ॥ ६ ॥ एक दिन गोखें रमतां रस भर, सारी पासा सुखकारी ॥ लोक कुशा हुस कौतुक करतां जातां देखी नरनारी ॥ पा० ॥७॥ पास कुमर तब पूछे प्रेमे, कहां चलत हे जन सारे॥ लोक कहे एक आये तापस, कठोरके हे खमनारे ॥ पा० ॥ ८ ॥ खलक चले दुनियां दरसनकुं, लेइ पूजाकी पतराली ॥ मिष्टान्नादिक मोदक मेवो, स्थान

ानकुं घृतसाली ॥ पा० ॥ ए ॥ सुनके पास कुमर पण जोवा, आवे आश्रम काननमें ॥ दीठा जोगी तपही तपता, तमक तेजसें ताननमें ॥ पा० ॥ १० ॥ पंचकुंम पावक परजलता, अधविच वेठा आसनसें ॥ ऊर्ध्व नुजा करी ग्रही जपमाला, ध्यान धरंता नासनसें ॥ ॥ पा० ॥ ११ ॥ नूयें लूठंती जहारो लेइ, इगमुद्रित करी मुनियासें ॥ लाल सिंदूर लपेटा नाले, अंगविनूति नुसियासें ॥ पा० ॥ १२ ॥ नाग जलंता देखी दयाला, अवधिज्ञान धरी माननसें ॥ कहे जोगीकुं क्या तन जाले, जीवदया विन जाननसे ॥ पा० ॥ १३॥ तव जोगी कहे सुणो नृपनंदन, मत ठेमा तुम मुनियनकों ॥ गज घोमा रथ खेल खेलाउ, जाउ मरावो मुनियनकों ॥ पा० ॥ १४ ॥ हम जोगी अवधूत एकीला, वनवासी विचरंदा हे ॥ गुरुके ज्ञान सही घट नीतर, जोगी जिहां शंकरंदा हे ॥ पा० ॥ १५ ॥ कोना गुरु तुऊ नेख धराया, नवि उलखायो धरमनकु ॥ दीक्षा नरम नरोया तुऊकुं, काया कष्ट करननकुं ॥ पा० ॥ १६ ॥ हम गुरु धरम पिठाना एसें,, मायममता नवि धरता ॥ कंचन कामिनी संग न करता,

अविनाशी पद अनुसरता ॥ पा० ॥ १७ ॥ काष्टथितोसें नाग निकाखा, कान सुनाया नव पदकुं ॥ प्रभुदरसें परमेष्ठिप्यानें छइ अवतार असुर इदकु ॥ पा० ॥ १८ ॥ पास कुमरकी थई परशंसा, कमठ खजाणा लोकनमें ॥ द्वेष धरतो पास प्रभु पर, रहेतो अहोनिश शोकनमें ॥ पा० ॥ १९ ॥ कष्टक्रिया अज्ञान करीने, देव थयो घन गर्जनको ॥ अवधि प्रयुजी वेर सुनावे, पूरव पारस तर्ज्जनको ॥ पा० ॥ २० ॥ निज घेर आवी नाथ निहाले, चित्त राजुल नेमीने ॥ सुख सासंर तजी तनमनथी, वरसी दानें व्रत लीने ॥ पा० ॥ २१ ॥ तप जप सजम समता सगे, रहेता अहोनिश ध्याननमें ॥ वकतले ठचा काउस्सग्गें, तव कर लागी ताजनमें ॥ ॥ पा० ॥ २२ ॥ जिननासा लगे नीर भराणां, तोजी न चलिया ध्याननसें ॥ आसन कंपित देखत अपनां, धरणीधर जुवे ज्ञाननसें ॥ पा० ॥ २३ ॥ दमता देखी अपना साहेब, कमठासुर मद हारणकु ॥ धरणीधर पद्मावती आवे, श्रीजिन कष्ट निवारणकुं ॥ पा० ॥ ॥ २४ ॥ सहसफणा शिरछत्र बनाथी, धरणीधर रहे कर जोडी ॥ पद्मावतीकुं खडी शिर साही, कमठ ह

ास्यो जइ दोसी ॥ पा० ॥ २५ ॥ दुंदुभिनाद वजाया
वें, रंग राग गुण उच्चरंता ॥ धरणीधर पद्मावती
ाचे, ठमके पायल पग धरता ॥ पा० ॥ २ ॥ झांजर
कणके नेपूर रणके, घमके घुघरी पायनमें ॥ घुमरी देता
ूठण लेता ततथई तान मचावनमें ॥ पा० ॥ २७ ॥
ाव नवि नांते नाचती नाटक, ललि ललि नाक नमा
वत हे ॥ अष्ट करम दल दूर हटावी, शुक्लध्यान प्रभु
ध्यावत हे ॥ पा० ॥ २८ ॥ नाथके चरणे सीस नमावी,
अमर गया निज आवासे ॥ प्रगट्या केवल ज्ञान प्रभु-
कुं, पहोता शिवपुर सहवासे ॥ पा० ॥ २९ ॥ ज्ञान
ध्यानसें गोठ मचावो, रंग मचावो अनुभवको ॥ जिन-
गुण गावो भावना भावो, ताप शमावो भव दवको ॥
पा० ॥ ३० ॥ अधिक मास उगणीशेएके, श्रावण
मासें सुदि शाली ॥ रंगविजय रही राजनगरमें, कही
लावनी लटकाली ॥ पा० ॥ ३१ ॥ इति ॥ ८९ ॥

॥ अथ श्रीपारसनाथनी लावणी नेवुंमी ॥

॥ प्रभु पारस भज ले भाई, ज्ञानध्यान संयम स-
मकितसें, सुधरे कमाई ॥ मेल मन अंतरकी आंटी

करम उदय चेतनकुं पकी जय, निगोदकी घाटी ॥ तू टक ॥ महादुःख पाया, महाराज महादुःख पाया, जिनवर मुखमें नहि गाया, नहि तिसउर शाता पाई ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ तन धन जोबन नहि अपना, कुटुंब कबीला मेरी मंदिर, रजनीका सुपना ॥ तू० सबी घिरखाले ॥ महा० ॥ संपत् संगत नहीं आवे, फिर चेतन मन पस्तावे धरम निज कर ले सुखदाइ ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ जरम अंतरगतनें लागो, विषय हेत कु मतिसें विषय रस, चाखणकु लागो ॥ तू० ॥ पापसंग चाले ॥ महा० ॥ चेतनकु नरकमें राखे, जिनमारगकुं नहि चालें, जपो जिनवरकु लय लाई ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ मेरा पाप भवोभवका कापो, मुक्तिदान अमर सुर पदवी, सेवककु आपो, ॥ तू० ॥ विनति मानो ॥ महा० ॥ अरदास हैयामां आनो, मुझकु अपनो करी जानो, वेग दीगा जिनवर नाई ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ अरज आप कों सेवक करता, भवजलमाहि पार उमारो, में निगो दर्से मरता ॥ तू० ॥श्रीजिनवाणी ॥ महा० ॥ अमृत सु अधिकी जाणी, जिनदास हईयामां आणी, कीर्ति जिनवरकी में गाइ ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथजीनी लावणी एकाणुमी ॥

॥ प्रभु पास जिणंदा, दरसन देखी आणंदा, मुख पूनमका चंदा, सास कमलकी सुगंधें जी ॥ निर्मल कांति अति रूपाली, सब कहेते जगवाने जी ॥ ए आंकणी ॥ वालपणेके स्याने, प्रभु हे बहोत सियाने, चले कमठा पूजने, हुवे घोडे पर स्वारे जी ॥ आजु-बाजु सव चले सिपाइ, गमरुंदा चोपदारे जी ॥ देशी फेंकती ॥ नगरी वाणारसी हे गाम रे, उहां तापसका एक धाम रे, करता अगनानी काम रे, पाउं वांध्या ऊनने ऊंचे, शीश गया फिर नीचें, नहि दया धरम रुचे, ऊने धिग्वाइती तो अगनेंजी ॥ करुणावंत कृपाके सागर, आये वात देखने जी ॥ प्र० ॥ १ ॥ ऊसकों कहेते जगवान, सुण तापस अजाण, तुं तो हे अगनान, नहि खटकायकी तो खवरे ॥ नाग तो एकीला जलता, कोष्टके अंदरे जी ॥ प्रभु निकाला वहार, सब देखे नर नार, सेवक दिये नवकार, धरणीधर पदवी पाया जी ॥ देशी फेंकती ॥ हुये धरणीधर वडवंती रे, नागरायकी हो गइ गति रे, अगिले जवकी वात हुई ठती रे ॥ प्रभु किया उपगार, दिया

मन्त्र नमकार, तुम हो जगत आधार, ऐसी स्तुति करें जी ॥ धरणराय पार्श्वनाथ सासत माने जी ॥ प्र० ॥ २ ॥ प्रभु पारस स्वामी, हुवे मुगतिके कामी, सुख ससार वामी, चारित्र अगाकार कीया जी ॥ मसाण भूमिके स्थाने जाकर, काउस्सग्ग अपने लीया जी ॥ कमठकी हुई पूरी, मरि हुवा मेघमाली दूरी, उने मात विचारी मेरा, दाव तो आजे आया जी ॥ देशी फेंकरी ॥ वैरजाव आव्या दिख मगने रे, खुब घटा च ढावी गगने रे, वरसाद पाणी पवनें रे, ज्यां थे पारस जगवान, प्रभु चुकता नहि ध्यान, पाणी चढाए पहेली चढाई चूख, धरणीधर राय हे दूर, उनके कपतो आसनें जी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ पद्मावती धरणीधर, रूप महाखदमी कर धर, वेठाया खघपर, पतो पास प्रभु किरतारे जी ॥ सहस्रफणीका नाग हो कर, छत्र किया शिरपरें जी ॥ मेघमाली मस्तान, क्यु करता तोफान, जुल्म करता असमान, आज लेवी तेरी खबरे जी ॥ मूढमति महापापी तु तो, क्यु उतरेगा जवपार जी ॥ देशी फकसी ॥ प्रभु पाये खगाया मेघमाली रे, बहोत तकसीर हुइ हमारी रे, जाउ चरण

कमल बलिहारी रे, होय जयवंता जयकारी रे ॥ जगतारक जिनदेवा, करे चोसठ इंद्र सेवा, तुम नामें नवनिध मेवा, जवोजव हैं तोरे शरणें जी ॥ अष्ट करम चकचूर लगे जवसागरमें तरनें जी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ त्रेंवीशमो जिनराया, एक शो वरसनुं आया, शिवनगरीकुं सिधाया जी ॥ जन्म मरण जय टाली ए तो, अव्याबाध सुख पाया जी ॥ में तो प्रणमुं प्रजु पास, जवोजव तारो दास, पूरो मनकी आश ,मैंने गुण तमारा गाया जी ॥ आवागमन मिट जाय, ऐसी कीरपा करो जिनराया जी ॥ देशी फेंकती ॥ तुम साचा साहिब मेरा रे, मिटिया चोराशी फेरा रे, में सेवक जवोजव तेरा रे, देखाउं मुगतिका डेरा रे, सद्गुरु दिये ज्ञान , बूटे शब्दोके बान, गाजे शास्त्र प्रमाण, कुन्न सकल सनको दिये माने जी, एकेक शब्दें तिन तिन करियां कोई विरला पीगाने जी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥ए१ ॥

॥ अथ जीवउपदेशनी लावणी वाणुंमी ॥

॥ सत्य धरमकुं गेमी अधर्में, पमनां ना चइएं ॥ तीर्थ गेमके उेर फुंगरपर, चमनां ना चइएं ॥ सत्त, गुरुकुं गेमी कुगुरुकुं सेवनां ना चइएं ॥ कल्पवृक्षकुं

छोरू लिय फल, खानां ना चइए ॥ जिनमदिरकु छोरू गुणिका घर, जानां ना चइए ॥ शीयल व्रतकु छोरू तरियाकु, अरूनां ना चइए ॥ ती० ॥ १ ॥ दया धरमकु छोरू हिंसाकु, करनां ना चइए ॥ सुमति त जके चार कपायकु, धरनां ना चइए ॥ गुरुगम सबा (मला नीचकी संगत, करनां ना चइए ॥ गगाजलकु छोरू क्षारजल, न्हानां ना चइए ॥ जिन आगमकु छोरू विकथामें, पढ़नां ना चइए ॥ ती०॥ २ ॥ वचन शुद्ध प्रकाश कीसी कु गाली, देनां ना चइए ॥ सु कृत तजके कीसीका अदत्त, लेनां ना चइए ॥ अव गुण पारका कही मरमको वचन, कहेनां ना चइए ॥ नगर छोरूके वास उजरूमें, रहेनां ना चइए ॥ बुरी जखी सुणी वात कीसीसें नाहक, अरूना ना चइए ॥ ती० ॥ १३ ॥ मार मार मन मार ओर प्राणीकु, मारनां ना चइए ॥ व्रत छोरूके पच इन्द्रियकु, पालनां ना चइए ॥ परसंपतकुं देख आपणा जीव, वालनां ना चइए ॥ चतुर हो के रतन कुवेम, डारनां ना चइए ॥ दीपचद यु कहे किसी मूरखसें, अरूनां ना चइए ॥ ती० ॥ ४ ॥ इति ॥ ५२ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी त्र्याणुंमी ॥

॥ मेरो वालम वनमें गयोरी, मा मेरो वालम वनमें गयो ॥ मेरो कंथ हाथ नवि रह्योरि ॥ मा मेरो० ॥ ए आंकणी ॥ महेल मलपती अवर नारीको, रति न मान्यो कह्यो ॥ आतमको निज कारज करतां, पंथ मुक्तिसें लह्योरी ॥ मा० ॥ १ ॥ मोहजालको फंद काट कर, ज्ञानानंदीमांहे थयो ॥ नरक निगोदको महेल सासतो, सो तो सघलो दूर थयोरी ॥ मा० ॥ २ ॥ बावीस परिसहको दुःख नारी, जो निज तन परखियो ॥ अष्ट करमकुं नवलां कीजे, अज्ञान थू थू नयोरी ॥ मा० ॥ ३ ॥ करम निज कुटुंब कंद वाला, केवल प्रगटायो ॥ विषय विपत्तिके सागरमांहे, जिनदास नरमायोरी ॥ मा० ॥ ४ ॥ ए३ ॥

॥ अथ जीवउपदेशनी लावणी चोराणुंमी ॥

॥ निर्धनका धनवान हुवा तव, दानपुण्य करनां चइयें ॥ श्रावण हो के हो नवि प्राणी, द्वादश व्रत धरनां चइयें ॥ मनुष्यजनम मिल गया तेरे तांइ, दया धरम करनां चइयें ॥ तीन रतनकुं ओर समकितकुं, शुद्ध समकित मान्या चइयें ॥ वही फजरमें कुमति तजकें

जिनमंदिर जानां चहियें ॥ विषफल तजके अमृत फलको, धतुरा तुम खानां चहियें ॥ सात व्यसनकु छोड नीम दस नित्य करनां चहियें ॥ आ० ॥ १ ॥ उत्तम कुलकी लरिया हो कें, पातिव्रत रखनां चहियें ॥ पनित हुई नवि प्राणि मिजलसमे, जलनां ना चहियें ॥ उप शम छग्या वृक्ष जिनोका, अमृतफल खानां चहियें ॥ सुकृत करणी करो सखी तुम, अकृतसे डरनां चहियें ॥ आ० ॥ २ ॥ सीस मुंडा कर चेला हुवा तब, सुगुरु वचन मान्यां चहियें ॥ भोजन हो के हो नवि प्राणी, अभक्ष खानां नहि चहियें ॥ जिनशासनका भेख लिया तब, आचारसे चलनां चहियें ॥ काम क्रोध माया लोभ उनकु, दूर तजनां चहियें ॥ आ० ॥ ३ ॥ ज्यां ज्यां तीरथ है जिनवरका, त्यां सबकु चलनां चहियें ॥ काया शक्ति हो नवि प्राणी, तुमकु व्रत करनां चहियें ॥ बार बार नरभव नहि मिलता, ए याद रखनां ॥ चहियें ॥ सतगुरुकी शीख सुनके, खिजमतमे रहेनां चहियें ॥ दीपचंद कर जोडी कहे मेरी शीख, रुदे धरनां चहियें ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥ ८४ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी पंचाणुंमी ॥

॥ मेरा हठ मत कर रे जननी, मे जाऊंगी गिरनार, दीक्षा लेऊंगी जवतरणी ॥ ए आंकणी ॥ उपन कोटि कुलजादव आये, खुब वरात बनी ॥ तोरणथी रथ फेर चला जद, पशुअन वचन सुणी ॥ मे० ॥ १ ॥ संग समुद्रविजय बलजड्, मुरारि के सजनी ॥ जई मनावो नेमनाथकुं, आ उवि कोण बनी ॥ मे० ॥ २ ॥ मात पितादिक सरवे कुटुंबी, क्षमा करो सजनी ॥ हम रहेनेकी नांहि जली हे, करुं श्याम मिलनी ॥ मे० ॥ ३ ॥ अवधि धरी के इंदर आये, पुरुषाकार धरी ॥ कीसविध पर कहुं राजिमती मिले, त्रिजुवन नाथ धनी ॥ मे० ॥ ४ ॥ राजिमती मन सुमति ले कर, पियुशुं प्रीत धरी ॥ चोपनमा दिन पतिसें पहेली, जावशुं शिवमंदिर संचरी ॥ मे० ॥ ५ ॥ एए ॥

॥ अथ विजीषणे रावणने सीता पाछी आपवा माटे करेलो उपदेशनी लावणी बन्नुमी ॥

॥ कहे विजीषण सुण जाइ रावण, अरज करुं दुं हितकारी ॥ तीन खंमको नाथ कहीजें, पाछी आपो परनारी ॥ ए आंकणी ॥ राजा जनकनी पुत्री कहीजें,

मिथिला नगरी अधिकारी ॥ भामण्डलकी बेहिन क हीजें, विद्याधरमें, सिरदारी ॥ सी० ॥ १ ॥ रामचंद्रजीयें धनुष्य चढाया, सीता कीधी घरनारी ॥ विद्याधरकु जोर दिखाया, जब सीताकी ढोरू लारी ॥ सी० ॥ २॥ रामचंद्रका छोटा भाई, कोटी शिलानें ऊठावी ॥ सीताना ते देवर कहियें, लक्ष्मण नाम जे कहेवावी ॥ ॥ सी० ॥ ३ ॥ से घरनी छे एह सुदरी, सतीयोमांहे सिरदारी ॥ ओर पुरुषकु नहि आदरे, जो होय इश्वर अवतारी ॥ सी० ॥ ४ ॥ सुपनामां नहि चढे सुदर, कीसी गिणतमें सबी तेरी ॥ तु तो राजा अपनो कीनो, ढोरू दीयो उनकी नारी ॥ सी० ॥ ५ ॥ जो तु इनका संग न छडे, आंख मीच कर अधकारी ॥ काम गृद्धिको क्यों कर सुजे फोज दल हुवा तैयारी ॥ सी० ॥ ६ ॥ रामचंद्र सुग्रीव नमाये, विद्याधरकी शिरदारी ॥ विद्याधरदल सहु जगाया, रामचंद्र हुवा तैयारी ॥ सी० ॥ ७ ॥ कहे मान मेल दे सीता, नीकल लंका से घेरी ।। घणा सुभट तुज हार्या जाशे, करशे ते लंका ढेरी॥ सी० ॥ ८ ॥ तोरा जोरा कांइ न चाले, परतरीया कीधी चोरी ॥ सुपुरुसाकों पडे पाधरी [illegible] नीयो

हइडे धोरी ॥ ती० ॥ ए ॥ तुं जाणे हुं घणो जोरावर, तीन खंमका सिरदारे ॥ सीता पाठी नहि मेले तो, रामचंद्रजी नहीं हारे ॥ ती० ॥ १० ॥ ए नारीनो संग करे तो, होशे घणी खराबी तोरी ॥ डुनियामें फजेती होवे, नरन्नव जनसंतर हारी ॥ ती० ॥ ११ ॥ येह मंदिर ने येह मालीयां, सहस अत्रीशे तुज नारी ॥ एक सीताने कारण न्नाइ, होवे नरकका अधिकारी ॥ ती० ॥ १२ ॥ कहुं मान मेली दे सीता, तो करशुं सेवा तारी ॥ नहि तो ऊठीने अमें जाशुं, रामचंद्र शरणा धारी ॥ ती० ॥ १३ ॥ रीश करी तव बोल्यो रावण, किसी गणती राखुं तारी ॥ सीताने पाठी नहि मेलुं, करशुं मारी पट्टनारी ॥ ती० ॥ १४ ॥ विन्नीषण ऊठीने चाल्य, तीस अक्षोहिणी लइ सारी ॥ रामचंद्र कहे आवो लंकेसर, आदर मान दियो न्नारी ॥ ती० ॥१५॥ हितशीख नहीं मानी डुष्टें, नरक मेल पहोंच्यो जाई ॥ कहे जिनदास समज जा चेतन, सुगुरुवचन चित्त सुखदाई ॥ ती० ॥ १६ ॥ इति ॥ ए६ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन लावणी सत्ताणुंमी ॥

॥ सुणीयो रे सुणीयो सुगुण तमें, जो चाहो न्नव

जल तरनां ॥ परिणति सममें विष फलस रिखे, सकल विषय सुख परिहरनां ॥ सु० ॥ १ ॥ ए श्रांकणी ॥ जगदानंदन पाप निकंदन, जगवंदन जिनके चरणां ॥ ऐसे प्रजु पोरस जिनवरके नित, निज चित्तमें समरन धरनां ॥ सु० ॥ २ ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र सुरासुर, नित करते जसु गुण वरना ॥ नाग नागिणी जुगल तार कर, जाये कमठका मद हरणा ॥ सु० ॥ ३ ॥ गुणगंजीरता यें जिन जीत्यो, चरण जलधि स्वयंजूरमणा ॥ धीरज गुणतें जीत लीयो प्रजु, सह नीर धरणीधरना ॥ सु० ॥ ४ ॥ सजल जलद गरजत सम मधुरा, जिनवाणी जगमत हरनां ॥ प्रजुके वचन सिंधुतें प्रगटी, निरुपम अमृत रस करनां ॥ सु० ॥ ५ ॥ जवि जन सकल मोह अति हरखित, निसुणी जये सब मद सरनां ॥ कारण पात्र करी पान करनतें, डुखीयें हे जव वन फिरनां ॥ सु० ॥ ६ ॥ एसे निजपद सफल करणतें, करीयें कर्मकी निर्जरनां ॥ तिनसें जिनवर तुरत लहे हे, अनुपम शिवरमणी वरनां ॥ सु० ॥ ७ ॥ अति विशाल जवसिंधु तरणको, जये श्याम तरुणी परनां ॥ तीन जगत जिन शिरपर शिरपें, जिनकी आणा गुण

वरनां ॥ सु० ॥ ७ ॥ जगत बंधु जगवत्सल सुणियें, अरज एह मेरी अवधरनां ॥ अहित निवारक करुणा धारक, सुनजर करी करियें करुना ॥ सु० ॥ ए ॥ दुरित निवारण मंगल कारण, तुहो प्रनु अशरण शरणां ॥ तुम प्रनु चरण शरण शिवचंदके, होजो प्रतिदिन सुख-करनां सु० ॥ १० ॥ ए७ ॥

॥ अथ श्रीगोरुीपार्श्वनाथनी लावणी अठाणुंमीं ॥

॥ सुणो सयण। एसे सांइ सलूणा, घमि घमि मेरे दिल आवे ॥ लाख सोवन में देऊं हजूरा, गोमी पास कोई दिखलावे ॥ ए आंकणी ॥ चरण शरण हे तरण नविककुं, करण ठरण हे शिवसुखको ॥ हरण विघन घन पवन मरण हे, धरणरूप हे श्रीसुखको ॥ जग-दानंद विलोकन अमुना, जनक तेजकुं हगावे ॥ लाख सोवन में देउं हजूरा, गोमी पास कोइ दिखलावे ॥१॥ काशी बनारस चंग सुरंगी, अश्वसेन अंबा वामा ॥ जोवनजोर गोरसें जोगी, कुंवर हे पारस नामा ॥ आ-पहि सोखे गोखमें बेठे, पातर लोककुं नचावे ॥ लाख० ॥ गो० ॥ २ ॥ नव नव नारी वेश समारी, जाते जिन जनने देखी ॥ जिने बोलाया कहे दरिद्री, बंनण

सुखी दुनियां देखी ॥ कमठ नाम तापस भये तुम
वन, पचाग्नि तनु तपावे ॥ लाल० ॥ गो० ॥ ३ ॥ उनकुं
नमत पूजत जन सुखसें, जाते यु प्रभुजी सुणीने ॥
बल दुखकारी भइ असवारी, देखन जिन आया मु
निने ॥ बडे लकडेमें नागहि जलता, देखी कमठकु
बोलावे ॥ लाल० ॥ गो० ॥ ४ ॥ सुण हो तपसी क्यों
तुम जपसी, जीवदया विन फल नावे ॥ क्रोधी क
मठ कहे अम्र खेलाओ, धरम बात तुम क्यु आवे ॥
साँई हुकम सेवक जन तामें, देखा मुनि फणी नि
कसावे ॥ लाल० ॥ गो ॥ ५ ॥ नाग सुणत हे सेवके
मुखसें, सांइ दिखाया नवकारा ॥ क्रोधी कमठ हुवो
मेघमाली, धरणेंद्र लही अवतारा ॥ वरसीदान वरसी
लइ दीक्षा, ध्यान लहे काउस्सग ठावे ॥ लाल० ॥ गो०
॥ ६ ॥ सांइ सुराधम नाम निहाली, विकूर्वे अधकार
घटो ॥ परजजन धजन गिरि तरुआ, गीरद् षहोत घ-
नी विकटा ॥ उसकट फटक गगन गरजनसें टहुक ट
हुक शिखी टहुकावे ॥ लाल० ॥ गो० ॥७॥ दावकाल क
बके वीजलीयां, पादसियां जलबुद ठाँटे ॥ सांइके शिर
मूशल धारा, ज्युं वरसावे मेघ घटे ॥ ध्यान अचल प्रभु

चंद्र पवनसे, मेरु कहो कुण कंपावे ॥ लाख० ॥ गो० ॥८॥ धरणराय पद्मावती आवे, जब नासायें जल जावे ॥ उपसर्ग टालो देव हकारे, पारस शरण चरण आवे ॥ नाटक देखत धरणरायको, मेघमाली समकित पावे ॥ लाख०॥गो० ए॥ केवल लई विहरी शिवमंदिर, अगुरु लघु गुण नीपाया ॥ गोडी पास सोऽरूप निहाली, जो वंदे मन वच काया ॥ श्रीशुनवीरविजय सुरमंजरी, अंब लेहरीयां सुख पावे ॥ ला० गो० ॥ १० ॥ ए८ ॥

॥ अथ श्रीनेमजीनी लावणी नवाणुंमी ॥

॥ गयो महेलको खेल, सखी मोहें उजड होय लागे ॥ विरह वालमको यो जागे ॥ गयो हियाको हार, नाथ दूर गये को दुःख दागे, दूर अबलासे उठ नागे ॥ दोहा ॥ सोम सलूणो साहेबो, ठेर जाय गिरनार ॥ विलसे शिवपुर सेजकु, तज कर राजुल नार ॥ प्रभु मोहे दूर दीनी मूकी, किसीसें चित्तसें नां चूकी ॥ १ ॥ पडे पलक नहीं चेन सलूणी, सूना मंदिरसें ॥ पुरुष दूजाकुं कुन परसे ॥ मेरो पति बसो परवतमें, सखी अब तन मेरो तरसे ॥ नेम बिन नैनां नीर बरसे ॥ दोहा ॥ खबर नहीं पूछी उने, गुना किया में

कौन ॥ सदाइ दुर्वल वेलपें सो दोय लारे गोन ॥१॥ सजन तेरो कुगरकी चूकी ॥ कि० ॥ २ ॥ कहां पत्र कहां काठकी गाया, कहां मलशे अन्न पाणी, नाथ मेरो एसो निर्वाणी ॥ ज्यों तजे कांचली नाग इसी विध, काया कर जानी ॥ गुण मेरो दिलमें नहीं आणी ॥ दोहा ॥ इण नवमें उपनी नहीं, और पुरुषकी आश ॥ नेम मोहेक्कु तज गया सो में बी लहुं वनवास ॥३॥ श्याम बिन शुना किया मूकी ॥ कि० ॥ ३ ॥ जलो ज गतकी जाल, सखी संपतकु क्या करनी ॥ नेम मुय गया अधर परनी ॥ दीनी मुजे उटकाय, जान कर जगलकी हरनी ॥ आदरी मुक्तिकी करनी ॥ दोहा ॥ मनकुजरकु वश करो, प्रीतें पाली शील ॥ शुद्ध सम ताही हदे भरो, सो खोया परतील ॥ ४ ॥ वालम मोहे थोकी चाव चूकी ॥ कि० ॥ ४ ॥ कीसी गयो पीहरको प्यार, भार मेरे शिर धरता ॥ मेरो आदर कोइ नहीं करता ॥ बिना पुरुषकी नार देख, सब जगमें जल वलता ॥ आंखमें आंसूओ जरता ॥ दोहा ॥ मेलो मारा नाथको, जगत होय दुःखदाय ॥ जूठ आल मेरे शिर भरे, सो तो सह्यो न जाय ॥ खलक मेरे लाल

बिना लूकी ॥ कि० ॥ ५ ॥ जबर जोर जोबनको देख, लोग मसलां मोहि बोले ॥ मेरो निरणो कहो कुण तोले ॥ नेमनाथ सुरपति रतिमें नहीं झोले, वसुं हुं डुंगरकी उंले ॥ दोहा ॥ आग लगो सुख सेजकुं, उंर मालक दीनी मूक ॥ फुल परवालां जो रहे, जिनदास कहे मेरी चूक ॥ ६ ॥ मेरी झुर झुर काया सूकी ॥ किसीसें चित्तसें नां चूकी ॥ ६ ॥ एए ॥

॥ अथ श्रीनेमजीनी लावणी सोमी ॥

॥ नेमजी जान बनी जारी, देखनकुं आयें नर नारी ॥ ए आंकणी ॥ अनंता घोमा ओर हाथी, मन खरी गिनती नहीं आती ॥ उंट पर धजा जो फरराती, गमकसें फिरती फरराती ॥ दोहा ॥ समुद्रविजयका लामिला, नेम उनुंका नाम ॥ राजूलदेकुं आये परणवा, उग्रसेन घर गाम ॥ प्रसन्न जई नगरी सब सारी ॥ नेमजी जान बनी जारी ॥ १ ॥ कसुंबल वाघा अति जारी, काने कुंमल छबि हे न्यारी ॥ कलंगी तूरा सुखकारी, माल गले मोतीयनकी झारी ॥ दोहा ॥ काने कुंमल ऊगमगे, शीश खूब झलकार ॥ कोमि जानुंकी करुं उपमा, शोजा अधिक अपार ॥ वाज

रह्यां घोजा टकसारी ॥ नेम० ॥ २ ॥ लूट रही ऊनकी
घरराई, व्याहनमें आये घडे जाई ॥ ऊरूखे राजुमरे
श्याई, जोनकु देखी सुख पाई ॥ दोहा ॥ उग्रसेनजी
देखर्के, मनमें करे बिचार ॥ बहोत जोत्र करी एकठा,
वाको जस्रो अपार ॥ करी सब जोजनकी त्यारी ॥
नेम० ॥ ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये, पशुजीव स
बही कुरलाए ॥ नेमजी वचन फरमाये, पशुजीव का
येकु लाये ॥ दोहा ॥ याको जोजन होवसी, जान बा
सते एक ॥ यह बचन सुनी नेमजी, थरहर कंपि देह
॥ जावसें चढ गये गिरनारी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ पीठेसु
राजुलदे श्राइ हाथ अब पकड्यो ठिनमांही ॥ कांहां
तु जावे मेरी जाइ, ठर घर हे तुऊ मोकलाई ॥
दोहा ॥ मेरे तो वर एकही, हो गया नेम कुमार ॥
ठर जुवनमें वर नहि, कोटी करो विचार ॥ दीक्षा
जद राजुलने धारी ॥ नेम० ॥ ५ ॥ साहेल्यां सबही
समजावे, हिये राजुलके नहि आवे ॥ जगत सब जुठो
दरसावे, मेरे मन नेम कुमर जावे ॥ दोहा ॥ तोड्या
कंकण दोरुडा, तोड्यो नवसर हार ॥ काजल टीकी
पान सोपारी, त्याग्यो सब सणगार ॥ साहेल्यां सबही

बिलखाण। ॥ नेम० ॥ ६ ॥ तज्या सब्र सोले सिणगारा, आभूषण रत्नजडित सारा ॥ लगे मोहे सबही सुख आरा, छोड कर चाली निरधारा ॥ दोहा ॥ मात पिता परिवारकूं, तजतां न लागी वार ॥ विजोग कर चली आपशुं, जाय चढी गिरनार ॥ जूरती छोडी मा प्यारी ॥ नेम० ॥ ७ ॥ दया दिल पशुअनकी आई, त्याग जब कीनो छिनमांइ ॥ नेम जिन गिरनारे जाई, पशुके बंधन छुडवाइ ॥ दोहा ॥ नेम राजुल गिरनारपें, लीनो संजम दान ॥ नवलराम करी लावनी, उपन्यो केवलज्ञान ॥ जिनोकी किरिया बुद्धि सारी ॥ नेम० ॥८ ॥ १०० ॥

॥ अथ आदिनाथजीनी लावणी एकसो एकमी ॥

॥ सरसती माता सुमतिकी दाता, तुंही विधाता त्रिपुरारी ॥ अकल बुद्धि तुम दे हो ईश्वरी, कहुं लावणी हद प्यारी ॥ १ ॥ ऋषन्न देव तो बडे देव हे, उनकी शोन्ना अति न्नारी ॥ धुलेवा नगरमें आप बिराजे, आदिनाथ प्रन्नु अधिकारी ॥ ऋ० ॥ २ ॥ अनरु परवता अनरु पहाडमें, जगा बनी हे हद प्यारी ॥ देशी प्रदेशी आवे जातरा, सामली ...

क्र० ॥ ३ ॥ नाजिराय कुल जान प्रगट हे, मरुदेवीके तुम नदा ॥ तिलक जाल शिर छत्र बिराजे, मुख सिरी हे पूजनमचदा ॥ क्र ॥ ४ ॥ कानें कुंडल शिर मुकुट बिराजे, बांहे बेरखा हृद सोहे ॥ सामरी सुरत इ द मुरत बिराजे, सब संतनको मन मोहे ॥ क्र० ॥ ५ ॥ आंगी अजब बनी प्रजुजीकी, कुंमुलकी छबी हे प्यारी ॥ गले मोतीयनको हार बिराजे, सुदर सूरत हे प्यारी ॥ क्र० ॥ ६ ॥ मृत्युलोक पाताललोकमें स्वर्गलोकमें तुम चदा ॥ सरब देवमें आप बडेरा, आदिनाथ प्रजु जिणंदा ॥ क्र० ॥७॥ लाख चोरासी जो गवी आयु, पीछें केवल प्रजु पाया ॥ जरत सरीखा हु बाज बेटा, कनक जमित बिंब करवायो ॥ क्र० ॥ ८ ॥ चार खूटमें नाम तुमारा, ध्यान धरे सब मुणींदा ॥ राय राणा लोक आय नमे हे, करो आप सब पावंदा ॥ क्र० ॥ ९ ॥ पगथियां चमतां प्रायश्चित्त जावे, द रिसनसें दिल होय राजी ॥ रोग सोग सब जाय जां जके, गल जावे डुशमन पाजी ॥ क्र० ॥ १० ॥ एक बात तो अजब तुमारी, हु जाणु हु चुनकोला ॥ तेरे नामसें मूटे बेमी, और मूटे लोहका ताला ॥ क्र०

॥ ११ ॥ मन शुद्ध करके समरण करतां, एहे चित्त तुजकुं ध्यावे ॥ अन्न धन्न अरु माणक मोती, पुत्र कलत्र लही पावे ॥ ऋ० ॥ १२ ॥ देवल तो मजबूत बन्या हे, उपर इंडा सोनेका ॥ उंलु दोलु कोट ब-नाया, सब सिंगी बंध चूनेका ॥ ऋ० ॥ १३ ॥ तो-रण थंन बन्यो अति नीका, पंचरंग नेजा फररे ॥ वीरघंट चिहुं दिशि वाजंता, ते जाणे अंबर घररे ॥ ऋ० ॥ १४ ॥ अगरूबम् अगरूबम् बाजे नोबतां, जणण जणण झल्लरी वाजे ॥ किंकरत किंकरत तालज ऊक्कर, प्रणन प्रणन घूघर वाजे ॥ ऋ० ॥ १५ ॥ शीश ति-लक शिर नाल बिराजे, उर फलकत हे हीरकणी ॥ चमर छत्र शिर ऊपर धरते, ऐसी शोना अजब बनी ॥ ऋ० ॥ १६ ॥ सनमुख हस्ती एक पटाजर, जिनकी शोना हद कहेता ॥ ऋषनदेवके मात पिता दो, ऐरा-वत ऊपर बेठा ॥ ऋ० ॥ १७ ॥ दोनुं बाजु हस्ती घूमे, जिनकुं ऐसा सणगारी ॥ कंठ चरण घूघर घमकंता, बाजत हैं सुंदर प्यारी ॥ ऋ० ॥ १८ ॥ नवसागरसें आप तरे हो, अब सेवककूं तुम तारो ॥ मायाजालमें लपट रहा हैं, जिनशुं मेरो नहि सारो ॥ ऋ० ॥ १९ ॥

अष्ट करम दल घेर रहा हे, जिनछु समरन नहीं कदा ॥ जय जय प्रभुजी सेवा दीजे, तुम साहेब ने हम सदा ॥ कृ० ॥ २० ॥ हु तो प्रभुजी सेवक लागे, किरपा करजो जिनवरजी ॥ मेरे आसरो एक तुमारो, तुम दरिसणसें दिल राजी ॥ कृ० ॥ २१ ॥ कहत लावणी रोडा गुरजी, अरज सुणो प्रभुजी मेरी ॥ चोरासी दुगेतिकु टालो, ओर टालो जवजय फेरी ॥ कृ० ॥ २२ ॥ अधिक ऊपमा तुमकु सोहे, कहेतां पार नाहीं आवे ॥ नरजव पाय तुऊ नहीं ध्यावे, ते नर अतिही दुःख पावे ॥ कृ० ॥ २३ ॥ एक चित्तसें सुणे लावनी, तिनके सव प्राछित जावे ॥ ऋद्धि सिद्धि नवे निधि होवे विपत जाय संपत आवे ॥ कृ० ॥ २४ ॥ संवत् अढारे शाठा वरसें, माहीपूनम गुरुवारें ॥ कही लावनी अल्प बुद्धिसें, लस्केर सक्करमां प्यारे ॥ कृ० ॥ २५ ॥ १०१ ॥

॥ अथ वैराग्यमय लावणी एकसो वेमी ॥ -

अरज हमारी सुणो दीनपति, कोन जांति तिरणां ॥ हम दुःखी फिरत संसार चतुर्गति, सो तुमसे तिरनां ॥ अ० ॥ १ ॥ घोराघोर नरकके जीतर, नाना दुःख जरना ॥ मारन ताडन छेदन जेदन, ओर देह धरनां ॥

अ० ॥ २ ॥ कबहुं तिरियंच योनी पायके, गले पास परनां॥ क्षुधा तृषा अरु शीत ऊष्णतो, मार मार करना ॥ अ० ॥ ३ ॥ देवविभूति पायके सुंदर, देख देख झुरनां ॥ जब माला मुरझावण लागी, सोच किये मरना ॥ अ० ॥ ४ ॥ मनुष्यजनम पायके नटक्यो, कहुं नांहीं थिरनां ॥ साहिब तुम शरणागत राखो, जनम मरण हरनां ॥ अ० ॥ ५ ॥ १०२ ॥

॥ अथ लावणी एकसो त्रणमी ॥

॥ सद्गुरुजी म्हारा सरण आयांकी लज्जा राखजो ॥ स० ॥ पतित उद्धारण विरुद सुणीने, आयो तुमारे पास ॥ अब मनवंछित पूरो म्हारां, एहीज दिलकी आस जी ॥ स० ॥ १ ॥ काम क्रोध मद लोभ तजी में, तज दियो सब संसार ॥ नवपदनु एक ध्यान धरीने, पाया सहु गुणपार जी ॥ स० ॥ २ ॥ देश देशमें शुभ विराजे, परचा जग विख्यात ॥ इण कलिमांहे सुरतरु सरिखा, प्रगट रह्या साक्षात जी ॥ स० ॥ ३ ॥ चिंतामणि और कामधेनु सम, माहरे तुंहीज देव ॥ आण धरुं शिर ताहरी, (सिरे) करुं तुमारी सेव जी ॥ ४ ॥ मात पिता बंधव तुं जगमें. हितकारी गमराग

॥ राजा राणा सहु जगमांहे सेवे तुमारा पाय जी ॥ स० ॥ ५ ॥ आज प्रभु तुम चरण पसायें, सीधां वांछित काज ॥ लक्ष्मी प्रधान तुमारां दरिसण, मोहन गुणका राज जी ॥ स० ॥ ६ ॥ १०३ ॥

॥ अथ लावणी एकसो चारमी ॥

॥ देख पराइ रीत, रोवे क्युं होसु रे ॥ जपिया न जाय जिनराज, जीवका तोसु रे ॥ पूरव पुण्य पसाय, नर तन लायो रे ॥ आदोसर सरिखो देव दुर्लभ पायो रे ॥ १ ॥ तें तज्या तीर्थंकर देव, जोरे जोवे रे ॥ ज्ञान रतनकी गांठ, समज विन खोवे रे ॥ २ ॥ जूठी जगतकी जोम, जीव घेर खेलो रे ॥ नरजवमें लागे खोम, चेतन चेतो रे ॥ ३ ॥ सुख दुखनां फल होय, कर्मकों टोलो रे ॥ समकित सरधाकी रीत, रूमी पालो रे ॥ ॥ ४ ॥ युं समजावे जिनदास, मनको अपनो रे ॥ जिन राज भजन विन जाय, जनम ज्यु सुपनो रे ॥५॥१०४॥

॥ अथ श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथनी लावणी एकसो पांचमी ॥

॥ वे कर जोडी शीश नमाके, गुण गाऊं अब में तेरे ॥ श्रीचिंतामणि पार्श्व प्रभुजी, लज्जा राखो तुम

मेरे ॥ ए टेक ॥ अश्वसेनके कुंवर कनैया, वामदेवी माता थारे ॥ तीन लोकको नाथ कहीजे, पारसनाथ हे अवतारे ॥ चोशठ इंद्र चमर ढुलावे देवी तीर्थंकर, थारे ॥ सुर नर अनेक देवता, हाजर रहेता तुम्मारे ॥ मोहनगारी मूरत प्रभुकी, दरसन करते बहु तेरे ॥ श्रीचिं० ॥ १ ॥ मस्तक मुकुट काने युग कुंडल, तिलक पनेकी मन महोते ॥ बांहे बाजुबंध जेर बेरखा, हंस गले बिच जग जोते ॥ कटि कंदोरा कड़ां हाथमें, सुंदर मूरत हद शोते ॥ सुंदर मूरत दरसन करकें, आनंद दिलमें बहु होते ॥ देश देशमें शोभा सुनकें, आयो शरणे में तेरे ॥ श्री० ॥ २ ॥ लख चोराशी भटकत खोल्यो, जीवाजोनि भुगते सारे ॥ अब तो प्रभुजी आप निभावो, भव भव शरणां हे थारे ॥ मात पिता तुम शेठ हमारे, तुंही हमारे शिरदारे ॥ संकट काटो विघ्न निवारो, शरणें आयो हुं थारे ॥ ऋद्धि सिद्धि काज मन कामना, सुख संपत्ति कर दे मेरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ पार्श्व यक्ष अधिष्ठायक थारे, पद्मावती शोहे सारे ॥ काला गोरा दोय मतवाला, मेरु खड़ा तेरे दरबारे ॥ परचा पूरण पार्श्व प्रभुजी, चिंता चूरो

हमारे ॥ जैनप्रकाशक मरूसी अब तो, शरणे आई प्रभु तारे ॥ चंदगोपाल प्रभु तुम गुन गावे, आशा पूरो तुम मेरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ १०५ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी एकसो छठी ॥

॥ सुनियो रे प्यारे बात हमारी, सब काऊ नर नारी, खलककी केसी कछु न्यारी ॥ ए आंकणी ॥ इसमें रे दुनियादारीके, रसम बसमे हे सारी, लेकन कुछ साधुकी ता न्यारी ॥ कुण हे रे मात पिता सुत बंधु, कोन कह्हो प्यारी, सुपनकी जेसी बनी गुलक्यारी ॥ सरन किसीका नइ हे रे, जिसमें बसमनसे धारी, उनोंकी बातों हे न्यारी ॥ जमत हे जब जग लके बिचमें, सबही संसारी, जमर ज्युं फुलवा फुल धारी ॥ जिसमें रे कोउ नहीं हे दूजा, दिल धरो इक तारी ॥ ख० ॥ सु० ॥ १ ॥ धन जोबन सब दूर रहे जन, तनभी नहीं तेरा, आखर तो हे जंगलमें डेरा ॥ अजब बहार बनी बाहिरसें, अंदर असुचेरा, धोवो तुम उनकु बहुतेरा ॥ मिथ्यामतिके बास बसे हे, आठु कर्म घेरा ॥ जिसमेरे संवर अवर उरै, रस्ता कर जेरा ॥ सोइ होय संतनका चेरा ॥ देख दुरस्तासें

दिलमस्ती, नस्ती हे रे न्नारी ख० ॥ स० ॥ २ ॥ इ-
हन्नी रे वात उसीने दाखी, साखी सव न्नाई, निर्जरा
सवहीसें स्वाही ॥ चौदे राजको लोक कहतु हे, गति
चारो आई, पंचमी शिवगति वतलाइ ॥ तिसमें रे चे-
तनरूप अरूपी, गति जिसने पाई, उनोंकी कही न
संके काई ॥ सव हे रे न्नोउ लोक विचारे, आपणी ठ-
गवाई, उनोंके हाथे वनवाई ॥ इह गत जानत सोइ,
जन मानत संत कहे सारी ॥ ख० ॥ स० ॥ ३ ॥ जो
कोऊ साच कहो रे पूरे, सो गुरु नहीं न्नाता, उरनसें
दिलन्नर रंग लाता ॥ जिसकुं नहीं रस्तेकी मालुम,
सोउ नर न्नूलाता, येही एक नुकता कहिलाता ॥ सव
कहे साहिव तारणहारा, इह जाणी जाता, तवि कुछ
इनसें वनि आता ॥ छंद लावणी वारे न्नावना, षाल-
चंद गा ।, खुसीसें दिलकुं समझाता ॥ इसकुं रे गावे
दिल विच न्नावे, सेई समझे सारी ॥ ख० ॥ सु० ॥ ४ ॥

॥ नवपदनी लावणी तुरानी चालमां एकसो सातमी ॥

॥ सकल सुखदायक नर नारी, न्नजो सिद्धचक्र सु-
जस धारी ॥ स० ॥ डुर्लन्न मानवन्नव पाया, जगतसें
उत्तम कुल आया ॥ मिला संजोग सुगुरु राया, धर-

मका ध्यान धरो भाया ॥ आतमका कल्याण करोजी, परिहर पर गुण दूर ॥ आश्रवका सब रस्ता रोको॰ सवर कर भरपूर ॥ मिटे दुर्गतिका दुःख भारी ॥ भज॰ ॥ १ ॥ देवतत्त्वकी अधिकाइ, भेद कहे दोय सुखदाई ॥ जिनवर सिद्ध भजो भाई, ज्योतिमु ज्योति मिल जाई ॥ तीन भेद गुरुतत्त्वकाजी, आचारिज उव झाई ॥ रत्नत्रयी आराधतां रे, मुनिवरजी माहाराय ॥ परम मंगल छे हितकारी ॥ भ॰ ॥ २ ॥ तत्त्वधरमें सुखकारी, भेद कहत हे चत्तारी ॥ दरिसन पद छे उ पकारी, ग्यान सरव गुण सिणगारी ॥ संजम सत्तर प्र कार विराजे, तप पद छे श्रीकार ॥ मन वच काया थिर करी पूजो, जिम पामो भवपार ॥ एही नवपदकी बलि हारी ॥ भ॰ ॥ ३ ॥ कहे गणधर गौतम ऐसी, श्रेणिकमें प्रभुसे सुणी तैसी ॥ वीर प्रभु पण कही जेसी, आज त लक अवितथ वेसी ॥ नृप श्रीपाल प्रमुख सुख पाया सिद्धचक्र परताप ॥ उगणीसमें चोवीसर्से, बणी लावणी छाप ॥ कही मुनिवर अयरचद सारी ॥ भ॰ ॥ ४ ॥ १७७॥

॥ लावणी कल्याण रागमां एकसो आठमी ॥

॥ आरति करुं श्रीपार्श्व प्रभुकी, जन्म बनारसी हे

जिनका ॥ घननं घननं वाजे घंटा घण, ऐसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० ॥ १ ॥ जव कमठासुर कोप कियो तव, श्याम घटा बिजरी चमकी ॥ गिरुर्व गाजत मूसलधारा, धरर धररका जगशंका ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ थररर आसन कंपे सुरको, तव धरणीधर चित्त चमका ॥ फण विस्तार हजार किये तव, ऊमक जाय प्रजु तन ढंका ॥ आ० ॥ ३ ॥ जव पद्मावती सब सिणगारे, ताथेइ नाचत दे फिरका ॥ ध्रमक ध्रमक धौंमादल वाजत, घननं घूघुरके घरका ॥ आ० ॥ ४ ॥ दीदीदीं कट नोवत वाजे, धौंधौं कट दुंदुजि धौका ॥ याविध गीत संगीत वाजत सब, गांधर्व गान करे जिनका ॥ आ० ॥ ५ ॥ तननं खिरर तंत ताल सब, रूफ फोंफों करते फंका ॥ फेरण फेरण के ऊणकारे, ऊागरुदी ऊालरके ऊंका ॥ आ० ॥ ६ ॥ सुर नर इंद्र सब जे जे करते, जीवित सफल जया जिनका ॥ अमृत उदय तिण वेर जयो सुख, को विस्तार कहे तिनका ॥ आ० ॥ ७ ॥ १०८ ॥

॥ लावणी—होरीनी चालमां एकसो नवमी ॥

आदि जिनेसर कियो पोरणो, आ रस सेलडीयां

॥ श्रा० ॥ ए टेक ॥घका एकसो श्राठ सेरमी, रस भ रिया ठे नीका रे ॥ उल्लट भाव श्रेयांस वहोरावे, मांग देषी श्रावुका रे ॥ श्रा० ॥ १ ॥ देवदुदुंजि वाज रही हे, सोनश्यारी विरखा रे ॥ वारे मासहु किया पारणो, गइ भूख सयर तिरखा रे ॥ श्रा० ॥ २ ॥ ऋद्धि सिद्धी कारज मन कामना, घर घर मगलाचार ॥ दुनिया ह रख वधामणां कांइ, श्रखात्रीज तिवार रे ॥ श्रा० ॥ ॥ ३ ॥ सकट काटो विघन निवारो, राखो हमारी लाज रे ॥ वे कर जोकी नान्हू कहिता, ऋषभदेव महाराज रे ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ १०९ ॥

॥ श्रथ नेमनाथजीनी लावणी एकसो दशमी ॥

॥ काली घटा कायक घन छाई ॥ ए देशी

॥ ढाही घटा गगनमें कारी, राजुलकु विरहदु ल ज्ञारी ॥ ढा० ॥ टेक ॥ चोमासा लग्या रस चीना, श्राया श्राषाढ रग महीनां, चारु तरफसें वादल पीना, विजुलीनें चमकनां कीना, दिल होत धकधकत सीना, में श्रबला सखि पति हीना, ठकाना सररररर चलत समीर, घररररर करत समीर, ठररररर श्ररष समीर, श्रासि कैसी करु तदवीर, वुरी तकदीर ॥ पीया विन

प्यारी ॥ राजुलकुं विरहदुःख जारी ॥ रा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सहसावननें श्याम घनघोर, जर जोर बोलते मोर, दादुर मिल करते दोर, पिऊ पिऊ पपैया सोर, जरू लग्या बुंद झकजोर, बिच दमके दामिनी कोर, उझाबणी खरूरूरूरू रव घन माला, तरूरूरूरू जल परनाला, अरूरूरूरू नाला खाला ॥ में दुःखी हुइ बेहाल हीयेमें, सात्र हुइ जलधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ जादोमें पवन प्रवीणा, बादलमें धनुष रंगीणा, जंगलमें नदी स्वर झीणा, ज्युं वाजे मनोहर वीणा, अब एसें कहो क्या जीना, प्रीतमनें मुझे दुःख दीना ॥ उझाना युं विलपत मुख मुरजाइ, सखीयन मिल दोरु जगाई, विलखत वचन सुनाइ ॥ सखी देखो पीयाकी रीन, तोरूके प्रीतम गये गिरनारी ॥ रा० ॥ ३ । आसोजमें जरा नहीं धीर, यादुचंद जये बेपीर, उठ चली नेमके तीर, काटनकुं कर्म जंजीर, प्रीतमसें लीयो अकसीर, व्रत संजम समकित हीर ॥ उझानी शिव राजुल नेम सिधाये, इंद्रादिक जस गुण गाये, जवि जन मिल शीश नमाये ॥ मुनि कहे कपूरचंद प्रेमसें, ठंद जाउं बलिहारी ॥ रा० ॥ ४ ॥ ११० ॥

॥ श्रीअजितनाथ महाराजनी लावणी ॥

॥ एकसो अग्यारमी ॥

॥ श्रीअजितनाथ महाराज, गरीबनिवाज, जरूर जिनवर जी ॥ सेवक शिर नामी तुने उद्धारेअरजी ॥ कर माफी मारा वांक, रकलीयो रांक, अनता जनमें (२) आव्यो हु तारा शरण, बली दुःख दवमें ॥ क्रोधादिक धुकता चार, खरेखर ध्वार, लग्या मुज केडे (२) वली पापी मारो नाथ, ठेक ठकेडे ॥ आ मुजरो मुज जग थान, करु गुणगान, ध्यानमां धरजी (२) सेव० ॥ १ ॥ में पूरण कर्यां छे पाप, सुणजो आप, कहु कर जोडी (२) मुज तुलामां जगवान, न्यून नहीं थोडी ॥ जीव हिंसा अपरपार, करी किरतार, हवे शु करवु (२) जुठु बहु बोली, साचने शु हरवु ॥ तुज खोलामां मुज शीश, जाण जगदीश, गमे ते करजी (२) सेव० ॥ ॥ २ ॥ में कर्यां बहु कुकर्म, धरी नहीं धर्म, पूर्ण हु पापी (२) अवलो थई तोरी आण, मेंज उत्थापी ॥ में मूरख निंदा घणी, मुनि परतणी करी हरखायो (२) परदारा देखी लवारु, हु ललचायो ॥ किंकर

कहे केशवलाल, आणीने व्हाल, दुःख तुं हरजी (२) सेवक० ॥ ३ ॥ इति ॥ १११ ॥

॥ मिथ्यात्वी वर्णन लावणी एकसो बारमी ॥

॥ कंकरकुं शंकर करी माने, ए कुमतिकी बाताहे ॥ आक धतूरा वेल पांतशुं, पूजत शिव रंग राता है ॥ कं० ॥ १ ॥ चस्री जीवका गला कटावे, लोक कहे ए माता हे ॥ ताकुं पूज मगन मन मोहन, सो नर नरकै जाता हे ॥ कं० ॥२॥ कुगुरुशुं परन्नव दुःख पामे, नहि तिलन्नर एक शाता हे ॥ कुदेवकुं चेतन युं सेवत, हिंसाधर्म दुःखदाता हे ॥ कं० ॥ ३ ॥ कुगुरु त्याग सुगुरु निज सेवे, नित्य निर्ग्रंथ गुण गाता है ॥ जिनवर गुण जिनदास बखाने, ए मुक्तिका खाता हे ॥ कं० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीशंखेश्वरजीनी लावणी एकसो तेरमी ॥

॥ श्रीशंखेश्वर गाम बिराजे, अद्भुत महिमा हे जिनका ॥ पारसनाथ प्रन्नु सुखदायक, बमा पराक्रम हे तनका ॥ न्नगत वत्सल न्नरत कहावे, न्नवि जन सेवो सुख कामें ॥ १ ॥ जपो संखेसर समरथ साहिब, ऐसो और न दुनियामें ॥ ए आंकणी ॥ जिनके आगे वाजित्र वाजे, नाटक नाचे नर नारी ॥ आवुं जामही

नोवत वाजे, देवदुदुंभि अनुसारी ॥ देश देशके संघ पति आवे, जात्रा करनकु उन गामे ॥ जपो० ॥ २ ॥ अंधे जनकु आंखज देवे, निधनियाकु धन देवे ॥ सुत चाहे उनकुं सुत देवे, थिर करी मन जो प्रभु सेवे ॥ रोग शोक संताप मिटावे, जय सब नासे सब नासे नामे ॥ जपो० ॥ ३ ॥ संकट पडिया जब जादवकुं, तब प्रभुजी आराधे ॥ जरू धरणींद्र तिहां दीनी प्रतिमा, नमन करघो तस गोविंदे ॥ जरू छांट जब जरा निवारी, दुख जया सब वसुधामें ॥ जपो० ॥ ४ ॥ इति ॥ ११३

॥ अथ कुमति सुमति संवाद लावणी एकसो चौदमी ॥

॥ दुरमति दूर खडी रहोरी, प्रभुजीने विदाकरी महाराज ॥ ए टेक ॥ जब लग तेरी जात न जानी, तब तक अग रमाइ ॥ अब अच्छे कर हमने जानी, तु हे मोहकी जाइ ॥ दुर० ॥ १ ॥ तु हे सहीयर विषयजोगकी, तिणशु अब नहि नाता ॥ निकस पुरीशु बाहिर हो जा, प्रभुचरणकी रातसा ॥ दुर० ॥ २ ॥ दुरमति राणी यु उठ बोली, सुण चेतन तु अग्यानी ॥ जिणे समताशु स्नेह लगाया, जल मत्स्या नहि पानी ॥ दुर० ॥ २ ॥ तु दुरमति दिन दिन दुःखीने, भम्य चोरासी

नरमावे ॥ चेतनराय कहे सुण ठगणी, छिन छिन चित्त चोरावे ॥ डुर० ॥ ४ ॥ मिल मिल महमुंदिकेरे महेलमे, नित बाघे वदलाऊ ॥ समताका तुं संग छोरु दे, तु-झकुं गिलसे विछाऊं ॥ डुर० ॥ ५ ॥ चेतनराय कहे सुण डुरमति, तुझकुं लेहर न लाउं ॥ हमने रतन अ-मूलक पाया, तुझकुं धक्का दिलाउं ॥ डुर० ॥ ६ ॥ जब डुर्मति यह नइ खिसानी, कंत बिना कांहां जाउं ॥ ॥ जाई पुकारुं पिता मोहकुं, चेतन पकरू मगाउं ॥ डुर० ॥ ७ ॥ जाइ पुकारथा पिता मोहकुं, चेतन कूडे कुमाया ॥ समताकुं पटराणी कीनी, हमकुं धक्का दि-लाया ॥ डुर० ॥ ८ ॥ कोप नरे राजा तब बोले, राग द्वेष बोलवाउं ॥ अब तुं महारे पास बैठ जा, चेतन पकरू बोलाऊं ॥ डुर० ॥ ए ॥ पकरू मगाऊं जोर न पाऊं, काम क्रोध उपजाऊं ॥ आठ सुनुट वाके संग देकें, बहुविध नाच नचाऊं ॥ डुर० ॥ १० ॥ राग द्वेष दो परकुं नेज्या, सुण चेतन अग्यानी ॥ डुरमतिकुं धक्का दिलाया, मोहकी कहाण नहि मानी ॥ डुर० ॥ ११ ॥ कहाण न मानी नई गुमानी, सुमताने बह-काया ॥ मसक बंधागी मार पडेगी. मोहराजा चरू

आया ॥ दुर० ॥ १२ ॥ इतनी सुन कर चेतन समज्या धीरज खड्ग उठाया ॥ राग द्वेषके सिरपर ताड्या मोहराय पर आया ॥ दुर० ॥ १३ ॥ जीड पमी रोजा अब मोरचा, सेना भागी जाया ॥ मौन पकड कर दुर्मति रोइ, अब मेरे कछु न बचाई ॥ दुर० ॥ १४ ॥ कछु न बचाइ पीठा पुरकुं, आइ अकल एक उपाइ ॥ समताकु आय काना दीना, चेतन करी बडाइ ॥ दुर० ॥ १५ ॥ तुं समता मेरी कबकी वैरण, मेरा बंध यह काया ॥ नगन दिगंबर वनमें राखा, घर घर द्वार फिराया ॥ दुर० ॥१६ ॥ मैं जुनी गोरीने सब सुख दीना, याके संग दुःख पाया ॥ बांह पकड जब शिवपुर लेज्या फिर जुगमें नहि आया ॥ दुर० ॥ १७॥ जुगमें नहि आया चेतन जीवता, ठायक राज कहाया ॥ सुमति कुमति दोऊकुं तजके, अविचल मन समआया ॥ दुर० ॥ १८ ॥ ११४ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी एकसो पन्नरमी ॥

॥ चतुर नर दिलकु समजानां, निकट घाट पारख-जग सरवर, पार उतर जानां ॥ ईसमें गोता नहीं खानां, आसपास रसता है खोटा, इनसें टल जानां

॥ च० ॥ १ ॥ मधुवन धरन मिथ्या जल उनका, ढूं-
ढके उनमाना ॥ पात्र धरे तो पकरू झुवावे, कुगुरु सु-
गरवाना ॥ च० ॥ २ ॥ निकट घाटका जल पीवे सो,
होवे हेरोना ॥ जल खारा अति रोग वढावे, राय द्वेष
माना ॥ च० ॥ ३ ॥ कुधरम उजारू रस्ता है खोटा,
मोहमांहे भरम ठानां ॥ काम भोग दोय चोर लूटारे,
करत बहोत जानां ॥ च० ॥ ४ ॥ सुविधिनाथ सद्-
गुरुकी वतीयां, एक चित्त ल्याना ॥ खरची विमल भा-
वनाकी उहां, लीजें सनमाना ॥ च० ॥ ५ ॥ कुविध
पवन नावरूगुज्ु लै, इलाज करवानां ॥ देवचंद कहे
शिवपुर चालो, सावधान ह्याना ॥ च० ॥ ६ ॥ १२५ ॥
॥ उपदेशनी लावणी एकसो शोलमी दक्षणी चालमां ॥

॥ सुगुण नर श्रीजिन गुण गानां, विकट कोट सं-
कट भव अटवी, ताकू लंघ जानां ॥ प्रभुजीसें कर
इक तानां, मोहजाला विच हे अति दूर्गम, तनही उ-
लजानां ॥ सु० ॥ १ ॥ गुण अंनत पारस प्रभुजीके,
तामें चित्त देनां ॥ करमकीच कलुषित आतम गुण,
निर्मल कर लेनां ॥ सु० ॥ २ ॥ निर्विकार प्रभु विविध
, निहारित, निज अचय भरनां ॥ ते जीवभाव परिण-

आया ॥ दुर० ॥ १२ ॥ इतनी सुन कर चेतन चमक्या धीरज खड्ग उठाया ॥ राग द्वेषके सिरपर ताक्या मोहराय पर आया ॥ दुर० ॥ १३ ॥ जीत्त पमी राजा जब मोरया, सेना जागी जाया ॥ मोन पकरु कर दुर्मति रोइ, अब मेरे कवु न बचाई ॥ दुर० ॥ १४ ॥ कवु न बचाइ पीडा पुरकु, आइ अकल एक कपाइ ॥ समताकु जाय काना दीना, चेतन करी चकाइ ॥ दुर० ॥ १५ ॥ तुं समता मेरी कबकी वैरण, मैरा कब वह काया ॥ नगन दिगंबर वनमें राखा, घर घर द्वार फि_ राया ॥ दुर० ॥१६ ॥ में जुनी गोरीने सब सुख दीना, याके संग दु ख पाया ॥ बांह पकरु जब शिवपुर लेज्या फिर जुगमें नहि आया ॥ दुर० ॥ १७॥ जुगमें नहि आया चेतन जीवता, ठायक राज कहाया ॥ सुमति कुमति दोऊकु तजके, अविचल मन समजाया ॥ दुर० ॥ १८ ॥ ११४ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी एकसो पन्नरमी ॥

॥ चतुर नर दिलकु समजानां, निकट घाट पाखरु जग सरवर, पार उतर जानां ॥ ईसमें गोता नहीं खानां, आसपास रसता है खोटा, इनसें टल जानां

॥ च० ॥ १ ॥ मधुवन धरन मिथ्या जल उनका, ढूं-ढिके उनमाना ॥ पात्र धरे तो पकरू छुवावे, कुगुरु सु-गरवाना ॥ च० ॥ २ ॥ निकट घाटका जल पीवे सो, होवे हेरोना ॥ जल खारा अति रोग वढावे, राय कूप माना ॥ च० ॥ ३ ॥ कुधरम उजारू रस्ता है खोटा, मोहमांहे नरम ठानां ॥ काम न्नोग दोय चोर लूटारे, करत वहोत जानां ॥ च० ॥ ४ ॥ सुविधिनाथ सद्-गुरुकी वत्तीयां, एक चित्त न्याना ॥ खरची विमल न्ना-वनाकी उहां, लीजें सनमाना ॥ च० ॥ ५ ॥ कुविध पवन नावरूगुजु लै, इलाज करवानां ॥ देवचंद कहे शिवपुर चालो, सावधान श्याना ॥ च० ॥ ६ ॥ ११५ ॥

॥ उपदेशनी लावणी एकसो शोलमी दक्षणी चालमां॥

॥ सुगुण नर श्रीजिन गुण गानां, विकट कोट सं-कट नव अटवी, ताकू लंघ जानां ॥ प्रज्जुजीसें कर इक तानां, मोहजाला विच हे अति दूर्गम, तनही उ-लजानां ॥ सु० ॥ १ ॥ गुण अंनत पारस प्रज्जुजीके, तामें चित्त देनां ॥ करमकीच कलुपित आतम गुण, निर्मल कर लेनां ॥ सु० ॥ २ ॥ निर्विकार प्रज्जु विविध , निहारित, निज अन्नय वरनां ॥ ...

ति परमगें, शुद्ध परिणति धरनां ॥ सु० ॥ ३ ॥ निरुपाधिक चार्वे चेतनतें, निज घरमें रमनां ॥ परम प्रमोद आनद मोजसें, इंद्रियकों दमनां ॥ सु० ॥ ४ ॥ ऐसें आतम सगति उल्लासें, आतमगुण सजनां ॥ शुद्ध क्षमा कल्याण परमपद, संपदकुं जजनां ॥ सु० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथनी लावणी एकसो सत्तरमी ॥

॥ पीया चला गिरिवरकुं, मेरा दुःख मत कर जननी ॥ परी मेरा दुःख मत कर जननी, में जाऊंगी गिरनार, लेऊंगी दीक्षा जवतरणी ॥ प० ॥ १ ॥ खूब वरात करीके व्याहन आये नेम जिनहरिणी ॥ तोर पासें रथ फेर दीयो जिन, पशुपोकार सुनी ॥ प० ॥ २ ॥ करत करमको नास नेम जिम, कामिनी शिव वरनी ॥ इमकुं छोरु चले जग जीसर, अब केसें करनी ॥ प० ॥ ३ ॥ मात तात सुत बेन जानजी, करो क्षमा सगरी सजनी ॥ अब स्नेहकी नाहीं माइ हम, करु नेम मिलनी ॥ प० ॥ ४ ॥ दुर्धर दुःख निवार विदारक, दयाभरम करनी ॥ पूरवजवके पाप उदयसें, यह अचरिज वरनी ॥ प० ॥ ५ ॥ देव मनुष्य तिर्यंच् नरक गति, दुःख पावे करणी ॥ मिथ्यामति

मत पीया हाञाहल, वैर वैर मरनी ॥ ए० ॥ ६ ॥ सं-
यम दरसन ग्यान रमण सुख, वखत चली बरनी ॥
पाये ऐसा कोउ न देखा, एहि काल करनी ॥ ए०॥७॥

॥ आदिनाथ स्तवन एकसो अढारमुं ॥

॥ विहाग तथा कालिंगडा रागमां ॥

॥ पोढो पोढोजी रुषज विहारे, निद्रावश नयन तिहारे
॥ पो० ॥ प्रनु आलस अंग हुलसाइ, पूछे मरुदेवा
माइ ॥ पो० ॥ १ ॥ प्रनु नारि सुनंदा राणी उन रुच
रुच सहेज समारी ॥ पो० ॥ २ ॥ प्रनु नवलसुं नेह
सनेहा, मनवंछित फल देहा ॥ पो० ॥ ३ ॥ प्यारे
सेवक हितकर गावे, मनवंछित फल पावे ॥ पो०
॥ ४ ॥ अजर अमर पद पावे, कर जोमी शीश न-
मावे ॥ पो० ॥ ५ ॥ इति ॥ ११८ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर जिन स्तवन एकसो उंगणीशमुं ॥

॥ साहिबा श्रीसीमंधर साहिबा, साहिवा तुमे
प्रनु देवाधिदेव ॥ सनमुख जुवोने माहारा साहिबा,
मनशुद्धें करुं तुऊ सेव ॥ एकवार मलोने मोरा सा-
हिबा ॥ ए० ॥ १ ॥ साहिबा सुख छुःख वातो मारे अति
घणी, साहिब कुण आगल कहुं नाथ ॥ साहिब केवल-

ति परसंगें, शुद्ध परिणति भरनां ॥ सु० ॥ ३ ॥ निरुपाधिक प्तारें चेतनतें, निज घरमें रमनां ॥ परम प्रमोद आनंद मोजसें, इंद्रियकों दमनां ॥ सु० ॥ ४ ॥ ऐसें आतम संगति उल्लासें, आतमगुण सजनां ॥ शुद्ध क्षमा कल्याण परमपद, संपदकुं जजनां ॥ सु० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथनी सावणी एकसो सत्तरमी ॥

॥ पीया चला गिरिवरकुं, मेरा दुःख मत कर जननी ॥ एरी मेरा दुःख मत कर जननी, में जाउंगी गिरनार, लेउंगी दीक्षा जवतरणी ॥ प० ॥ १ ॥ खूब बरात करीके व्याहन आये नेम जिनहरिणी ॥ तोर णसें रथ फेर दीयो जिन, पशुपोकार सुनी ॥ प० ॥ २ ॥ करत करमको नास नेम जिम, कामिनी शिव वरनी ॥ हमकुं ठांरु चले जग जीतर, अब केसें करनी ॥ प० ॥ ३ ॥ मात तात सुत बेन प्रानजी, करो क्षमा सगरी सजनी ॥ अब स्नेहकी नाहीं माह हम, करु नेम मिलनी ॥ प० ॥ ४ ॥ दुर्द्धर दुःख निवार विदारक, दयाधरम करनी ॥ पुरवजवके पाप उदयसें, यह अघरिज घरनी ॥ प० ॥ ५ ॥ देव मनुष्य तिर्यंच् नरक गति, दुःख्य पामे करणी ॥ मिथ्यामति

मत पीया हाज़ाहज़, वैर वैर मरनी ॥ ए० ॥ ६ ॥ संयम दरसन ग्यान रमण सुख, बखत जली बरनी ॥ पाये ऐसा कोउ न देखा, एहि काल करनी ॥ ए०॥७॥

॥ आदिनाथ स्तवन एकसो अढारमुं ॥

॥ विहाग तथा कालिंगडा रागमां ॥

॥पोढो पोढोजी रुषज विहारे, निज्ञावश नयन तिहारे ॥ पो० ॥ प्रजु आलस अंग हुलसाइ, पूछे मरुदेवा माइ ॥ पो० ॥ १ ॥ प्रजु नारि सुनंदा राणी उन रुच रुच सहेज समारी ॥ पो० ॥ २ ॥ प्रजु नवलसुं नेह सनेहा, मनवंछित फल देहा ॥ पो० ॥ ३ ॥ प्यारे सेवक हितकर गावे, मनवंछित फल पावे ॥ पो० ॥ ४ ॥ अजर अमर पद पावे, कर जोमी शीश नमावे ॥ पो० ॥ ५ ॥ इति ॥ ११० ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर जिन स्तवन एकसो उंगणीशमुं ॥

॥ साहिबा श्रीसीमंधर साहिबा, साहिबा तुमें प्रजु देवाधिदेव ॥ सनमुख जुवोने माहारा साहिबा, मनशुद्धें करुं तुऊ सेव ॥ एकवार मलोने मोरा साहिबा ॥ ए० ॥ १ ॥ साहिबा सुख छुःख वातो मारे अति घणी, साहिब कुण आगल कहुं नाथ ॥ साहिब केवल-

ज्ञानी प्रभु जो मळे, साहिब तो थाउं हुं रे सनाथ ॥ ए० ॥ २ ॥ साहिब भरतक्षेत्रमां हुं अवतरयो, साहिब ओछुं जे पटरुं पुण्य ॥ साहिब ज्ञानीनो विरह प न्यो आकरो, साहिबा ज्ञानी रह्यो अति दूर ॥ ए० ॥ ३ ॥ साहिब दश दृष्टांते दोहिलो, साहिब उत्तम कुल अवतार ॥ साहिब पाम्यो पण हारी गयो, जिम रत्ने उडाड्यो काग ॥ ए० ॥ ४ ॥ साहिब खटरस जो जन बहु करयां, साहिब तृप्ति न पाम्यो लगार ॥ साहिब हुं रे अनादि भूलमां, तेणें रझल्यो घणो ससार ॥ ए० ॥ ५ ॥ साहिब सजन कुटुंब मेळो घणा, साहिब तेने दुःखे दुःखी थाय ॥ साहिब जीव एक ने कर्म जू जवां, ते कर्मथी दुर्गति जाय ॥ ए० ॥ ६ ॥ साहिब धन मेळववा हुं धसमस्यो, साहिब तृष्णानो नाव्यो पार ॥ साहिब ठोजें खटपट बहु करी, तेणें न जोयुं पुण्य ने पाप ॥ ए० ॥ ७ ॥ साहिब जमी उपर शुद्ध अशुद्ध छे, जेम रवि करे तेज प्रकाश ॥ साहिब तेम रे ज्ञानी मळे थके, ते तो आपे समकित वास ॥ ए० ॥ ८ ॥ साहिब मेघ वरस छे थानमां, साहिब वरसें छे गामोगाम ॥ साहिब गाम कुगाम जुवे नहि, साहिब एवु महोटानु काम ॥ ए० ॥ ९ ॥ साहिब हुं घस्यो

जरतने ठेरूले, तमें वस्या महाविदेह मऊार ॥ साहिब दूर रहि करुं वंदना, साहिब जवसमुद्र ऊतारो पार ॥ ए० ॥ १० ॥ साहिब तुम पासे देव घणा वसे, एक सोकलजो महाराज ॥ साहिब सुखनो संदेशो सांजलुं, तो सहेजे सरे मुऊ काज ॥ ए० ॥ ११ ॥ साहिब हुं तमारा पगनी मोजमी, साहिब हुं तमारा दासनो दास ॥ साहिब ज्ञानविमलसूरि एम जणे, साहिब मने राखो तमारी पास ॥ ए० ॥ १२ ॥ ॥ ११ए ॥ इति ॥

॥ दोलत विषे दोहा ॥

॥ दोलत तुऊेजि रंग है, सकल जगत् वश कीन ॥ आण फिराइ दश दिशी, नर पशु सब आधीन ॥ १ ॥ जाके घर दोलत हुवे, सोइ सबतें श्रेष्ट ॥ ताकूं सब चाहत अरु, सो न चहै मद पुष्ट ॥ २ ॥ धन चाहत है सरब जन, जूलि जात किरतार ॥ जिन धन अरु जनकू किए, तांही दीन विसार ॥ ३ ॥ लक्ष्मी दोलत द्रव्य धन, मायाहू पुनि नाम ॥ अनेकविध और हु कहत, जग जन सकल सकाम ॥ ४ ॥ धन है असत् पदार्थ जग, सो जन जानत नांहि ॥ लालचमें लपटायके, जूलि फिरै जवमांहि ॥ ५ ॥ संग लाय नहि कोइ धन, संग न को ले जात ॥ ता

कारण झगडे करत, बांधव हू विस्रवास ॥ ६ ॥ साधु संत योगी यती, संन्यासी अरु शेख ॥ सबही धन कारन लिये, त्रिविध प्रकार जु भेख ॥ ७ ॥ धनमें है बसी मोहिनी, सबकू बश करि लेत ॥ याकू किसने बश कियो, कोइ बनाइ देत ॥ ८ ॥

॥ दैव विषे सोरठा ॥

॥ जाता तणो जुहार, बखता तणों बभामणों ॥ दैव तणो व्यवहार, मिलिए के मिलियें नहीं ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सरवर केहें दीहडे, कठोकडे नीर ॥ दैव सयोगे बिहि वर्से, वन्हा मांहि करीर ॥ १ ॥ दैवहु रूठो सु करे, नाहु उथले कूष्ठ ॥ के वेस्या घर पावते, के रमझावे जुझ्ध ॥ २ ॥ दैव न काहू तें टरत, लिख्यो करे सो सत्य ॥ विधिने दैव कियो प्रगट, ताहिन त्यागत नित्य ॥ ३ ॥ दैव कर्म वश हे जगत्, दोमें आदि कोन ॥ याको करो विचार जन, सुख पाव हूगे जोन ॥ ४ ॥ दैव नांहि इतसी अधिक, दैव दे भर्म भ्रष्ट ॥ दैव दैव वश पुनि गिरत, जोगत पुनी-अनिष्ट ॥ ५ ॥ दैव न होवे अन्यथा, कथा सुनो जग मांहि ॥ राम दैव वश वन फिरे, रावण नाश करांहि ॥ ६ ॥

वाक्यामृत.

१. स्त्री ऋतु षोडश (१६) दिवस प्रमाण, तेमां प्रथमना ३-४ दिवस पछी समरात्री (४–६–८ विगेरे)मां गर्भ रहे तो पुत्र अने विषम रात्री (५–७–९) मां गर्भ रहे तो पुत्री जाणवी. १६ मी रात्रीए गर्भ रहे तो सुलक्षण पुत्र जाणवो.

२. दिवा निषेधः (दिवसे मैथुन कीडानो निषेध) त्रीजे मासे माताने दोहलो (गर्भ ने लइ मनोरथ) थाय; जे जातिनो दोहलो थाय ते रीते पुत्रादिक संभवे.

३. पुरुषने ७०० नाडी अने ९ धमनी होय छे त्यारे स्त्रीने ६८० अने नपुंसकने ६७० नाडी होय छे.

४. कोइ भाग्यशाळी पुरुषनेज (पूरा) ३२ दांत होय छे अने गर्भमां स्थिति प्रायः २७७॥ दिवसनी होय छे.

५. जो दांत सहित बाळक जन्मे अथवा सात मासनी अंदर दांत आवे तो कुळक्षय थाय माटे शान्तिकर्म करवुं जोइए.

६. ज्यां गुणीजनोनो निवास होय, सत्य–सरल व्यवहार होय, पवित्रता चोख्खाइ सचवाती होय,

प्रतिष्टा, गुण गौरव अने अपूर्व गुणनो लाज थतो होय, त्यांज (तेवा स्थळ (घणोपभाग) बुद्धिशाळी जाइ व्हे नोय, वसवु उचित हे

७ दरेक अष्टमी, चतुदर्शी, पूर्णिमा, अमावास्या, मरण सूतक अने चन्द्र–सूर्य ग्रहण समये तेमज बीजा अनेक अस्वाध्यायवाळा स्थळे अने समये जणवु घटे नहि

८ शास्त्र अनुराग (प्रेम प्रीति) आरोग्य, विनय, उद्यम अने बुद्धि ए अच्यासना अतरग कारण जाणवां अने सहाध्यायी, जोजन, वस्त्र, गुरु तथा पुस्तक ए घधा बाह्य कारण जाणवां

९ व्यापार या व्यवसाय करतां जे द्रव्य (पैसा) नो लाज थाय तेना चार जाग करवा १ जन्डार निमित्ते, २ धर्म निमि त्ते, ३ जोग निमित्ते, अने ४ कुटुंब पोषण निमित्ते

१० नानी हरडे (हिमज) जीणी बारीक वाटेली अने साकर जीणी बारीक वाटेली ते बंनेने सरखा जागे बे वखत सवार सांजे लेवाथी प्रमेहनो व्याधि मटी शके हे

॥ समाप्त ॥